BUNYADI AQAID AUR

MAM00LATE AHLE SUNNAT (HINDI)

DAWAT-E-ISLAMI

बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अह्ले सुन्नत



پیشکش:

مجلسِ افتاء (دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ़** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : *ऐ* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह किताब **"बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अह्ले सुन्नत"** उर्दू ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस किताब में अगर किसी जगह **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ॽ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अहले सुन्नत

पेशकश : मजलिसे इफ़्ता

मक्तबतुल मदीना, देहली-6

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصۡحٰبِكَ یَا حَبِیۡبَ اللّٰہ

नाम किताब : **बुन्यादी अक़ाइद और मा'मूलाते अह्ले सुन्नत**

मुअल्लिफ़ : **मुफ़्ती फुज़ैल रज़ा क़ादिरी अ़त्तारी**

सिने तृबाअ़त : ज़िल क़ा'दतिल ह़राम, सिने 1438 हिजरी (पहली बार)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

- ❀..... **अजमेर** : **मक्तबतुल मदीना,** 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385
- ❀..... **बरेली** : **मक्तबतुल मदीना,** दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994
- ❀..... **गुलबर्गा** : **मक्तबतुल मदीना,** फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503
- ❀..... **बनारस** : **मक्तबतुल मदीना,** अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101
- ❀..... **कानपुर** : **मक्तबतुल मदीना,** मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045
- ❀..... **कलकत्ता** : **मक्तबतुल मदीना,** 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212
- ❀..... **नागपुर** : **मक्तबतुल मदीना,** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099
- ❀..... **अनंतनाग** : **मक्तबतुल मदीना,** मदनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438
- ❀..... **सुरत** : **मक्तबतुल मदीना,** वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861
- ❀..... **इन्दोर** : **मक्तबतुल मदीना,** शॉप नम्बर 13, बोम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692
- ❀..... **बेंग्लोर** : **मक्तबतुल मदीना,** शॉप नं. 13, जामिआ़ ह़ज़रत बिलाल, 9th मेन पिल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, बेंग्लोर 45, कर्नाटक : 08088264783
- ❀..... **हुबली** : **मक्तबतुल मदीना,** ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر، یحیٰی بن قیس، ج۶، ص۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

❁ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

❁ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े के ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर (6) ह़त्तल वस्अ़ बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (8) क़ुरआनी आयात और (9) अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा (10) जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (12) नीज़ सह़ाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन के नाम के साथ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पढ़ूंगा। (13) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

❁❁❁❁

पेशे लफ़्ज़

अज़ : मुफ़्ती फ़ुज़ैल रज़ा क़ादिरी अ़त्तारी مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی

इल्मे अ़क़ाइद एक अहम इल्म है इस में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़ज़ाइल व अह़वाल, क़ियामत और इस के मुतअ़ल्लिक़ात को बयान किया जाता है। जिस में येह बयान होता है कि ज़ात व सिफ़ाते बारी तआ़ला के बारे में मुसलमानों को क्या अ़क़ीदा रखना चाहिये, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, ह़ज़राते सह़ाबा और औलिया رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के मुतअ़ल्लिक़ क्या अ़क़ीदा होना चाहिये, क़ियामत और अह़वाले क़ियामत क्या हैं, जन्नत व दोज़ख़ किसे कहते हैं और इन के मुतअ़ल्लिक़ क्या अ़क़ीदा रखना चाहिये, किन किन चीज़ों पर ईमान लाना ज़रूरी है और किन चीज़ों का इन्कार आदमी को कुफ़्र व गुमराही के अ़मीक़ घड़े में फैंक देता है और कौन से ऐसे अफ़्आ़ल हैं जिन के करने से आदमी दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है।

"**बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अहले सुन्नत**" में इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ीदों और मा'मूलाते अहले सुन्नत के मुतअ़ल्लिक़ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْہَادِی की अ़क़ाइद पर मुश्तमिल मुख़्तसर तस्नीफ़ "**किताबुल अ़क़ाइद**" और मुफ़्ती ख़लील ख़ान बरकाती عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की तस्नीफ़ "**हमारा इस्लाम**" और सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की शोहरए आफ़ाक़ तस्नीफ़ "**बहारे शरीअ़त हिस्सए अव्वल व नहुम**" से इस्तिफ़ादा किया गया है इलावा अज़ीं जाअल ह़क़ और दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से जारी होने वाले फ़तावा से भी मदद ली गई है ख़ास बात येह कि इस में अ़वामुन्नास की ज़ेह्नी सत़्ह़ का ख़याल रखते हुवे सुवालो जवाब के अन्दाज़ में काफ़ी तस्हील से काम लिया गया है

ताकि अक़ाइद का बयान पढ़ते हुवे अ़वाम को मुश्किलात का सामना न करना पड़े। इसी त़रह़ आसान व सहल उर्दू में "**मा'मूलाते अहले सुन्नत**" को जो कि बिलाशुबा मुस्तह़सन व बाइ़से ख़ैरो बरकत आ'माल हैं इन के मुतअ़ल्लिक़ पुर मग़्ज़ मा'लूमात को दलाइल व ह़वाला जात की रौशनी में तरतीब दिया गया है ताकि लोग मा'मूलाते अहले सुन्नत को वाज़ेह़ दलाइल की रौशनी में ब ख़ूबी जान सकें और जाइज़ व मुस्तह़सन बात को ग़लत़ फ़ेह्मी व कम इ़ल्मी की बिना पर नाजाइज़ व ह़राम न कहें। और इस त़रह़ के बेजा ए'तिराज़ात करने वाले, बहक जाने वाले अफ़राद के दामे फ़रैब में न आएं। स्कूलों और कॉलेजों के त़ालिबे इ़ल्मों के लिये भी येह किताब काफ़ी मुफ़ीद साबित होगी बशर्त़ येह कि इन बुन्यादी बातों को तवज्जोह से पढ़ें और इन ज़रूरी अक़ाइद को समझ कर ज़ेह्न नशीन करें बल्कि मैं तो कहूंगा कि अगर इसे स्कूलों और कॉलेजों के निसाब में शामिल कर लिया जाए तो इस सिम्त से भी मुसलमानों की बड़े पैमाने पर ख़ैर ख़्वाही होगी अल्लाह तआ़ला इसे क़बूले आ़म नसीब करे और मुझे इख़्लास की दौलत के साथ बाक़ियात सालिह़ात की ख़ूब कसरत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

अबुल ह़सन फ़ुज़ैल रज़ा अल क़ादिरी अल अ़त्तारी عَفَاعَنْهُ الْبَارِی

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है :

اَلسِّوَاکُ مَطْھَرَۃٌ لِلْفَمِ مَرْضَاۃٌ لِلرَّبِّ या'नी "मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी का सबब है।"

(سنن ابنِ ماجہ، ص٢٤٩٥، حدیث٢٨٩)

फ़ेहरिस्त (हिस्सए अव्वल)

बुन्यादी अक़ाइद

फ़ेहरिस्त (हिस्सए दुवुम)

मा'मूलाते अहले सुन्नत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(हिस्सए अव्वल) बुन्यादी अक़ाइद

ज़ात व सिफ़ाते बारी तआला

सुवाल क्या दुन्या हमेशा से है ?

जवाब जी नहीं।

सुवाल क्या दुन्या हमेशा रहेगी ?

जवाब नहीं, क्यूंकि यहां की हर चीज़ के लिये एक उम्र है। पहले वोह पैदा होती है और जब तक उस की उम्र है बाक़ी रहती है, फिर फ़ना हो जाती है।

सुवाल दुन्या की चीज़ें पैदा और फ़ना करने वाला कौन है ?

जवाब **अल्लाह** तआला।

सुवाल वोह कब पैदा हुवा और कब तक रहेगा ?

जवाब वोह पैदा नहीं हुवा और न ही फ़ना होगा। पैदा वोह चीज़ होती है जो पहले न हो ख़ुद से हमेशा से न हो जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमेशा से है और हमेशा रहेगा, सब को वोही पैदा करता है उसे किसी ने पैदा नहीं किया, वोही सब को फ़ना करता है और उसे कोई फ़ना नहीं कर सकता उस का होना ज़रूरी है और अ़दम या'नी न होना मुहाल (ना मुमकिन) है।

सुवाल क्या अकेले उसी ने सारी दुन्या बना डाली या कोई और भी उस के साथ शरीक है ?

जवाब कोई उस का शरीक नहीं, सब उस के बन्दे और उस के पैदा किये हुवे हैं, वोह अकेला तमाम जहान का पैदा करने वाला है, वोह बड़ी क़ुदरत वाला है, कोई ज़र्रा उस के हुक्म के बिग़ैर हिल नहीं सकता।

सुवाल क्या मां बाप से बढ़ कर भी कोई मेहरबान है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मां बाप से बढ़ कर बल्कि सब से ज़ियादा मेहरबान और रह़्म फ़रमाने वाला है।

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में यहूदी, ईसाई और मुशरिकीन क्या कहते हैं ?

जवाब यहूदी ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को और ईसाई ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेटा कहते हैं, इसी त़रह़ मुशरिकीन फ़िरिश्तों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बेटियां कहते हैं और उस के साथ मख़्लूक़ में से किसी न किसी को शरीक ठहराते हैं। येह सब कुफ़्र है और मुसलमानों के अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ है कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन जैसा उसे मानने का ह़क़ है सच्चे दिल से इस त़रह़ नहीं मानते कुफ़्रिय्या व शिर्किय्या अक़्वाल व अफ़्आ़ल में मुब्तला रहते हैं बुरे अ़क़ीदे रखते हैं और हां नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत का भी इन्कार करते हैं उन पर ईमान ला कर और उन की लाई हुई शरीअ़त की हर हर बात को सच्चे दिल से क़त़ई तस्दीक़ करना इस्लाम में दाख़िल होने और नजात के लिये ज़रूरी है इस से इन्कार करते हैं।

सुवाल मुसलमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में क्या कहते हैं ?

जवाब मुसलमानों का अ़क़ीदा है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यक्ता है, वोह न किसी का बाप, न बेटा, न उस की कोई बीवी, न रिश्तेदार, वोह सब से बे नियाज़ है और सारी मख़्लूक़ उस की पैदाकर्दा और उसी की मोह़ताज है वोह सारे आ़लम का पाक परवरदगार है उस का कोई शरीक नहीं।

सुवाल हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत क्यूं करते हैं ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ ही नहीं। उस की ने'मतें और उस के एह़सान बे इन्तिहा हैं, वोही इस का मुस्तह़िक़ या'नी ह़क़दार है कि उस की इ़बादत की जाए वोह आ़लमीन का रब है सारे आ़लम

का ख़ालिक़ो मालिक है वोही इ़बादत के लाइक़ है उस के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं है।

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बारे में कुछ और अ़क़ाइद भी बताएं जिन का जानना ज़रूरी है ?

जवाब वोह हर कमाल व ख़ूबी का जामेअ़ और हर ऐ़ब व नुक़्सान और बुराई से पाक है। वोह ज़ाहिर और छुपी हर चीज़ को जानता है कोई चीज़ उस के इ़ल्म से बाहर नहीं। जैसे उस की ज़ात या'नी वोह ख़ुद हमेशा से है उस की तमाम सिफ़ात (ख़ूबियां) भी हमेशा से हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमेशा से ज़िन्दा, क़ुदरत वाला, सुनने वाला, देखने वाला, कलाम करने वाला, इरादा फ़रमाने वाला है, वोही तमाम जहान का बनाने वाला है। आस्मान, ज़मीन, चांद, तारे, आदमी, जानवर और जितनी चीज़ें हैं सब को उसी ने पैदा किया। वोही पालता है सब उसी के मोह़ताज हैं।

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुदरत वाला है इस बारे में कुछ बताएं ?

जवाब सारे इख़्तियारात का मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है। रोज़ी देना, ज़िन्दगी देना, मौत देना उस के इख़्तियार में है। वोह सब का मालिक है, जो चाहे करे उस के हुक्म में कोई ख़लल नहीं डाल सकता, गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला, तौबा क़बूल फ़रमाने वाला है। उस की पकड़ निहायत सख़्त है जिस से बिग़ैर उस के छोड़े कोई छूट नहीं सकता। इ़ज़्ज़त, ज़िल्लत उस के इख़्तियार में है, जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे, जिसे चाहे ज़लील करे, जिसे चाहे अमीर करे, जिसे चाहे फ़क़ीर करे। जो कुछ करता है ह़िक्मत है, इन्साफ़ है, उस का हर काम ह़िक्मत है, बन्दों की समझ में आए या न आए। मुसलमानों को जन्नत अ़ता फ़रमाएगा, काफ़िरों पर दोज़ख़ में अ़ज़ाब करेगा। अल ग़रज़ वोह जो चाहता है करता है, उसे कोई रोकने वाला नहीं बल्कि मख़्लूक़ में से किसी को भी जो इख़्तियार ह़ासिल है अल्लाह तआ़ला की अ़ता से है,

बिग़ैर उस के दिये कोई कुछ नहीं कर सकता। मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा करेगा और क़ियामत क़ाइम फ़रमाएगा। मुसलमानों को जन्नत में भेजेगा और कुफ़्फ़ार को दोज़ख़ की भड़कती आग में दाख़िल करेगा बा'ज़ गुनहगार मुसलमानों को भी जब तक चाहेगा गुनाहों की सज़ा के त़ौर पर दोज़ख़ की आग में दाख़िल करेगा और आख़िरे कार उन्हें मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से और अपने ह़बीब की शफ़ाअ़त से जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा।

नुबुव्वत का बयान

सुवाल नबी किसे कहते हैं ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला ने मख़्लूक़ की हिदायत और रहनुमाई के लिये जिन पाक बन्दों को अपने अह़काम पहुंचाने के लिये भेजा उन को "नबी" कहते हैं और अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही वोह बशर (इन्सान) हैं जिन के पास **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से वह़्य आती है।

सुवाल वह़्य क्या होती है ?

जवाब वह़्य का लुग़वी मा'ना पैग़ाम भेजना, दिल में बात डालना, ख़ुफ़्या बात करना। शरीअ़त की इस्त़िलाह़ में वह़्य उस कलाम को कहते हैं जो किसी नबी पर **अल्लाह** की त़रफ़ से नाज़िल हुवा हो।

सुवाल पैग़म्बरों और दूसरे इन्सानों में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब ज़मीनो आस्मान का फ़र्क़ होता है। नबी व रसूल ख़ुदा के ख़ास़ और मा'सूम बन्दे होते हैं, इन की निगरानी और तरबिय्यत ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है। सग़ीरा कबीरा गुनाहों से बिल्कुल पाक होते हैं। आ़ली नसब, आ़ली ह़सब (या'नी बुलन्द सिलसिलए ख़ानदान) इन्सानियत के आ'ला मर्तबे पर पहुंचे हुवे, ख़ूब सूरत, नेक सीरत, इ़बादत गुज़ार, परहेज़गार, तमाम अख़्लाक़े ह़सना से आरास्ता और हर क़िस्म की बुराई से दूर रहने वाले होते

हैं, इन्हें अ़क़्ले कामिल अ़ता की जाती है जो औरों की अ़क़्ल से दरजों बुलन्दो बाला होती है। किसी ह़कीम और किसी फ़ल्सफ़ी की अ़क़्ल किसी साइन्सदान की फ़ेहमो फ़िरासत उस के लाखवें हि़स्से तक भी नहीं पहुंच सकती और अ़क़्ल की ऐसी बुलन्दी क्यूं न हो कि येह **अल्लाह** के लाडले बन्दे और उस के मह़बूब होते हैं। **अल्लाह** तआ़ला उन्हें हर ऐसी बात से दूर रखता है जो बाइसे नफ़रत हो, इसी लिये अम्बियाए किराम के जिस्मों का बरस (सफ़ेद दाग़) जुज़ाम (कोढ़) वग़ैरा ऐसी बीमारियों से पाक होना ज़रूरी है जिस से लोग नफ़रत करते हैं। फिर तमाम मख़्लूक़ में सारे नबियों में सब से बढ़ कर अ़क़्ले कामिल व अक्मल हमारे नबिय्ये मुकर्रम ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़ता फ़रमाई गई है चुनान्चे, ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं मैं ने इकहत्तर (71) आस्मानी किताबों में लिखा देखा है कि रोज़े अव्वल से क़ियामत क़ाइम होने तक तमाम जहान के लोगों को जितनी अ़क़्ल अ़ता की गई है वोह सब मिल कर ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़क़्ल के आगे ऐसी है जैसे दुन्या के तमाम रेगिस्तान के सामने रेत का एक दाना (ज़र्रा)।[1]

सुवाल जो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने जैसा बशर या भाई बराबर कहे वोह कौन है ?

जवाब हु़ज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने जैसा बशर या भाई बराबर कहने वाले या किसी और त़रह़ हु़ज़ूर का मर्तबा घटाने वाले मुसलमान नहीं, गुमराह, बद दीन हैं। क़ुरआने करीम में जगह जगह काफ़िरों का येह त़रीक़ा बयान किया गया है कि वोह नबियों को अपने जैसा बशर कहते थे इसी लिये गुमराही और कुफ़्र में पड़े।[2]

1.....फ़तावा रज़विय्या, 30 / 149 मुलख़्ख़सन।
2.....हमारा इस्लाम, हि़स्सए अव्वल, स. 20।

सुवाल नबियों को ग़ैब का इ़ल्म होता है या नहीं ?

जवाब अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ग़ैब की ख़बर देने के लिये ही आते हैं। हि़साब किताब, जन्नत व दोज़ख़, सवाब अ़ज़ाब, ह़श्र नश्र, फ़िरिश्ते वग़ैरा ग़ैब नहीं तो और क्या हैं ? येह वोही बताते हैं जिन तक अ़क़्ल नहीं पहुंचती मगर येह इ़ल्मे ग़ैब कि उन को है **अल्लाह** तआ़ला के दिये से है लिहाज़ा उन का इ़ल्म अ़ताई (**अल्लाह** तआ़ला का दिया हुवा) है और **अल्लाह** तआ़ला का इ़ल्म ज़ाती है जिस की कोई ह़द नहीं और उस की सिफ़त है हमेशा से है। इस त़रह़ इ़ल्मे ग़ैब नबियों और रसूलों के लिये मानने वाले को शिर्क का इल्ज़ाम देना भी ह़माक़त और ख़ुद कुफ़्रो शिर्क के मा'ना से ही जहालत है और सख़्त गुमराही की बात है बल्कि मुत़लक़न अम्बियाए किराम के लिये इ़ल्मे ग़ैब का इन्कार करना तो कु़रआने करीम की नस्से क़त़ई के इन्कार की वज्ह से कुफ़्र है।

सुवाल क्या कोई इ़बादत व रियाज़त से नुबुव्वत ह़ासिल कर सकता है ?

जवाब हरगिज़ नहीं, नुबुव्वत बहुत बुलन्द और बड़ा मर्तबा है। कोई शख़्स इ़बादत वग़ैरा से ह़ासिल नहीं कर सकता, चाहे उ़म्र भर रोज़ादार रहे, रात भर सजदों में रोया करे, तमाम मालो दौलत ख़ुदा की राह में सदक़ा कर दे, अपने आप भी उस के दीन पर फ़िदा हो जाए या'नी जान कु़रबान कर दे मगर इस से नुबुव्वत नहीं पा सकता। नुबुव्वत **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्ल है जिसे चाहे अ़त़ा फ़रमाए हमारे प्यारे आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला के आख़िरी नबी हैं। अब कोई नबी हरगिज़ न आएगा जो हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी न माने मुसलमान नहीं काफ़िर व मुर्तद है बल्कि आख़िरी नबी होने में शक ही करे या किसी नए नबी के आने को मुमकिन ही कहे खुला काफ़िर है कि उस का हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आख़िरी नबी होने पर ईमान ही नहीं और मुसलमान होने के लिये आप को **अल्लाह** का आख़िरी नबी सिद्क़े दिल से क़त़इय्यत के साथ तस्लीम करना ज़रूरी है।

सुवाल किसी नबी की ता'ज़ीम व तौक़ीर न करना कैसा ?

जवाब अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल हैं, उन की ता'ज़ीम व तौक़ीर या'नी इ़ज़्ज़तो एह़तिराम फ़र्ज़ और उन की अदना तौहीन या'नी गुस्ताख़ी या तक्ज़ीब या'नी झुटलाना कुफ़्र है । आदमी जब तक उन सब अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को न माने मोमिन नहीं हो सकता । शैत़ान **अल्लाह** तआ़ला के प्यारे नबी आदम عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बे अदबी और गुस्ताख़ी करने ही की वज्ह से मलऊ़न क़रार दिया गया । पता चला कि अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बे अदबी शैत़ानी काम है अब आख़िरी नबी हमारे नबिय्ये मुकर्रम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लाई हुई शरीअ़त को मानना मुसलमान होने के लिये ज़रूरी है अब कोई नया नबी और नई शरीअ़त नहीं आएगी ।

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का क्या मक़ाम है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला के दरबार में अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बहुत इ़ज़्ज़त और बड़ा मक़ाम है । वोह **अल्लाह** तआ़ला के प्यारे उस के मह़बूब होते हैं उन पर वह़्य नाज़िल होती है उन्हें त़रह़ त़रह़ के कमालात व मो'जिज़ात अ़त़ा किये जाते हैं सारी मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल रुत्बा अम्बियाए किराम ही का होता है ह़त्ता कि फ़िरिश्तों से भी अफ़्ज़ल होते हैं ।

सुवाल रसूल किसे कहते हैं ?

जवाब अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से जो नई शरीअ़त लाए उन को रसूल कहते हैं ।

सुवाल जो नबी वफ़ात पा चुके उन्हें मुर्दा कह सकते हैं या नहीं ?

जवाब तमाम अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी क़ब्रों में ऐसे ज़िन्दा हैं जैसे दुन्या में थे, एक आन (घड़ी भर) के लिये उन पर मौत आई फिर ज़िन्दा हो गए । जो उन्हें मुर्दा कहे गुमराह बद दीन, शैत़ान के रास्ते पर चलने वाला है उस के तो साए से भी दूर रहना चाहिये ।

सुवाल क्या सारे अम्बियाए किराम बराबर हैं ?

जवाब अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नबी होने में बराबर हैं अलबत्ता उन के मरातिब में फ़र्क़ है। बा'ज़ का मर्तबा बा'ज़ से आ'ला है। सब से बड़ा रुत्बा हमारे आक़ा व मौला सय्यिदुल अम्बिया मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का है।

सुवाल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मक़ाम सब से बुलन्द और आ'ला क्यूं है ?

जवाब तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जो कमालात जुदा जुदा इनायत हुवे वोह सब **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते आ़ली में जम्अ़ फ़रमा दिये और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ास कमालात जो दूसरे अम्बिया में नहीं थे वोह भी बहुत ज़ाइद हैं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम अम्बियाए किराम के भी सरदार हैं, फ़िरिश्तों के भी सरदार हैं और सारी मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल हैं।

सुवाल सब से आख़िरी नबी कौन हैं ?

जवाब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने नुबुव्वत का सिलसिला हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ख़त्म फ़रमा दिया।

सुवाल जो कहे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द भी कोई नबी आ सकता है, उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किसी को नुबुव्वत नहीं मिल सकती। जो शख़्स हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किसी को नुबुव्वत मिलना जाइज़ समझे या आप के आख़िरी नबी होने में शक ही करे वोह काफ़िर हो जाता है। सच्चे दिल से क़त़इय्यत के साथ ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आख़िरी नबी होने का अ़क़ीदा रखना भी मुसलमान होने के लिये ज़रूरी है।

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने का क्या रास्ता है ?

जवाब : ख़ुदा की राह अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही के ज़रीए़ मिलती है और इन्सान की नजात का दारो मदार (इन्ह़िसार) उन्हीं की फ़रमां बरदारी पर है।

सुवाल : क्या जिन्न और फ़िरिश्ते भी नबी होते हैं ?

जवाब : नहीं, नबी सिर्फ़ इन्सानों में से होते हैं और उन में से भी फ़क़त़ मर्द, कोई औ़रत नबी नहीं हो सकती अलबत्ता रसूल इन्सानों के साथ ही ख़ास नहीं बल्कि फ़िरिश्तों में भी रसूल हैं।

सुवाल : कुरआने मजीद में किन अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र है ?

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से हमारे आक़ा हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक बहुत नबी भेजे, कुरआने पाक में जिन का ज़िक्र है, उन के अस्माए मुबारका येह हैं : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते अल यसअ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, हु़ज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم।

सुवाल क्या ग़ैरे नबी (जो नबी नहीं) के पास भी वह्य आती है ?

जवाब वह्ये नुबुव्वत ग़ैरे नबी के पास नहीं आती, जो इस का क़ाइल या'नी मानने वाला हो वोह काफ़िर है ।

सुवाल क्या अम्बिया के सिवा और कोई भी मा'सूम होता है ?

जवाब हां, फ़िरिश्ते भी मा'सूम होते हैं ।

सुवाल मा'सूम किस को कहते हैं ?

जवाब जो **अल्लाह** तआ़ला की हि़फ़ाज़त में हो और इस वज्ह से उस का गुनाह करना ना मुमकिन हो ।

सुवाल क्या इमाम और वली भी मा'सूम होते हैं ?

जवाब अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और फ़िरिश्तों के सिवा मा'सूम कोई भी नहीं होता, औलिया को **अल्लाह** तआ़ला अपने करम से गुनाहों से बचाता है मगर मा'सूम सिर्फ़ अम्बिया और फ़िरिश्ते ही हैं ।

सुवाल दुन्या में सब से पहले आने वाले नबी कौन हैं ?

जवाब दुन्या में सब से पहले आने वाले नबी आदम عَلَيۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं इन से पहले आदमियों का सिलसिला न था । सब से पहले **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें अपनी क़ुदरते कामिला से बिग़ैर मां बाप के पैदा किया और अपना ख़लीफ़ा या'नी नाइब बनाया और इ़ल्मे अस्मा इनायत किया । फ़िरिश्तों को इन के सजदे का हुक्म किया, इन्हीं से इन्सानी नस्ल चली, तमाम आदमी इन्हीं की औलाद हैं ।

सुवाल इ़ल्मे अस्मा किस को कहते हैं ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला ने जो ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हर चीज़ और उस के नामों का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया था उस को इ़ल्मे अस्मा कहते हैं ।

सुवाल फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को कैसा सजदा किया था ?

जवाब येह सजदए ता'ज़ीमी था जो ख़ुदा के हुक्म से मलाइका ने किया

और सजदए ता'ज़ीमी पहली शरीअ़तों में जाइज़ था हमारी शरीअ़त में जाइज़ नहीं और सजदए इबादत पहली शरीअ़तों में भी ख़ुदा के सिवा किसी और के लिये जाइज़ नहीं हुवा। जो मख़्लूक़ में से किसी को सजदए इबादत करेगा काफ़िर हो जाएगा और ता'ज़ीमन सजदा करेगा तो सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार होगा कि हमारी शरीअ़त में सजदए ता'ज़ीमी भी ह़राम है।

मो'जिज़ात का बयान

सुवाल मो'जिज़ा किसे कहते हैं ?

जवाब वोह अ़जीबो ग़रीब काम जो आ़म तौ़र पर या'नी आ़दतन ना मुमकिन हों और ऐसी बातें अगर नुबुव्वत का दा'वा करने वाले से उस की ताईद में ज़ाहिर हों तो इन को "मो'जिज़ा" कहते हैं[1] जैसे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अ़सा का अज़्दहा बन जाना, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मीलों दूर से च्यूंटी की आवाज़ सुन लेना, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हाथ में लोहे का मोम की त़रह़ नर्म हो जाना, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुर्दों को ज़िन्दा करना, हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का डूबे हुवे सूरज को वापस लौटाना, चांद के दो टुकड़े करना वग़ैरा।

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मो'जिज़ात क्यूं अ़त़ा किये जाते हैं ?

जवाब मो'जिज़ात अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत की दलील हैं। मो'जिज़ात देख कर आदमी का दिल नबी की सच्चाई का यक़ीन कर लेता है

1 .....किताबुल अ़क़ाइद, स. 19

जिस के हाथ से क़ुदरत की ऐसी निशानियां ज़ाहिर होती हैं जिन के आगे सब लोग आ़जिज़ व हैरान हैं ज़रूर वोह ख़ुदा का भेजा हुवा है चाहे ज़िद्दी दुश्मन न माने मगर दिल यक़ीन कर ही लेता है और अ़क़्ल वाले ईमान ले आते हैं।

सुवाल क्या कोई नुबुव्वत का झूटा दा'वा कर के मो'जिज़ा नहीं दिखा सकता ?

जवाब नुबुव्वत का झूटा दा'वा करने वाला मो'जिज़ा हरगिज़ नहीं दिखा सकता और क़ुदरत उस की ताईद नहीं फ़रमाती।

सुवाल हमारे हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कितने मो'जिज़ात हैं ?

जवाब हमारे हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात बहुत ज़ियादा हैं इन में से मे'राज शरीफ़ बहुत मश्हूर मो'जिज़ा है।

सुवाल मे'राज के मो'जिज़े के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात के थोड़े से हिस्से में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले गए, वहां अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इमामत फ़रमाई। बैतुल मुक़द्दस से आस्मानों पर तशरीफ़ ले गए। **अल्लाह** तआ़ला के क़ुर्ब का वोह मर्तबा पाया कि कभी किसी इन्सान या फ़िरिश्ते, नबी या रसूल ने न पाया था। ख़ुदावन्दे आ़लम का जमाले पाक अपनी मुबारक आंखों से देखा, कलामे इलाही सुना, आस्मानो ज़मीन के तमाम मुल्क मुलाहज़ा फ़रमाए या'नी देखे, जन्नतों की सैर की, दोज़ख़ का मुआ़इना फ़रमाया या'नी अपनी आंखों से देखा, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से बैतुल मुक़द्दस तक रास्ते में जो क़ाफ़िले मिले थे सुब्ह़ को उन के ह़ालात बयान फ़रमाए।(1)

1.....सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत और मो'जिज़ात के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये किताब "सीरते मुस्त़फ़ा" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

सुवाल क्या मे'राज का सफ़र नींद की ह़ालत में हुवा था ?

जवाब जी नहीं, बल्कि ऐ़न बेदारी की ह़ालत में हुवा था।

सुवाल येह मे'राज जिस्मे अत़्हर के साथ थी या फ़क़त़ रूह़ की थी ?

जवाब येह मे'राज जिस्मे अत़्हर और रूह़ दोनों के साथ हुई थी।

सुवाल क्या नबी के इ़लावा भी किसी से मो'जिज़ा ज़ाहिर हो सकता है ?

जवाब जी नहीं, मो'जिज़ा सिर्फ़ नबी के साथ ख़ास है।

सुवाल मो'जिज़ा और करामत में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब वोह अ़जीबो ग़रीब काम जो आ़दतन ना मुमकिन हो जिसे नबी अपनी नुबुव्वत के सुबूत में पेश करे और उस से मुन्किरीन आ़जिज़ हो जाएं वोह मो'जिज़ा है और वली से ज़ाहिर हो तो करामत है।[1]

क़ुरआन शरीफ़ का बयान

सुवाल दुन्या में कोई आस्मानी किताब भी है ?

जवाब जी हां।

सुवाल आस्मानी किताब से क्या मत़लब है ?

जवाब ख़ुदा की किताब।

सुवाल कौन सी ?

जवाब क़ुरआन शरीफ़।

1....क़ानूने शरीअ़त, स. 25।

सुवाल इस में क्या बयान है ?

जवाब इस में सारे इल्म हैं।

सुवाल वोह किताब किस लिये आई है ?

जवाब बन्दों की रहनुमाई के लिये ताकि बन्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जानें और उन की मर्ज़ी के काम करें।

सुवाल क़ुरआन शरीफ़ किस पर उतरा ?

जवाब ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर।

सुवाल कब उतरा ?

जवाब आप की ज़ाहिरी ह़याते त़य्यिबा के ज़माने में अब से तक़रीबन चौदह सौ बरस पहले।

सुवाल क्या क़ुरआन शरीफ़ के सिवा **अल्लाह** तआ़ला ने कोई और किताब भी उतारी थी ?

जवाब जी हां।

सुवाल कौन कौन सी ?

जवाब सब किताबों के नाम तो मा'लूम नहीं, अलबत्ता मश्हूर किताबें येह हैं। तौरैत शरीफ़, इन्जील शरीफ़, ज़बूर शरीफ़।

सुवाल येह किताबें किन किन अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुईं ?

जवाब तौरैत ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर, ज़बूर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर, इन्जील ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुईं।

सुवाल क्या सह़ीह़ तौरैत, सह़ीह़ इन्जील और सह़ीह़ ज़बूर आज कल कहीं मिलती है ?

जवाब जी नहीं।

सुवाल क्यूं ?

जवाब ईसाइयों और यहूदियों ने इन किताबों में अपनी मर्ज़ी से घटा बढ़ा कर कुछ का कुछ कर दिया, बहुत सा मज़्मून बदल दिया है येह अपनी अस्ल शक्ल में बाक़ी नहीं हैं।

सुवाल क्या सहीह़ क़ुरआन शरीफ़ मिलता है ?

जवाब जी हां क़ुरआन शरीफ़ हर जगह सहीह़ मिलता है।

सुवाल क्या वोह नहीं बदला ?

जवाब वोह नहीं बदल सकता। उस में एक ह़र्फ़ का भी फ़र्क़ नहीं हो सकता।

सुवाल क्यूं ?

जवाब इस लिये कि उस का निगहबान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है और क़ुरआने पाक में उस की ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मा **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ुद अपने ज़िम्मए करम पर लिया है।

सुवाल क़ुरआन शरीफ़ कहां मिलता है ?

जवाब हर शहर और हर गाऊं में, हर मुसलमान के घर में होता है और मुसलमानों के बच्चों को भी याद होता है।

सुवाल तुम ने कैसे जाना कि वोह ख़ुदा की किताब है ?

जवाब जैसे ख़ुदा की बनाई हुई चीज़ों की त़रह़ कोई चीज़ किसी से नहीं बन सकती ऐसे ही क़ुरआन शरीफ़ की त़रह़ कोई किताब किसी से नहीं बन सकी इस से हम ने जाना कि वोह ख़ुदा की किताब है। आदमी की होती तो कोई और भी वैसी ही बना सकता।

सुवाल क्या हिन्दुओं के पास कोई ख़ुदा की किताब है ?

जवाब नहीं।

सुवाल वैद क्या है ?

जवाब पुराने ज़माने के शाइ़रों की नज़्में

❁❁❁❁

मलाइका का बयान

सुवाल फ़िरिश्ते किसे कहते हैं ?

जवाब फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ईमानदार और इ़ज़्ज़त वाले बन्दे हैं जो उस की ना फ़रमानी कभी नहीं करते हैं, हर क़िस्म के गुनाह से मा'सूम हैं। उन के जिस्म नूरानी हैं, वोह न कुछ खाते हैं, न पीते हैं, हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मसरूफ़ हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें येह क़ुदरत या'नी त़ाक़त दी है कि वोह जो शक्ल चाहें इख़्तियार करें।

सुवाल फ़िरिश्तों के ज़िम्मे क्या क्या काम हैं ?

जवाब वोह जुदागाना कामों पर मुक़र्रर हैं। बा'ज़ जन्नत पर, बा'ज़ दोज़ख़ पर, बा'ज़ आदमियों के अ़मल लिखने पर, बा'ज़ रोज़ी पहुंचाने पर, बा'ज़ पानी बरसाने पर, बा'ज़ मां के पेट में बच्चे की सूरत बनाने पर, बा'ज़ आदमियों की ह़िफ़ाज़त पर, बा'ज़ रूह़ क़ब्ज़ करने पर, बा'ज़ क़ब्र में सुवाल करने पर, बा'ज़ अ़ज़ाब पर, बा'ज़ रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरबार में मुसलमानों के दुरूदो सलाम पहुंचाने पर, बा'ज़ अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास वह़्य लाने पर।

सुवाल मलाइका के पास किस क़दर त़ाक़त होती है ?

जवाब मलाइका को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बड़ी क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाई है, वोह ऐसे काम कर सकते हैं जिसे लाखों आदमी मिल कर भी नहीं कर सकते।

सुवाल मश्हूर फ़िरिश्ते कौन कौन से हैं ?

जवाब तमाम फ़िरिश्तों में से येह चार फ़िरिश्ते बहुत मश्हूर और बड़ी अ़ज़मत रखते हैं : ह़ज़रते जिब्राईल, ह़ज़रते मीकाईल, ह़ज़रते इसराफ़ील, ह़ज़रते इ़ज़राईल (عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام)

सुवाल क्या फ़िरिश्ते देखने में आते हैं ?

जवाब हमें तो नज़र नहीं आते मगर जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता है वोह फ़िरिश्तों को देखते हैं। अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उन्हें मुलाह़ज़ा फ़रमाते हैं, उन से कलाम होता है। क़ब्रों में मुर्दे भी फ़िरिश्तों को देखते हैं और भी जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे, देख सकता है।

सुवाल हर आदमी के साथ एक ही फ़िरिश्ता उ़म्र भर उस के अ़मल लिखा करता है या कई फ़िरिश्ते लिखते हैं ?

जवाब नेकी और बदी के लिखने वाले अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा हैं और रात के अ़लाह़िदा और दिन के अ़लाह़िदा हैं।

सुवाल नामए आ'माल लिखने वाले इन फ़िरिश्तों को क्या कहते हैं ?

जवाब किरामन कातिबीन।

सुवाल कुल कितने फ़िरिश्ते हैं ?

जवाब बहुत हैं हमें इन की ता'दाद मा'लूम नहीं।

तक़्दीर का बयान

सुवाल तक़्दीर किसे कहते हैं ?

जवाब दुन्या में जो कुछ होता है और बन्दे जो कुछ करते हैं नेकी, बदी वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़ल्मे अज़ली के मुत़ाबिक़ होता है। जो कुछ होने

वाला है वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़ल्म में है और उस के पास लिखा हुवा है, इसी को तक़्दीर कहते हैं।

हर भलाई बुराई उस ने अपने इ़ल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर फ़रमा दी है जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था अपने इ़ल्म से जाना और वोही लिख लिया तो येह नहीं कि जैसा उस ने लिख दिया वैसा हम को करना पड़ता है बल्कि जैसा हम करने वाले थे वैसा उस ने लिख दिया ज़ैद के ज़िम्मे बुराई लिखी इस लिये कि ज़ैद बुराई करने वाला था अगर ज़ैद भलाई करने वाला होता वोह उस के लिये भलाई लिखता तो उस के इ़ल्म या उस के लिख देने ने किसी को मजबूर नहीं कर दिया। तक़्दीर के इन्कार करने वालों को नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस उम्मत का मजूस बताया है।[1]

सुवाल तक़्दीर की कितनी क़िस्में हैं क्या तक़्दीर बदल भी जाती है?

जवाब तीन क़िस्में हैं : (1) मुब्रमे ह़क़ीक़ी (2) मुअ़ल्लक़े मह़्ज़ (3) मुअ़ल्लक़े शबीह बिह मुब्रम पहली क़िस्म या'नी मुब्रमे ह़क़ीक़ी वोह होती है जो इ़ल्मे इलाही में किसी शै पर मुअ़ल्लक़ नहीं।

दूसरी क़िस्म या'नी मुअ़ल्लक़े मह़्ज़ वोह होती है जिस का मलाइका के सह़ीफ़ों में किसी शै पर मुअ़ल्लक़ होना ज़ाहिर फ़रमा दिया गया हो।

तीसरी क़िस्म या'नी मुअ़ल्लक़े शबीह बिह मुब्रम वोह होती है जिस का मलाइका के सह़ीफ़ों में मुअ़ल्लक़ होना ज़ाहिर न फ़रमाया गया हो मगर इ़ल्मे इलाही में किसी शै पर मुअ़ल्लक़ हो।

इन में से पहली क़िस्म मुब्रमे ह़क़ीक़ी का बदलना ना मुमकिन है **अल्लाह** तआ़ला के मह़बूब बन्दे अकाबिरीन भी इत्तिफ़ाक़न इस में कुछ अ़र्ज़ करते हैं तो उन्हें इस ख़याल से रोक दिया जाता है जब क़ौमे लूत़ पर

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 1,1 / 11

फ़िरिश्ते अ़ज़ाब ले कर आए थे तो सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन काफ़िरों के बारे में इतनी कोशिश की, कि अपने रब से झगड़ने लगे। अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में येह बात इरशाद फ़रमाई कि ﴿يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ﴾[1] "हम से झगड़ने लगा क़ौमे लूत़ के बारे में।"

येह कुरआने अ़ज़ीम ने उन बे दीनों का रद फ़रमाया जो मह़बूबाने खुदा की बारगाहे इ़ज़्ज़त में कोई इ़ज़्ज़तो वजाहत नहीं मानते और कहते हैं कि उस के हुज़ूर कोई दम नहीं मार सकता, ह़ालांकि उन का रब عَزَّوَجَلَّ उन की वजाहत अपनी बारगाह में ज़ाहिर फ़रमाने को खुद इन लफ़्ज़ों से ज़िक्र फ़रमाता है कि : "हम से झगड़ने लगा क़ौमे लूत़ के बारे में", ह़दीस में है : शबे मे'राज हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक आवाज़ सुनी कि कोई शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ बहुत तेज़ी और बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तगू कर रहा है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह कौन हैं ? अ़र्ज़ की : मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام। फ़रमाया : क्या अपने रब पर तेज़ हो कर गुफ़्तगू करते हैं ? अ़र्ज़ की : उन का रब जानता है कि उन के मिज़ाज में तेज़ी है। जब आयए करीमा ﴿وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى﴾[2] नाज़िल हुई कि "बेशक अ़न क़रीब तुम्हें तुम्हारा रब इतना अ़त़ा फ़रमाएगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।" तो हुज़ूर सय्यिदुल मह़बूबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"اِذاً لَّا اَرْضٰى وَوَاحِدٌ مِّنْ اُمَّتِىْ فِى النَّارِ"[3]

ऐसा है तो मैं राज़ी न होऊंगा, अगर मेरा एक उम्मती भी आग में हो।

---

1 ....پ۱۲،ھود:۷٤

2 ....پ۳۰،الضحٰى:٥

3 ....تفسیر کبیر،پ۳۰،الضحیٰ:تحت الآیۃ:۵،۱۱/۱۹۴

येह तो शानें बहुत रफ़ीअ़ (बुलन्द) हैं, जिन पर रिफ़्अ़त, इ़ज़्ज़त वजाहत ख़त्म है। صَلَوَاتُ اللهِ تَعَالٰى وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِم मुसलमान मां बाप का कच्चा बच्चा जो ह़म्ल से गिर जाता है उस के लिये ह़दीस में फ़रमाया कि : "रोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने मां बाप की बख़्शिश के लिये ऐसा झगड़ेगा जैसा क़र्ज़ ख़्वाह किसी क़र्ज़दार से, यहां तक कि फ़रमाया जाएगा :

"اَيُّهَا السِّقْطُ الْمُرَاغِمُ رَبَّهٗ"(1)

ऐ कच्चे बच्चे ! अपने रब से झगड़ने वाले ! अपने मां बाप का हाथ पकड़ ले और जन्नत में चला जा।"

ख़ैर येह तो जुम्लए मो'तरिज़ा था। मगर ईमान वालों के लिये बहुत नाफ़ेअ़ और शयात़ीनुल इन्स की ख़बासत का दाफ़ेअ़ था, कहना येह है कि क़ौमे लूत़ पर अ़ज़ाब क़ज़ाए मुब्रमे ह़क़ीक़ी था, ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस में झगड़े तो उन्हें इरशाद हुवा : "ऐ इब्राहीम ! इस ख़याल में न पड़ो...बेशक उन पर वोह अ़ज़ाब आने वाला है जो फिरने का नहीं।"

और वोह जो (दूसरी क़िस्म या'नी) ज़ाहिर क़ज़ाए मुअ़ल्लक़ है, इस तक अक्सर औलिया की रसाई होती है, उन की दुआ़ से, उन की हिम्मत से टल जाती है और वोह जो (तीसरी क़िस्म या'नी मुअ़ल्लक़ शबीह बिह मुब्रम) मुतवस्सित़ ह़ालत में है, जिसे सुहु़फ़े मलाइका के ए'तिबार से मुब्रम भी कह सकते हैं, उस तक ख़वास अकाबिर की रसाई होती है। हु़ज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इसी को फ़रमाते हैं : "मैं क़ज़ाए मुब्रम

1 ....ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ما جاء فيمن أصيب بسقط، ۲/۲۷۳، حدیث: ۱۶۰۸

को रद कर देता हूं''[1] और इसी की निस्बत ह़दीस में इरशाद हुवा : ''اِنَّ الدُّعَاءَ يَرُدُّ الْقَضَاءَ بَعْدَ مَا اُبْرِمَ''[2] ''बेशक दुआ़ क़ज़ाए मुब्रम को टाल देती है।''[3]

सुवाल क्या तक़्दीर के मुवाफ़िक़ काम करने पर आदमी मजबूर होता है ? इस बारे में अ़क़ीदा क्या रखना चाहिये ?

जवाब नहीं। बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नेकी, बदी के करने पर इख़्तियार दिया है। वोह अपने इख़्तियार से जो कुछ करता है वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां लिखा हुवा है जैसा कि पहले बयान किया गया है। याद रहे कि क़ज़ा व क़द्र के मसाइल आ़म अ़क़्लों में नहीं आ सकते, इन में ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करना सबबे हलाकत है, सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को इस मस्अले में बह़स करने से मन्अ़ फ़रमाया गया था तो हम और आप किस गिनती में हैं....! इतना समझ लिया जाए कि **अल्लाह** तआ़ला ने आदमी को पथ्थर और दीगर जमादात की त़रह़ बे ह़िस्सो ह़रकत नहीं पैदा किया, बल्कि इस को एक नौअ़ इख़्तियार (या'नी एक त़रह़ का मह़दूद इख़्तियार) दिया है कि एक काम चाहे करे, चाहे न करे और इस के साथ ही अ़क़्ल भी दी है कि भले, बुरे, नफ़्अ़, नुक़्सान को पहचान सके और हर क़िस्म के सामान और अस्बाब मुहय्या कर दिये हैं, कि जब कोई काम करना चाहता है उसी क़िस्म के सामान मुहय्या हो जाते हैं और इसी बिना पर उस पर मुवाख़ज़ा होता है। इस सच्चे अ़क़ीदे को याद रखा जाए और दिल में बसा लिया जाए इसी पर क़ाइम रहा जाए, ग़ैर ज़रूरी ग़ौरो ख़ौज़ से बाज़ रहा जाए

1.....مکتوبات امام ربانی، مکتوب نمبر ۲۱۷، ۱/ ۱۲۳۔۱۲۴

2.....الفردوس بمأثور الخطاب، ۵/۳۶۴، حدیث: ۸۴۴۸، بتغیر

3.....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 12-16 बित्तग़य्युरिन

तो वस्वसों से छुटकारा मिल जाता है, येह अ़क़ीदा भी याद रहे कि अपने आप को बिल्कुल मजबूर समझना या बिल्कुल मुख़्तार समझना दोनों गुमराही की बात हैं।[1]

सुवाल बा'ज़ लोग बुरा काम कर के कहते हैं कि तक़्दीर में ऐसा ही लिखा था उन के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब बुरा काम कर के तक़्दीर की त़रफ़ निस्बत करना और मशिय्यते इलाही के ह़वाले करना बहुत बुरी बात है बल्कि हुक्म येह है कि जो अच्छा काम करे उसे मिन जानिबिल्लाह (**अल्लाह** की त़रफ़ से) कहे और जो बुराई सरज़द हो उसे शामते नफ़्स (अपना क़ुसूर) तसव्वुर करे।[2]

❁❁❁❁

मौत और क़ब्र का बयान

सुवाल क्या किसी शख़्स की उ़म्र बढ़ या कम हो सकती है ?

जवाब हर शख़्स की जो उ़म्र मुक़र्रर है न उस से कम हो सकती है और न बढ़ सकती है।

सुवाल जब वोह उ़म्र पूरी हो जाती है फिर क्या मुआ़मला होता है ?

जवाब मलकुल मौत या'नी ह़ज़रते इ़ज़्राईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उस की जान निकाल लेते हैं, मौत के वक़्त मरने वाले के दाहने, बाएं जहां तक नज़र जाती है फ़िरिश्ते ही फ़िरिश्ते दिखाई देते हैं। मुसलमान के पास रह़मत के फ़िरिश्ते, काफ़िर के पास अ़ज़ाब के। मुसलमानों की रूह़ को फ़िरिश्ते इ़ज़्ज़त के साथ ले जाते हैं और काफ़िरों की रूह़ को फ़िरिश्ते ह़क़ारत के साथ ले कर जाते हैं।

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 18 बितग़य्युरिन।
2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 19।

सुवाल क्या मरने के बा'द रूह़ फ़ना हो जाती है ?

जवाब रूह़ के जिस्म से जुदा होने का नाम मौत है, रूह़ जिस्म से जुदा हो कर फ़ना नहीं हो जाती बल्कि रूहों के रहने के लिये मक़ामात मुक़र्रर हैं, नेकों के लिये अ़लाह़िदा और बुरों के लिये अ़लाह़िदा जहां वोह अपने मर्तबे के मुत़ाबिक़ चली जाती हैं मगर वोह कहीं हों, जिस्म से उन का तअ़ल्लुक़ बाक़ी रहता है। जिस्म की ईज़ा से रूह़ को तक्लीफ़ होती है। क़ब्र पर आने वाले को देखते हैं, उस की आवाज़ सुनते हैं।

सुवाल आवागोन किसे कहते हैं ?

जवाब येह ख़याल कि मौत के बा'द रूह़ किसी दूसरे बदन में चली जाती है ख़्वाह वोह बदन आदमी का हो या किसी जानवर का, उसे तनासुख़ या आवागोन कहते हैं, येह मह़ज़ बात़िल है और इस का मानना कुफ़्र है।

सुवाल आवागोन कौन लोग मानते हैं ?

जवाब हिन्दू।

सुवाल मुन्कर नकीर किसे कहते हैं ?

जवाब जब दफ़्न करने वाले दफ़्न कर के वापस हो जाते हैं तो दो फ़िरिश्ते ज़मीन चीरते आते हैं उन की सूरतें डरावनी, आंखें नीली काली होती हैं। एक का नाम मुन्कर, दूसरे का नाम नकीर है। वोह मुर्दे को उठा कर बिठाते हैं और उस से सुवाल करते हैं।

सुवाल क़ब्र में मुर्दे से कितने और कौन कौन से सुवालात किये जाते हैं ?

जवाब क़ब्र में मुर्दे से तीन सुवालात होते हैं :

(1).....तेरा रब कौन है ?

(2).....तेरा दीन क्या है ?

(3).....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ इशारा कर के पूछते हैं, तू इन के हक़ में क्या कहता था ?

सुवाल मुसलमान इन सुवालों के क्या जवाब देता है ?

जवाब मुसलमान जवाब देता है, मेरा रब **अल्लाह** है। मेरा दीन इस्लाम है। येह **अल्लाह** के रसूल हैं। اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ फ़िरिश्ते कहते हैं हम जानते थे कि तू येही जवाब देगा।(1)

सुवाल क़ब्र के सुवालो जवाब में कामयाब होने वाले मुसलमान के साथ क्या सुलूक किया जाता है ?

जवाब उस की क़ब्र कुशादा और रौशन कर दी जाती है। आस्मान से मुनादी पुकारता है मेरे बन्दे ने सच कहा, इस के लिये जन्नती फ़र्श बिछाओ, जन्नती लिबास पहनाओ, जन्नत की त़रफ़ दरवाज़े खोलो। चुनान्चे, दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से जन्नत की हवा और ख़ुश्बू आती रहती है और फ़िरिश्ते उस से कहते हैं कि अब तू आराम कर।

सुवाल काफ़िर से क़ब्र में क्या सुलूक किया जाएगा ?

जवाब काफ़िर इन सुवालों का जवाब नहीं दे सकता, हर सुवाल के जवाब में कहता है : मैं नहीं जानता। आस्मान से निदा करने वाला निदा करता है कि येह झूटा है, इस के लिये आग का बिछौना बिछाओ, आग का लिबास पहनाओ और दोज़ख़ की त़रफ़ का दरवाज़ा खोल दो। चुनान्चे, दरवाज़ा खोल दिया जाता है तो उस से दोज़ख़ की गर्मी और लपट आती है फिर उस पर फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो लोहे के बड़े बड़े गुर्ज़ों या'नी हथोड़ों से मारते हैं और अज़ाब करते हैं।

1.....किताबुल अक़ाइद, स. 19।

सुवाल क्या क़ब्र हर मुर्दे को दबाती है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिवा क़ब्र सब मुसलमानों को भी दबाती है और काफ़िरों को भी लेकिन मुसलमानों को दबाना शफ़्क़त के साथ होता है जैसे मां बच्चे को सीने से लगा कर चिपटाए और काफ़िर को सख़्ती से यहां तक कि पस्लियां इधर से उधर हो जाती हैं।

सुवाल क्या कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन से क़ब्र में सुवाल नहीं होता ?

जवाब हां। जिन को ह़दीस शरीफ़ में मुस्तसना किया गया है जैसे अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और जुमुअ़तुल मुबारक और रमज़ानुल मुबारक में मरने वाले मुसलमान।

सुवाल क़ब्र में अ़ज़ाब फ़क़त़ काफ़िर पर होता है या मुसलमान पर भी ?

जवाब काफ़िर तो अ़ज़ाब ही में रहेंगे और बा'ज़ गुनहगार मुसलमानों पर भी अ़ज़ाब होता है। मुसलमानों के सदक़ात, दुआ़, तिलावते क़ुरआन और दूसरे सवाब पहुंचाने के त़रीक़ों से इस में तख़्फ़ीफ़ या'नी कमी हो जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने करम से उस अ़ज़ाब को उठा देता है। बा'ज़ के नज़्दीक मुसलमान पर से क़ब्र का अ़ज़ाब जुमुआ़ की रात आते ही उठा दिया जाता है।

सुवाल जो मुर्दे दफ़्न नहीं किये जाते उन से भी सुवाल होता है ?

जवाब जी हां। ख़्वाह दफ़्न किया जाए या न किया जाए या उसे कोई जानवर खा जाए, हर ह़ाल में उस से सुवाल होता है और अगर क़ाबिले अ़ज़ाब है तो अ़ज़ाब भी होता है।

क़ियामत और उस की निशानियां

सुवाल क़ियामत किसे कहते हैं ?

जवाब जैसे हर चीज़ की एक उ़म्र मुक़र्रर है उस के पूरे होने के बा'द वोह चीज़ फ़ना हो जाती है। ऐसे ही दुन्या की भी एक उ़म्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़ल्म में मुक़र्रर है। इस के पूरा होने के बा'द दुन्या फ़ना हो जाएगी। ज़मीनो आस्मान, आदमी, जानवर कोई भी बाक़ी न रहेगा। इस को "क़ियामत" कहते हैं जैसे आदमी के मरने से पहले बीमारी की शिद्दत, जान निकलने की अ़लामात ज़ाहिर होती हैं। ऐसे ही क़ियामत से पहले उस की निशानियां हैं।

सुवाल क़ियामत आने से पहले इस की क्या क्या अ़लामात ज़ाहिर होंगी ?

जवाब क़ियामत के आने से पहले दुन्या से इ़ल्म उठ जाएगा, आ़लिम बाक़ी न रहेंगे, जहालत फैल जाएगी, बदकारी और बे ह़याई ज़ियादा होगी, औ़रतों की ता'दाद मर्दों से बढ़ जाएगी। बड़े दज्जाल के सिवा तीस दज्जाल और होंगे, हर एक इन में से नुबुव्वत का दा'वा करेगा बा वुजूद येह कि ह़ुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नुबुव्वत ख़त्म हो चुकी। इन में से बा'ज़ दज्जाल तो गुज़र चुके जैसे मुसैलमा कज़्ज़ाब, असवद अ़नसी, मिरज़ा अ़ली मुह़म्मद बाब, मिरज़ा अ़ली हुसैन बहाउल्लाह, मिरज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी, बा'ज़ और बाक़ी हैं वोह भी ज़रूर होंगे, माल की कसरत होगी, अ़रब में खेती, बाग़, नहरें हो जाएंगी, दीन पर क़ाइम रहना मुश्किल होगा। वक़्त बहुत जल्द गुज़रेगा, ज़कात देना लोगों को दुश्वार होगा, इ़ल्म को लोग दुन्या के लिये पढ़ेंगे, मर्द औ़रतों की इत़ाअ़त करेंगे। मां बाप की ना फ़रमानी ज़ियादा होगी, शराब नोशी आ़म हो जाएगी, ना अह्ल सरदार बनाए

जाएंगे, नहरे फ़ुरात से सोने का ख़ज़ाना खुलेगा। ज़मीन अपने अन्दर दफ़्नशुदा ख़ज़ाने उगल देगी, अमानत ग़नीमत या'नी मुफ़्त का माल समझी जाएगी, मस्जिदों में शोर मचेंगे, फ़ासिक़ सरदारी करेंगे, फ़ितना अंगेज़ों की इ़ज़्ज़त की जाएगी, गाने बाजे की कसरत होगी। पहले बुज़ुर्गों को लोग बुरा भला कहेंगे, कोड़े की नोक और जूते के तस्मे बातें करेंगे, दज्जाल और दाब्बतुल अर्ज़ और याजूज माजूज निकलेंगे। ह़ज़रते इमाम मेहदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ाहिर होंगे, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आस्मान से उतरेंगे, सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा और तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा।

सुवाल दज्जाल किस को कहते हैं, इस के निकलने का ह़ाल बयान फ़रमाइये?

जवाब दज्जाल मसीह़ कज़्ज़ाब का नाम है। इस की एक आंख होगी और एक से काना होगा और इस की पेशानी पर "ك ا ف ر" (या'नी काफ़िर) लिखा होगा। हर मुसलमान इस को पढ़ेगा, काफ़िर को नज़र न आएगा। वोह चालीस दिन में तमाम ज़मीन में फिरेगा मगर मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ में दाख़िल न हो सकेगा। इन चालीस दिन में पहला दिन एक साल के बराबर होगा, दूसरा एक महीने के बराबर, तीसरा एक हफ़्ते के बराबर और बाक़ी दिन आ़म दिनों के बराबर होंगे। दज्जाल ख़ुदाई का दा'वा करेगा और उस के साथ एक बाग़ और एक आग होगी, जिस का नाम वोह जन्नत व दोज़ख़ रखेगा। जो उस पर ईमान लाएगा उस को वोह अपनी जन्नत में डालेगा जो ह़क़ीक़त में आग होगी और जो उस का इन्कार करेगा उस को अपनी जहन्नम में दाख़िल करेगा जो वाक़ेअ़ में आसाइश की जगह होगी। बहुत से अ़जाइब या'नी ह़ैरत अंगेज़ चीज़ें दिखाएगा, ज़मीन से सब्ज़ा उगाएगा, आस्मान से बारिश बरसाएगा, मुर्दे ज़िन्दा करेगा, एक मोमिन सालेह़ उस त़रफ़ मुतवज्जेह होंगे और इन से दज्जाल के सिपाही कहेंगे क्या तुम हमारे रब

पर ईमान नहीं लाते ? वोह कहेंगे। मेरे रब के दलाइल छुपे हुवे नहीं हैं। फिर वोह इन को पकड़ कर दज्जाल के पास ले जाएंगे। येह दज्जाल को देख कर फ़रमाएंगे : ऐ लोगो ! येह वोही दज्जाल है जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़िक्र फ़रमाया है। दज्जाल के हुक्म से इन को ज़दो कोब किया (या'नी मारा) जाएगा। फिर दज्जाल कहेगा : क्या तुम मेरे ऊपर ईमान नहीं लाते ? वोह फ़रमाएंगे तू मसीह़ कज़्ज़ाब है, दज्जाल के हुक्म से इन का जिस्म मुबारक सर से पाउं तक चीर के दो हिस्से कर दिया जाएगा और उन दोनों हिस्सों के दरमियान दज्जाल चलेगा। फिर कहेगा उठ ! तो वोह तन्दुरुस्त हो कर उठ खड़े होंगे। तब दज्जाल उन से कहेगा तुम मुझ पर ईमान लाते हो ? वोह फ़रमाएंगे मेरी बसीरत और ज़ियादा हो गई। ऐ लोगो ! येह दज्जाल अब मेरे बा'द किसी के साथ फिर ऐसा नहीं कर सकता। फिर दज्जाल उन्हें पकड़ कर ज़ब्ह़ करना चाहेगा और इस पर क़ादिर न हो सकेगा, फिर इन के दस्तो पा से पकड़ कर अपनी जहन्नम में डालेगा, लोग गुमान करेंगे कि उन को आग में डाला। मगर दर ह़क़ीक़त वोह आसाइश की जगह होंगे।

सुवाल दाब्बतुल अर्ज़ क्या चीज़ है ?

जवाब दाब्बतुल अर्ज़ एक अ़जीब शक्ल का जानवर है जो कोहे सफ़ा से ज़ाहिर हो कर तमाम शहरों में निहायत जल्द फिरेगा, फ़साह़त के साथ कलाम करेगा। हर शख़्स पर एक निशानी लगाएगा, ईमानदारों की पेशानी पर अ़साए मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से एक नूरानी ख़त़ खींचेगा। काफ़िर की पेशानी पर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की अंगुश्तरी या'नी अंगूठी से काली मोहर करेगा।

सुवाल याजूज माजूज कौन हैं ?

जवाब येह याफ़िस बिन नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में से फ़सादी गुरौह

हैं, उन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है। वोह ज़मीन में फ़साद करते थे, अय्यामे रबीअ़ या'नी फ़स्ल पकने के ज़माने में निकलते, सब्ज़ा ज़ार न छोड़ते, आदमियों को खा लेते और जंगल के दरिन्दों, वह़शी जानवरों, सांपों, बिच्छूओं को खा जाते थे, ह़ज़रते सिकन्दर ज़ुलक़रनैन ने लोहे की दीवार खींच कर उन की आमद बन्द कर दी। ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नुज़ूल के बा'द आप दज्जाल को क़त्ल कर के ब हुक्मे इलाही मुसलमानों को कोहे तूर ले जाएंगे उस वक़्त वोह दीवार तोड़ कर निकलेंगे और ज़मीन में फ़साद करेंगे, क़त्लो ग़ारत करेंगे। **अल्लाह** तआ़ला उन्हें ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से हलाक करेगा।

सुवाल ह़ज़रते इमाम मेहदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه का कुछ ह़ाल बयान फ़रमाइये ?

जवाब ह़ज़रते इमाम मेहदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ख़लीफ़तुल्लाह हैं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल में से ह़सनी सय्यिद होंगे, जब दुन्या में कुफ़्र फैल जाएगा और इस्लाम ह़रमैने शरीफ़ैन या'नी मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ सिमट जाएगा, औलिया व अब्दाल वहां को हिजरत कर जाएंगे, माहे रमज़ान में अब्दाल का'बा शरीफ़ के त़वाफ़ में मश्ग़ूल होंगे वहां औलिया ह़ज़रते मेहदी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को पहचान कर उन से बैअ़त की दरख़्वास्त करेंगे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه इन्कार फ़रमाएंगे, ग़ैब से निदा आएगी هٰذَا خَلِيْفَةُ اللهِ الْمَهْدِیُّ فَاسْمَعُوْا لَهٗ وَاَطِيْعُوْهُ "येह **अल्लाह** तआ़ला के ख़लीफ़ा मेहदी हैं इन का हुक्म सुनो और इत़ाअ़त करो।" लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के दस्ते मुबारक पर बैअ़त करेंगे वहां से मुसलमानों को साथ ले कर शाम तशरीफ़ ले जाएंगे। आप का ज़माना बड़ी ख़ैरो बरकत का होगा, ज़मीन अ़द्लो इन्साफ़ से भर जाएगी।

सुवाल : ह़ज़रते ई़सा मसीह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नुज़ूल का मुख़्तसर ह़ाल बयान कीजिये ?

जवाब : जब दज्जाल का फ़ितना इन्तिहा को पहुंच चुकेगा और वोह मलऊ़न तमाम दुन्या में फिर कर मुल्के शाम में जाएगा उस वक़्त ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद के शर्क़ी मनारे पर नुज़ूल फ़रमाएंगे । आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नज़र जहां तक जाएगी वहां तक ख़ुश्बू पहुंचेगी और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़ुश्बू से दज्जाल पिघलने लगेगा और भागेगा । आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दज्जाल को बैतुल मुक़द्दस के क़रीब मक़ामे लुद में क़त्ल करेंगे । इन का ज़माना बड़ी ख़ैरो बरकत का होगा, माल की कसरत होगी । ज़मीन अपने ख़ज़ाने निकाल कर बाहर करेगी । लोगों को माल से रग़बत न रहेगी । यहूदिय्यत, नसरानिय्यत और तमाम बात़िल दीनों को आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मिटा डालेंगे । आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अ़ह्दे मुबारक में एक दीन होगा, इस्लाम । तमाम काफ़िर ईमान ले आएंगे और सारी दुन्या अहले सुन्नत होगी । अम्नो अमान का येह आ़लम होगा कि शेर बकरी एक साथ चरेंगे । बच्चे सांपों से खेलेंगे । बुग़्ज़ो ह़सद का नामो निशान न रहेगा । जिस वक़्त आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नुज़ूल होगा फ़ज्र की जमाअ़त खड़ी होती होगी । ह़ज़रते इमाम मेहदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को देख कर आप से इमामत की दरख़्वास्त करेंगे । आप उन्हीं को आगे बढ़ाएंगे और ह़ज़रते इमाम मेहदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे नमाज़ अदा फ़रमाएंगे । एक रिवायत में है कि ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़ुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शान व सिफ़ात और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत की इ़ज़्ज़त व करामत देख कर उम्मते मुह़म्मदी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में दाख़िल होने की दुआ़ की । अल्लाह तआ़ला ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वोह बक़ा अ़त़ा फ़रमाई कि

आख़िर ज़माने में उम्मते मुह़म्मदिया عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इमाम हो कर नुज़ूल फ़रमाएंगे आप (عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) नुज़ूल के बा'द बरसों दुन्या में रहेंगे, निकाह़ करेंगे फिर वफ़ात पा कर ह़ुज़ूर सय्यिदे अम्बिया عَلَیْهِ وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पहलू में मदफ़ून होंगे।

सुवाल आफ़्ताब के मग़रिब से तुलूअ़ करने और दरवाज़ए तौबा के बन्द होने की कैफ़िय्यत बयान फ़रमाइये ?

जवाब रोज़ाना आफ़्ताब बारगाहे इलाही में सजदा कर के इज़्न चाहता है, इज़्न होता है तब तुलूअ़ करता है। क़रीबे क़ियामत जब दाब्बतुल अर्ज़ निकलेगा, ह़स्बे मा'मूल आफ़्ताब सजदा कर के तुलूअ़ होने की इजाज़त चाहेगा। इजाज़त न मिलेगी और हुक्म होगा कि वापस जा। तब आफ़्ताब मग़रिब से तुलूअ़ होगा और निस्फ़ आस्मान तक आ कर लौट जाएगा और जानिबे मग़रिब ग़ुरूब करेगा। इस के बा'द फिर पहले की त़रह़ मशरिक़ से तुलूअ़ किया करेगा, आफ़्ताब के मग़रिब से तुलूअ़ करते ही तौबा का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा फिर किसी का ईमान लाना मक़्बूल न होगा।

सुवाल क़ियामत कब क़ाइम होगी ?

जवाब इस का इ़ल्म तो ख़ुदा को है और उस के बताने से ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को है। हमें इस क़दर मा'लूम है कि जब येह सब अ़लामतें ज़ाहिर हो चुकेंगी और रूए ज़मीन पर कोई ख़ुदा का नाम लेने वाला बाक़ी न रहेगा तब ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ब हुक्मे इलाही सूर फूंकेंगे। उस की आवाज़ शुरूअ़ शुरूअ़ में तो बहुत नर्म होगी और आहिस्ता आहिस्ता बुलन्द होती चली जाएगी। लोग उस को सुनेंगे और बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे और मर जाएंगे, ज़मीनो आस्मान और तमाम जहान फ़ना हो जाएगा। फिर जब **अल्लाह** तआ़ला चाहेगा ह़ज़रते इसराफ़ील को ज़िन्दा करेगा और दोबारा

सूर फूंकने का हुक्म देगा। सूर फूंकते ही फिर सब कुछ मौजूद हो जाएगा। मुर्दे क़ब्रों से उठेंगे। नामए आ'माल उन के हाथों में दे कर महशर में लाए जाएंगे। वहां जज़ा और हिसाब के लिये मुन्तज़िर खड़े होंगे। आफ़्ताब निहायत तेज़ी पर और सरों से बहुत क़रीब ब क़दरे एक मील होगा। शिद्दते गर्मी से दिमाग़ खोलते होंगे, इस कसरत से पसीना निकलेगा कि सत्तर गज़ ज़मीन में जज़्ब हो जाएगा फिर जो पसीना ज़मीन न पी सकेगी वोह ऊपर चढ़ेगा, किसी के टख़्नों तक होगा, किसी के घुटनों तक, किसी के कमर, किसी के सीने, किसी के गले तक और काफ़िर के तो मुंह तक चढ़ कर मिस्ले लगाम के जकड़ जाएगा। हर शख़्स ह़स्बे ह़ाल व आ'माल होगा, फिर पसीना भी निहायत बदबूदार होगा।

सुवाल इस मुसीबत से लोगों को कैसे नजात मिलेगी ?

जवाब इस ह़ालत में त़वील अ़र्सा गुज़रेगा। पचास हज़ार साल का तो वोह दिन होगा और इस ह़ालत में आधा गुज़र जाएगा। लोग सिफ़ारिशी तलाश करेंगे जो इस मुसीबत से नजात दिलाए और जल्द ह़िसाब शुरूअ़ हो। अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िरी होगी लेकिन मक़्सद पूरा न होगा। आख़िर में हुज़ूरे पुरनूर, सय्यिदे अम्बिया, रह़मते आ़लम, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर में फ़रयाद लाएंगे और शफ़ाअ़त या'नी सिफ़ारिश की दरख़्वास्त करेंगे। हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएंगे : "اَنَا لَهَا" मैं इस के लिये मौजूद हूं। येह फ़रमा कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सजदा करेंगे। **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से इरशाद होगा : يَا مُحَمَّدُ اِرْفَعْ رَأْسَكَ قُلْ تُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ "ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सजदे से सर उठाइये बात कहिये सुनी जाएगी, शफ़ाअ़त कीजिये क़बूल की जाएगी।" हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह शफ़ाअ़त तो

तमाम अह्ले मह़शर के लिये है जो शदीद डर और ख़ौफ़ की वज्ह से फ़रयाद कर रहे होंगे और येह चाहते होंगे कि ह़िसाब फ़रमा कर इन के लिये हुक्म दे दिया जाए। अब ह़िसाब शुरूअ़ होगा। मीज़ाने अ़मल में आ'माल तोले जाएंगे, आ'माल नामे हाथों में होंगे। अपने ही हाथ, पाउं, बदन के आ'ज़ा अपने ख़िलाफ़ गवाहियां देंगे। ज़मीन के जिस ह़िस्से पर कोई अ़मल किया था वोह भी गवाही देने को तय्यार होगा। अ़जीब परेशानी का वक़्त होगा कोई यार न ग़मगुसार। न बेटा बाप के काम आ सकेगा न बाप बेटे के। आ'माल की पुरसिश या'नी पूछगछ है। ज़िन्दगी भर का किया हुवा सब सामने है। न गुनाह से मुकर सकता है, न कहीं से नेकियां मिल सकती हैं।

सुवाल इस मुश्किल घड़ी में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने चाहने वालों की कैसे मदद फ़रमाएंगे ?

जवाब इस बे कसी के वक़्त में बे कसों के मददगार, हुज़ूरे पुरनूर, मह़बूबे ख़ुदा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم काम आएंगे और अपने नियाज़ मन्दों और उम्मीदवारों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़तें कई त़रह़ की होंगी बहुत लोग तो आप की शफ़ाअ़त से बे ह़िसाब दाख़िले जन्नत होंगे और बहुत लोग जो दोज़ख़ के मुस्तह़िक़ होंगे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से दुख़ूले दोज़ख़ से बचेंगे और जो गुनाहगार मोमिन दोज़ख़ में पहुंच चुके होंगे वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से दोज़ख़ से निकाले जाएंगे। अह्ले जन्नत भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से फ़ैज़ पाएंगे, इन के दरजात बुलन्द किये जाएंगे। बाक़ी और अम्बिया व मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व सह़ाबए किराम व शुहदा व उ़लमा व औलिया رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن अपने मुतवस्सिलीन या'नी वसीला ढूंडने वालों की शफ़ाअ़त करेंगे। लोग उ़लमा को अपने तअ़ल्लुक़ात याद दिलाएंगे,

अगर किसी ने आ़लिम को दुन्या में वुज़ू के लिये पानी ला कर दिया होगा तो वोह भी याद दिला कर शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त करेगा और वोह उस की शफ़ाअ़त करेंगे।

सुवाल महृशर की हौलनाकियों, आफ़्ताब की नज़्दीकी से भेजे खोलने, बदबूदार पसीनों की तकालीफ़ और इन मुसीबतों में हज़ारहा बरस की मुद्दत तक मुब्तला और परेशान रहने का जो बयान फ़रमाया येह सब के लिये है या **अल्लाह** तआ़ला के कुछ बन्दे उस से मुस्तसना भी हैं या'नी जो इस में शामिल नहीं ?

जवाब इन अहवाल में से कुछ भी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलिया व अतक़िया (परहेज़्गार) व सुलहृा (नेक) (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) को न पहुंचेगा वोह **अल्लाह** तआ़ला के करम से इन सब आफ़्तों और मुसीबतों से महृफ़ूज़ होंगे। क़ियामत का पचास हज़ार बरस का दिन जिस में न एक लुक़्मा खाने को मयस्सर होगा, न एक क़त़्रा पीने को, न एक झोंका हवा का। ऊपर से आफ़्ताब की गर्मी भून रही होगी, नीचे ज़मीन की तपिश, अन्दर से भूक की आग लगी होगी। प्यास से गर्दनें टूटी जाती होंगी, सालहा साल की मुद्दत खड़े खड़े बदन कैसा दुखा हुवा होगा, शिद्दते ख़ौफ़ से दिल फटे जाते होंगे। इन्तिज़ार में आंखें उठी होंगी, बदन का पुर्ज़ा पुर्ज़ा लरज़ता कांपता होगा, वोह त़वील दिन **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल से उस के ख़ास बन्दों के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ के वक़्त से ज़ियादा हल्का और आसान होगा। وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

हि़साब का बयान

सुवाल मीज़ान से क्या मुराद है ?

जवाब मीज़ान से मुराद वोह तराज़ू है जिस में क़ियामत के दिन बन्दों के

आ'माल तोले जाएंगे, नेक भी बद भी, क़ौल भी फ़े'ल भी, काफ़िरों के भी मोमिनों के भी।

सुवाल क्या क़ियामत के दिन सब का ह़िसाब लिया जाएगा ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बा'ज़ मुसलमान बन्दे ऐसे भी होंगे जो बिग़ैर ह़िसाब के जन्नत में जाएंगे।

सुवाल फ़िरिश्ते जो आ'माल नामे दुन्या में लिखते हैं उन का क्या बनेगा ?

जवाब क़ियामत के दिन हर शख़्स को उस का नामए आ'माल दिया जाएगा जो फ़िरिश्ते लिखते हैं, नेकों के नामए आ'माल दाह्ने हाथ में दिये जाएंगे और बदों के बाएं में।

❁❁❁❁

सिरात़

सुवाल सिरात़ किसे कहते हैं ?

जवाब जहन्नम के ऊपर एक पुल है उस को "सिरात़" कहते हैं। येह बाल से ज़ियादा बारीक तल्वार से ज़ियादा तेज़ है।

सुवाल क्या कोई पुल सिरात़ से गुज़रे बिग़ैर भी जन्नत में जा सकता है ?

जवाब नहीं, सब को इस पर से गुज़रना है, जन्नत का येही रास्ता है।

सुवाल पुल सिरात़ से गुज़रने में सब की ह़ालत एक जैसी होगी या मुख़्तलिफ़ ?

जवाब उस पुल पर गुज़रने में लोगों की ह़ालत जुदागाना होगी, जिस दरजे का शख़्स होगा उस के लिये ऐसी ही आसानी या दुश्वारी होगी बा'ज़ तो बिजली चमकने की त़रह़ गुज़र जाएंगे। अभी इधर थे, अभी उधर पहुंचे। बा'ज़े हवा की त़रह़, बा'ज़े तेज़ घोड़े की त़रह़, बा'ज़े आहिस्ता आहिस्ता, बा'ज़े गिरते पड़ते लरज़ते लंगड़ाते और बा'ज़े जहन्नम में गिर जाएंगे।

कुफ़्फ़ार के लिये बड़ी ह़सरत का वक़्त होगा जब वोह पुल से गुज़र न सकेंगे और जहन्नम में गिर पड़ेंगे और ईमानदारों को देखेंगे कि वोह उसी पुल पर बिजली की त़रह़ गुज़र गए या तेज़ हवा की त़रह़ उड़ गए या सरीउ़स्सैर या'नी तेज़ रफ़्तार घोड़े की त़रह़ दौड़ गए।

हौज़े कौसर

सुवाल हौज़े कौसर क्या चीज़ है ?

जवाब येह एक हौज़ है जिस की तेह मुश्क या'नी कस्तूरी की है, याक़ूत और मोतियों पर जारी है, दोनों किनारे सोने के हैं और इन पर मोतियों के क़ुब्बे या'नी गुम्बद नस्ब हैं इस के बरतन (कूज़े) आस्मान के सितारों से ज़ियादा हैं।

सुवाल हौज़े कौसर का पानी कैसा होगा ?

जवाब इस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद, शहद से ज़ियादा शीरीं, मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है। जो एक मरतबा पियेगा फिर कभी प्यासा न होगा।

सुवाल येह हौज़ किसे अ़त़ा किया जाएगा ?

जवाब अल्लाह तआ़ला ने येह हौज़ अपने ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमाया है। हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस से अपनी उम्मत को सैराब फ़रमाएंगे।

सुवाल ह़िसाब के बा'द आदमी कहां जाएंगे ?

जवाब मुसलमान जन्नत में और काफ़िर दोज़ख़ में।

सुवाल क्या सब मुसलमान जन्नत में जाएंगे और सब काफ़िर दोज़ख़ में ? और येह दोनों जन्नत और दोज़ख़ में कितना अ़र्सा रहेंगे ?

जवाब नेक मुसलमान और वोह गुनाहगार मुसलमान जिन के गुनाह **अल्लाह** तआ़ला अपने करम और अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की और दीगर नेक बन्दों की शफ़ाअ़त से बख़्श दे वोह सब के सब जन्नत में रहेंगे और बा'ज़ गुनहगार मुसलमान जो दोज़ख़ में जाएंगे वोह भी जितना अ़र्सा ख़ुदा तआ़ला चाहे दोज़ख़ के अ़ज़ाब में मुब्तला रह कर आख़िरे कार नजात पाएंगे और काफ़िर सब के सब जहन्नम में जाएंगे और हमेशा उसी में रहेंगे।

सुवाल क्या जन्नत और दोज़ख़ पैदा हो चुकी हैं या पैदा की जाएंगी ?

जवाब जन्नत और दोज़ख़ पैदा हो चुकी हैं और हज़ारों बरस से मौजूद हैं।

जन्नत का बयान

सुवाल इस दुन्या के बा'द भी क्या कोई दार (या'नी मकान) है ?

जवाब जी हां ! **अल्लाह** तआ़ला ने इस दुन्या के सिवा दो और अ़ज़ीमुश्शान दार पैदा किये हैं एक दारुन्नईम या'नी ने'मत की जगह है इस का नाम "जन्नत" है। एक दारुल अ़ज़ाब या'नी अ़ज़ाब की जगह है इस को "दोज़ख़" कहते हैं।

सुवाल जन्नत क्या है ?

जवाब जन्नत एक मकान है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ईमान वालों के लिये बनाया है।

सुवाल जन्नत में किस त़रह़ की ने'मतें हैं ?

जवाब जन्नत में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ईमानदार बन्दों के लिये अन्वाअ़ व अक़्साम की ऐसी ने'मतें जम्अ़ फ़रमाई हैं जिन तक आदमी का वहम व

ख़याल नहीं पहुंचता, न ऐसी ने'मतें किसी आंख ने देखीं, न किसी कान ने सुनीं, न किसी दिल में इन का ख़याल गुज़रा। इन का वस्फ़ पूरी त़रह़ बयान में नहीं आ सकता। **अल्लाह** तआ़ला अ़ता फ़रमाए तो वहीं इन की क़द्र मा'लूम होगी।

सुवाल दारोग़ए जन्नत या'नी जन्नत के निगरान का क्या नाम है ?

जवाब ह़ज़रते रिज़्वान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام है।

सुवाल जन्नत कितनी बड़ी है ?

जवाब जन्नत की वुस्अ़त या'नी कुशादगी का येह बयान है कि इस में सौ दरजे हैं हर दरजे से दूसरे दरजे तक इतना फ़ासिला है जितना आस्मानो ज़मीन के दरमियान। अगर तमाम जहां एक दरजे में जम्अ़ हो तो एक दरजा सब के लिये किफ़ायत करे। दरवाज़े इतने वसीअ़ कि एक बाज़ू से दूसरे तक तेज़ घोड़े की सत्तर बरस की राह है।(1)

सुवाल क्या जन्नत में इन्सानों के इलावा भी कोई होगा ?

जवाब जन्नत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के इलावा उन की ख़िदमत के लिये हूरो ग़िलमान होंगे।

सुवाल ग़िलमान किसे कहते हैं ?

जवाब जन्नत के वोह नौ उ़म्र, पाकीज़ा सूरत व लिबास वाले लड़के जो हर वक़्त जन्नतियों की ख़िदमत पर मामूर होंगे, जो बिहिश्ती ने'मतों के जाम व साग़िर या'नी पैमाने और प्याले लिये जन्नत की हूरों और जन्नतियों के पास गर्दिश कर रहे होंगे।

सुवाल जन्नत में और क्या चीज़ें होंगी ?

---

(1).....किताबुल अ़क़ाइद, स. 38।

जवाब इस का मुख़्तसर सा बयान येह है कि जन्नत में साफ़, शफ़्फ़ाफ़, चमकदार सफ़ेद मोती के बड़े बड़े ख़ैमे नस्ब हैं इन में रंगारंग, अ़जीबो ग़रीब, नफ़ीस फ़र्श हैं इन पर याक़ूते सुर्ख़ के मिम्बर हैं। शहद व शराब की नहरें जारी हैं इन के किनारों पर मुरस्सअ़ या'नी नगीने जड़े तख़्त बिछे हैं। जन्नत के बाग़ात के दरमियान याक़ूत के क़ुसूर व मह़ल्लात बनाए गए हैं इन में येह हूरें जल्वागर हैं। परवरदगारे करीम की त़रफ़ से हर घड़ी अन्वाओ़ अक़्साम के तोह़फ़े और हदये पहुंचते हैं। हमेशा की ज़िन्दगी अ़त़ा की गई। हर ख़्वाहिश बिला ताख़ीर पूरी होती है। दिल में जिस चीज़ का ख़याल आया वोह फ़ौरन ह़ाज़िर। किसी क़िस्म का ख़ौफ़ व ग़म नहीं। हर साअ़त हर आन ने'मतों में हैं। जन्नती नफ़ीस व लज़ीज़ ग़िज़ाएं, लत़ीफ़ मेवे खाते हैं। बिहिश्ती नह्रों से दूध शराब शहद वग़ैरा पीते हैं। इन नह्रों की ज़मीन चांदी की, संगरेज़े जवाहिरात के, मिट्टी ख़ालिस मुश्क की, सब्ज़ा ज़ा'फ़रान का है। इन नह्रों से नूरानी प्याले भर कर वोह जाम पेश करते हैं जिन से आफ़्ताब शरमाए।

सुवाल क्या जन्नती जन्नत में हमेशा रहेंगे ?

जवाब जी हां ! एक मुनादी अह्ले जन्नत को निदा करेगा : ऐ बिहिश्त वालो ! तुम्हारे लिये सिह़्ह़त है कभी बीमार न होगे। तुम्हारे लिये ह़यात है कभी न मरोगे। तुम्हारे लिये जवानी है बूढ़े न होगे। तुम्हारे लिये ने'मतें हैं कभी मोह़ताज न होगे।

सुवाल जन्नत में जन्नतियों के लिये सब से बड़ी ने'मत क्या होगी ?

जवाब तमाम ने'मतों से बढ़ कर सब से प्यारी दौलत ह़ज़रत रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ का दीदार है जिस से अह्ले जन्नत की आंखें मुस्तफ़ीद होती रहेंगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी मयस्सर फ़रमाए। آمین ثُمَّ آمین

सुवाल सब से कम दरजे के जन्नती को क्या मिलेगा ?

जवाब सब से कम दरजे वाले जन्नती को भी बाग़ात, तख़्त, हूरें और ख़ुद्दाम मिलेंगे।

❁❁❁❁

दोज़ख़ का बयान

सुवाल दोज़ख़ क्या है ?

जवाब येह एक मकान है जो ज़ालिमों, सरकशों के अ़ज़ाब के लिये बनाया गया है इस में सख़्त अंधेरा और तेज़ आग है। इस में सत्तर हज़ार वादियां हैं, हर वादी में सत्तर हज़ार घाटियां, हर घाटी में सत्तर हज़ार अज़्दहे बहुत बड़े सांप और सत्तर हज़ार बिच्छू हैं। हर काफ़िर व मुनाफ़िक़ को इन घाटियों में ज़रूर पहुंचना है।

सुवाल हिसाबो किताब के बा'द लोगों पर क्या मुसीबत त़ारी होगी ?

जवाब क़ियामत की मुसीबतें झेल कर अभी लोग इस की तक्लीफ़ और ख़ौफ़ में मुब्तला होंगे कि अचानक उन को अंधेरियां घेर लेंगी और लपट मारने वाली आग उन पर छा जाएगी और उस के ग़ैज़ो ग़ज़ब की आवाज़ सुनने में आएगी। उस वक़्त बदकारों को अ़ज़ाब का यक़ीन होगा और लोग घुटनों के बल गिर पड़ेंगे और फ़िरिश्ते निदा करेंगे : कहां है फ़ुलां फ़ुलां का बेटा ! जिस ने दुन्या में लम्बी उम्मीदें बांध कर अपनी ज़िन्दगी को बदकारी में ज़ाएअ़ किया। अब येह मलाइका उन लोगों को आहिनी गुर्ज़ों या'नी लोहे के हथोड़ों से हंकाते दोज़ख़ में ले जाएंगे।

सुवाल जहन्नम में काफ़िरों की क्या हालत होगी ?

जवाब काफ़िर उस में हमेशा क़ैद रखे जाएंगे और आग की तेज़ी उन पर दम ब दम ज़ियादती करेगी, पीने को उन्हें गर्म पानी मिलेगा और इस क़दर गर्म

कि जिस से मुंह फट जाए और ऊपर का होंट सुकड़ कर आधे सर तक पहुंचे और नीचे का फट कर लटक आए, इन का ठिकाना जह़ीम (दोज़ख़ का एक त़बक़ा) है, मलाइका उन को मारेंगे। वोह ख़्वाहिश करेंगे कि किसी त़रह़ वोह हलाक हो जाएं और उन की रिहाई की कोई सूरत न होगी, क़दम पेशानियों से मिला कर बांध दिये जाएंगे, गुनाहों की सियाही से मुंह काले होंगे, जहन्नम के अत़राफ़ व जवानिब शोर मचाते और फ़रयाद करते होंगे कि ऐ मालिक عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! अ़ज़ाब का वा'दा हम पर पूरा हो चुका है। ऐ मालिक عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! लोहे के बोझ ने हमें चकना चूर कर दिया। ऐ मालिक عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! हमारे बदनों की खालें जल गईं। ऐ मालिक عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ! हम को इस दोज़ख़ से निकाल। हम फिर ऐसी ना फ़रमानी न करेंगे। फ़िरिश्ते कहेंगे : दूर हो ! अब अम्न नहीं और इस ज़िल्लत के घर से रिहाई न मिलेगी इसी में ज़लील पड़े रहो और हम से बात न करो। उस वक़्त उन की उम्मीदें टूट जाएंगी और दुन्या में जो कुछ सरकशी वोह कर चुके हैं इस पर अफ़्सोस करेंगे लेकिन उस वक़्त उ़ज़्र व नदामत कुछ काम न आएगा, अफ़्सोस कुछ फ़ाएदा न देगा बल्कि वोह हाथ पाउं बांध कर चेहरों के बल आग में धकेल दिये जाएंगे। उन के ऊपर भी आग होगी नीचे भी आग। दाह्ने भी आग बाएं भी आग। आग के समन्दर में डूबे होंगे। खाना आग और पीना आग, पहनावा आग और बिछौना आग, हर त़रह़ आग ही आग, इस पर गुर्ज़ों की मार और भारी बेड़ियों का बोझ। आग उन्हें इस त़रह़ खोलाएगी जिस त़रह़ हांडियां खोलती हैं, वोह शोर मचाएंगे उन के सरों पर से खोलता पानी डाला जाएगा जिस से उन के पेट की आंतें और बदनों की खालें पिघल जाएंगी, लोहे के गुर्ज़ मारे जाएंगे जिस से पेशानियां पिचक जाएंगी, मुंहों से पीप जारी होगी,

प्यास से जिगर कट जाएंगे, आंखों के ढेले बह कर रुख़्सारों पर आ पड़ेंगे, रुख़्सारों के गोश्त गिर जाएंगे, हाथ पाउं के बाल और खाल गिर जाएंगे और न मरेंगे, चेहरे जल भुन कर सियाह कोएले हों जाएंगे, आंखें अन्धी और ज़बानें गूंगी हो जाएंगी, पीठ टेढ़ी हो जाएगी, नाकें और कान कट जाएंगे, खाल पारा पारा हो जाएगी, हाथ गर्दन से मिला कर बांध दिये जाएंगे और पाउं पेशानी से, आग पर मुंह के बल चलाए जाएंगे और लोहे के कांटों पर आंख के ढेलों से राह चलेंगे, आग की लपट बदन के अन्दर सरायत कर जाएगी और दोज़ख़ के सांप बिच्छू बदन पर लिपटे, डसते, काटते होंगे।

सुवाल जुब्बे हुज़्न क्या है ?

जवाब येह जहन्नम में एक वादी है जिस से जहन्नम भी रोज़ाना सत्तर हज़ार बार पनाह मांगता है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने "जुब्बे हुज़्न" से पनाह मांगने का हुक्म फ़रमाया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ग़ज़ब व अ़ज़ाब से पनाह दे और हमें और सब मुसलमानों को अपने अ़फ़्वो करम से बख़्शे। आमीन।[1]

सुवाल जब तमाम जन्नती जन्नत में पहुंच जाएंगे और दोज़ख़ में फ़क़त वोही लोग रह जाएंगे जिन को हमेशा वहां रहना है, फिर क्या होगा ?

जवाब उस वक़्त जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान मेंढ़े की शक्ल में मौत लाई जाएगी और तमाम जन्नतियों और दोज़ख़ियों को दिखा कर ज़ब्ह कर दी जाएगी और फ़रमा दिया जाएगा कि ऐ अहले जन्नत ! तुम्हारे लिये हमेशा हमेशा जन्नत और उस की ने'मतें हैं और ऐ अहले दोज़ख़ ! तुम्हारे लिये हमेशा अ़ज़ाब है मौत ज़ब्ह कर दी गई अब हमेशा की ज़िन्दगी है, हलाक व

1.....किताबुल अ़क़ाइद, स. 41 मुलख़्ख़सन।

फ़ना नहीं। उस वक़्त अहले जन्नत के फ़र्ह व सुरूर की इन्तिहा न होगी इसी त़रह़ दोज़ख़ियों के रन्जो ग़म की।

सुवाल ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कौन हैं ?

जवाब येह दारोग़ए जहन्नम या'नी दोज़ख़ के निगरान हैं।

सुवाल जहन्नम तो अ़ज़ाब की जगह है फिर इस में फ़िरिश्ते कैसे आ सकते हैं ?

जवाब फ़िरिश्ते इस में अ़ज़ाब सहने के लिये नहीं बल्कि अ़ज़ाब देने के लिये होंगे जैसे जेल में पोलीस के सिपाही और जेलर होते हैं।

सुवाल जहन्नम में आग की गर्मी का अ़ज़ाब सुना है तो क्या सर्दी का भी अ़ज़ाब होगा ?

जवाब जी हां, जहां आग से क़रीब होने की वज्ह से गर्मी का अ़ज़ाब होगा वहीं उस से दूरी की वज्ह से सर्दी का अ़ज़ाब होगा।

सुवाल जहन्नमी के लिये सब से हल्का अ़ज़ाब क्या होगा ?

जवाब जहन्नम में सब से हल्का अ़ज़ाब जिस को होगा उस को आग की जूतियां पहनाई जाएंगी जिस से उस का दिमाग़ खोलेगा और वोह समझेगा कि सब से ज़ियादा उसी को अ़ज़ाब हो रहा है ह़ालांकि उसे सब से कम अ़ज़ाब हो रहा होगा।

सुवाल अगर कोई ह़िसाब और जन्नत व दोज़ख़ का इन्कार करे, उस के बारे में क्या कहेंगे ?

जवाब ह़िसाब और जन्नत व दोज़ख़ ह़क़ हैं, इन का इन्कार करने वाला काफ़िर है।[1]

۞۞۞۞

1.....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 150।

ईमान का बयान

सुवाल ईमान किसे कहते हैं ?

जवाब वोह तमाम उमूर जो हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से लाए और जिन के बारे में यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम है कि येह दीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हैं उन सब की सच्चे दिल से क़त़ई तस्दीक़ करना ''ईमान'' कहलाता है जैसे **अल्लाह** तआ़ला की वह़्दानिय्यत, तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत, हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ातमुन्नबिय्यीन होना या'नी येह ए'तिक़ाद कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब में आख़िरी नबी हैं, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किसी को नुबुव्वत नहीं मिल सकती, इसी त़रह़ ह़श्र नश्र, जन्नत दोज़ख़ वग़ैरा का ए'तिक़ाद या'नी यक़ीन रखना ।

सुवाल क्या दिल से तस्दीक़ के साथ ज़बान से इक़रार करना भी ज़रूरी है ?

जवाब मुसलमान होने के लिये दिल की तस्दीक़ के साथ ज़बान से इक़रार करना भी शर्त़ है ताकि दूसरे लोग उसे मुसलमान समझें और मुसलमान उस के साथ मुसलमानों जैसा सुलूक करें । इस की तफ़्सील येह है कि अगर तस्दीक़ के बा'द इज़्हार का मौक़अ़ न मिला तो इन्दल्लाह मोमिन है और अगर मौक़अ़ मिला और उस से मुत़ालबा किया गया और इक़रार न किया तो काफ़िर है और अगर मुत़ालबा न किया गया तो अह़कामे दुन्या में काफ़िर समझा जाएगा न उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे न मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करेंगे मगर इन्दल्लाह मोमिन है अगर कोई अम्र ख़िलाफ़े इस्लाम ज़ाहिर न किया हो ।

तम्बीह : मुसलमान होने के लिये येह भी शर्त़ है कि ज़बान से किसी ऐसी चीज़ का इन्कार न करे जो ज़रूरियाते दीन से है, अगर्चे बाक़ी बातों का इक़रार करता हो, अगर्चे वोह येह कहे कि सिर्फ़ ज़बान से इन्कार है दिल में इन्कार

नहीं कि बिला इकराहे शरई मुसलमान कलिमए कुफ़्र सादिर नहीं कर सकता, वोही शख़्स ऐसी बात मुंह पर लाएगा जिस के दिल में इतनी ही वुक़्अ़त है कि जब चाहा इन्कार कर दिया और ईमान तो ऐसी तस्दीक़ है जिस के ख़िलाफ़ की अस्लन गुन्जाइश नहीं।

सुवाल अगर कोई जान से मार डालने की धमकी दे और वोह इस डर की वज्ह से ज़बान से कलिमए कुफ़्र बक दे, दिल ईमान पर मुत़मइन हो तो क्या वोह मोमिन ही रहेगा ?

जवाब हां ! अगर वाक़ेई ऐसी ह़ालत है कि जान का ख़ौफ़ है और तस्दीक़े क़ल्बी में कुछ ख़लल या'नी ख़राबी न आए या'नी ईमान पर दिल मुत़मइन रहे तो ऐसा शख़्स मोमिन होगा अगर्चे उस को मजबूरी की ह़ालत में ज़बान से कलिमए कुफ़्र कहना भी पड़ जाए मगर बेहतर येही है कि ऐसी ह़ालत में भी कलिमए कुफ़्र ज़बान पर न लाए।

सुवाल क्या कबीरा गुनाह करने से बन्दा ईमान से ख़ारिज हो जाता है ?

जवाब गुनाहे कबीरा करने से आदमी काफ़िर और ईमान से ख़ारिज नहीं होता।

सुवाल कबीरा गुनाह क्या होता है ?

जवाब वोह गुनाह जिस के बारे में कुरआन व ह़दीस में ह़द या वई़द बयान की गई हो। याद रहे कि सग़ीरा गुनाह भी इसरार (या'नी बिग़ैर तौबा के बार बार करने) से कबीरा हो जाता है यूंही हल्का जान कर करने से भी कबीरा हो जाता है।

सुवाल वोह कौन से गुनाह हैं जो कभी न बख़्शे जाएंगे ?

जवाब शिर्क व कुफ़्र कभी न बख़्शे जाएंगे और मुशरिक व काफ़िर जिस की मौत कुफ़्रो शिर्क पर हो उस की हरगिज़ मग़्फ़िरत न होगी। इन के सिवा **अल्लाह** तआ़ला जिस गुनाह को चाहेगा अपने मह़बूब बन्दों की शफ़ाअ़त से या मह़्ज़ अपने करम से बख़्श देगा।

सुवाल कुफ़्रो शिर्क क्या होता है ?

जवाब शिर्क येह है कि **अल्लाह** के सिवा किसी और को खुदा या इ़बादत के लाइक़ समझे और कुफ़्र येह है कि ज़रूरियाते दीन या'नी वोह उमूर जिन का दीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से होना यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम हो उन में से किसी का इन्कार करे।

सुवाल क्या कुफ़्र कुछ अफ़्आ़ल करने से भी सरज़द हो जाता है या सिर्फ़ ज़बान से बोलने या दिल से ही मानने से होता है ?

जवाब बा'ज़ अफ़्आ़ल जो इस्लाम की तक्ज़ीब व इन्कार की अ़लामात हैं उन पर भी हुक्मे कुफ़्र दिया जाता है जैसे ज़ुन्नार पहनना, क़श्क़ा लगाना वग़ैरा।

सुवाल मुसलमानों और काफ़िरों का आख़िरे कार अन्जाम क्या होगा ?

जवाब काफ़िर हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे और मुसलमान कितना भी गुनहगार हो कभी न कभी ज़रूर नजात पाएगा।

सुवाल मुसलमान कौन है ?

जवाब जो ज़बान से इस्लाम का इक़रार और दिल से उस की तस्दीक़ करे और ज़रूरियाते दीन में से किसी का इन्कार न करे।

सुवाल जो ज़बान से इक़रार करे लेकिन दिल से तस्दीक़ न करे, क्या वोह भी मुसलमान है ?

जवाब वोह मुनाफ़िक़ है जो काफ़िर से भी बदतर है और उस का ठिकाना दोज़ख़ का सब से नीचे वाला त़बक़ा है।

सुवाल जो न दिल से तस्दीक़ करे न ज़बान से इक़रार करे उसे क्या कहेंगे ?

जवाब वोह भी यक़ीनन काफ़िर है।

सुवाल जो दिल से तस्दीक़ भी करे और ज़बान से इक़रार भी और हर त़रह़ के कुफ़्रो शिर्क से बचे लेकिन गुनाह करे उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब वोह मुसलमान तो है लेकिन फ़ासिक़ (गुनहगार व ना फ़रमान) है ।

❁❁❁❁

कुफ़्रिय्या कलिमात का बयान और मुर्तद के अह़काम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾ (پ۲، البقرۃ:۲۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम में से जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना ।*

कुफ़्रो शिर्क से बदतर कोई गुनाह नहीं और वोह भी इर्तिदाद कि येह कुफ़्रे अस्ली से भी ब ए'तिबारे अह़काम सख़्त तर है जैसा कि उस के अह़काम से मा'लूम होगा। मुसलमान को चाहिये कि इस से पनाह मांगता रहे कि शैत़ान हर वक़्त ईमान की घात में है और ह़दीस में फ़रमाया कि शैत़ान इन्सान के बदन में ख़ून की त़रह़ तैरता है।(1) आदमी को कभी अपने ऊपर या अपनी त़ाअ़त व आ'माल पर भरोसा न चाहिये हर वक़्त ख़ुदा पर ए'तिमाद करे और उसी से बक़ाए ईमान की दुआ़ चाहे कि उसी के हाथ में क़ल्ब है और क़ल्ब को क़ल्ब इसी वज्ह से कहते हैं कि लोट पोट होता रहता है, ईमान पर साबित रहना उसी की तौफ़ीक़ से है जिस के दस्ते क़ुदरत में क़ल्ब है और ह़दीस में फ़रमाया कि शिर्क से बचो कि वोह च्यूंटी की चाल से

(1)....ترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء کراھیة...الخ، ۳۹۱/۲، حدیث۱۱۷۵

ज़ियादा मख़्फ़ी है[1] और इस से बचने की ह़दीस में एक दुआ़ इरशाद फ़रमाई इसे हर रोज़ तीन मरतबा पढ़ लिया करो, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि शिर्क से मह़फ़ूज़ रहोगे, वोह दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ.[2]

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं कि जान बूझ कर तेरे साथ किसी को शरीक बनाऊं और तुझ से बख़्शिश मांगता हूं (उस शिर्क से) जिसे मैं नहीं जानता बेशक तू दानाए ग़ुयूब है।[3]

मुर्तद की ता'रीफ़ और चन्द मख़्सूस अह़काम

सुवाल मुर्तद कौन होता है ?

जवाब मुर्तद वोह शख़्स है कि इस्लाम के बा'द किसी ऐसे अम्र का इन्कार करे जो ज़रूरियाते दीन से हो या'नी ज़बान से कलिमए कुफ़्र बके जिस में तावीले सह़ीह़ की गुन्जाइश न हो। यूंहीं बा'ज़ अफ़्आ़ल भी ऐसे हैं जिन से काफ़िर हो जाता है मसलन बुत को सजदा करना। मुस्ह़फ़ शरीफ़ को नजासत की जगह फैंक देना। याद रहे कि जो बत़ौरे तमस्ख़ुर और ठठ्ठे के (या'नी मज़ाक़ मस्ख़री में) कुफ़्र करेगा वोह भी मुर्तद है अगर्चे कहता है कि ऐसा ए'तिक़ाद नहीं रखता।

सुवाल मुर्तद होने की क्या शराइत़ हैं ?

जवाब मुर्तद होने की चन्द शर्तें हैं।

(1) अ़क़्ल। ना समझ बच्चा और पागल से ऐसी बात निकली तो हुक्मे कुफ़्र नहीं। (2) होश। अगर नशे में बका तो काफ़िर न हुवा। (3) इख़्तियार।

1 ....المسند، للامام احمد بن حنبل، مسند الكوفيين، حديث أبي موسى الأشعرى، ٧/١٤٦، حديث ١٩٦٢٥

2 ....الدر المختار و رد المحتار، كتاب الجهاد، باب المرتد، مطلب: في حكم من شتم... الخ، ٦/٣٥٤

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 454

मजबूरी और इकराह की सूरत में हुक्मे कुफ़्र नहीं। मजबूरी के येह मा'ना हैं कि जान जाने या उ़ज़्व कटने या ज़र्बे शदीद का सह़ीह़ अन्देशा हो इस सूरत में सिर्फ़ ज़बान से इस कलिमे के कहने की इजाज़त है बशर्ते़ कि दिल में वोही इत़्मीनाने ईमानी हो।

إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ
(پ١٤، النحل:١٠٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सिवा उस के जो मजबूर किया जाए और उस का दिल ईमान पर जमा हुवा हो।*

सुवाल मुर्तद की सज़ा क्या है ?

जवाब जो शख़्स مَعَاذَ الله मुर्तद हो गया तो मुस्तह़ब है कि ह़ाकिमे इस्लाम उस पर इस्लाम पेश करे और अगर वोह कुछ शुबा बयान करे तो उस का जवाब दे और अगर मोहलत मांगे तो तीन दिन क़ैद में रखे और हर रोज़ इस्लाम की तल्क़ीन करे। यूहीं अगर उस ने मोहलत न मांगी मगर उम्मीद है कि इस्लाम क़बूल कर लेगा जब भी तीन दिन क़ैद में रखा जाए फिर अगर मुसलमान हो जाए फ़बिहा वरना क़त्ल कर दिया जाए बिग़ैर इस्लाम पेश किये उसे क़त्ल कर डालना मकरूह है। मुर्तद को क़ैद करना और इस्लाम न क़बूल करने पर क़त्ल कर डालना बादशाहे इस्लाम का काम है और उस से मक़्सूद येह है कि ऐसा शख़्स अगर ज़िन्दा रहा और उस से तअ़र्रुज़ न किया गया तो मुल्क में त़रह़ त़रह़ के फ़साद पैदा होंगे और फ़ितने का सिलसिला रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी पज़ीर होगा जिस की वज्ह से अम्ने आ़म्मा में ख़लल पड़ेगा लिहाज़ा ऐसे शख़्स को ख़त्म कर देना ही मुक़्तज़ाए ह़िक्मत था। अब चूंकि हुकूमते इस्लाम हिन्दुस्तान में बाक़ी नहीं कोई रोक थाम करने वाला बाक़ी न रहा हर शख़्स जो चाहता है बकता है और आए दिन मुसलमानों में फ़साद पैदा होता है नए नए मज़हब पैदा होते रहते हैं एक ख़ानदान बल्कि बा'ज़ जगह एक घर में कई मज़हब हैं और बात बात पर झगड़े लड़ाई हैं इन तमाम ख़राबियों का बाइ़स येही नया मज़हब है ऐसी सूरत में सब से बेहतर तरकीब वोह है जो ऐसे

वक़्त के लिये कुरआनो ह़दीस में इरशाद हुई अगर मुसलमान इस पर अ़मल करें तमाम फ़ित्नों से नजात पाएं दुन्या व आख़िरत की भलाई हाथ आए। वोह येह है कि ऐसे लोगों से बिल्कुल मैल जोल छोड़ दें, सलाम कलाम तर्क कर दें, उन के पास उठना बैठना, उन के साथ खाना पीना, उन के यहां शादी बियाह करना, ग़रज़ हर क़िस्म के तअ़ल्लुक़ात उन से क़त्अ़ कर दें गोया समझें कि वोह अब रहा ही नहीं, وَاللّٰهُ الْمُوَفِّق ।

सुवाल औ़रत या ना बालिग़ समझदार बच्चा मुर्तद हो जाएं तो उन की सज़ा क्या है ?

जवाब औ़रत या ना बालिग़ समझवाल बच्चा मुर्तद हो जाए तो क़त्ल न करेंगे बल्कि क़ैद करेंगे यहां तक कि तौबा करे और मुसलमान हो जाए।

सुवाल क्या मुर्तद की इर्तिदाद से तौबा क़बूल है ? अगर हां तो क्या हर मुर्तद का येही हुक्म है ?

जवाब मुर्तद अगर इर्तिदाद से तौबा करे तो उस की तौबा मक़्बूल है मगर बा'ज़ मुर्तद्दीन मसलन किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी करने वाला कि उस की तौबा मक़्बूल नहीं। तौबा क़बूल करने से मुराद येह है कि तौबा करने के बा'द बादशाहे इस्लाम उसे क़त्ल न करेगा।

सुवाल मुर्तद इर्तिदाद से मुन्किर हो तो उस की सज़ा के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब मुर्तद अगर अपने इर्तिदाद से इन्कार करे तो येह इन्कार ब मन्ज़िला तौबा है अगर्चे गवाहाने आ़दिल से उस का इर्तिदाद साबित हो या'नी इस सूरत में येह क़रार दिया जाएगा कि इर्तिदाद तो किया मगर अब तौबा कर ली लिहाज़ा क़त्ल न किया जाएगा और इर्तिदाद के बाक़ी अह़काम जारी होंगे मसलन उस की औ़रत निकाह़ से निकल जाएगी, जो कुछ आ'माल किये थे सब अकारत हो जाएंगे, ह़ज की इस्तित़ाअ़त रखता है तो अब फिर ह़ज फ़र्ज़ है कि पहला ह़ज जो कर चुका था बेकार हो गया। अगर इस क़ौल से इन्कार नहीं करता मगर लाया'नी तक़रीरों से इस अम्र को सह़ीह़ बताता है जैसा ज़मानए ह़ाल के मुर्तद्दीन का शेवा है तो येह न इन्कार है न तौबा मसलन

क़ादियानी कि नुबुव्वत का दा'वा करता है और ख़ातमुन्नबिय्यीन के ग़लत़ मा'ने बयान कर के अपनी नुबुव्वत को बर क़रार रखना चाहता है या ह़ज़रते सय्यिदुना मसीह़ ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शाने पाक में सख़्त सख़्त ह़म्ले करता है फिर ह़ीले गढ़ता है.....ऐसी बातों से कुफ़्र नहीं हट सकता कुफ़्र उठाने का जो निहायत आसान त़रीक़ा है काश ! उसे बरतते तो उन ज़ह़मतों में न पड़ते और अ़ज़ाबे आख़िरत से भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रिहाई की सूरत निकलती वोह सिर्फ़ तौबा है कि कुफ़्रो शिर्क सब को मिटा देती है, मगर इस में वोह अपनी ज़िल्लत समझते हैं ह़ालांकि येह ख़ुदा को मह़बूब, उस के मह़बूबों को पसन्द, तमाम उ़क़ला के नज़्दीक इस में इ़ज़्ज़त ।

इर्तिदाद से तौबा का त़रीक़ा

सुवाल इर्तिदाद से तौबा का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब किसी दीने बात़िल को इख़्तियार किया मसलन यहूदी या नसरानी हो गया ऐसा शख़्स मुसलमान उस वक़्त होगा कि उस दीने बात़िल से बेज़ारी व नफ़रत ज़ाहिर करे और दीने इस्लाम क़बूल करे । और अगर ज़रूरियाते दीन में से किसी बात का इन्कार किया हो तो जब तक उस का इक़रार न करे जिस से इन्कार किया है मह़्ज़ कलिमए शहादत पढ़ने पर उस के इस्लाम का हुक्म न दिया जाएगा कि कलिमए शहादत का उस ने ब ज़ाहिर इन्कार न किया था मसलन नमाज़ या रोज़े की फ़र्ज़िय्यत से इन्कार करे या शराब और सुअर की ह़ुरमत न माने तो उस के इस्लाम के लिये येह शर्त़ है कि जब तक ख़ास उस अम्र का इक़रार न करे उस का इस्लाम क़बूल नहीं या **अल्लाह** तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में गुस्ताख़ी करने से काफ़िर हुवा तो जब तक इस से तौबा न करे मुसलमान नहीं हो सकता ।

सुवाल तजदीदे ईमान का त़रीक़ा भी बता दीजिये ?

जवाब जिस कुफ़्र से तौबा मक़्सूद है वोह उसी वक़्त मक़्बूल होगी जब कि वोह उस कुफ़्र को कुफ़्र तस्लीम करता हो और दिल में उस कुफ़्र से नफ़रत व

बेज़ारी भी हो। जो कुफ़्र सरज़द हुवा तौबा में उस का तज़्किरा भी हो। मसलन जिस ने वीज़ा फ़ोर्म पर अपने आप को क्रिस्चैन लिख दिया वोह इस त़रह़ कहे : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो वीज़ा फ़ारम में अपने आप को क्रिस्चैन ज़ाहिर किया है उस कुफ़्र से तौबा करता हूं। لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं)" इस त़रह़ मख़्सूस कुफ़्र से तौबा भी हो गई और तजदीदे ईमान भी। अगर مَعَاذَ اللّٰہ कई कुफ़्रिय्यात बके हों और याद न हो कि क्या क्या बका है तो यूं कहे : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से जो जो कुफ़्रिय्यात सादिर हुवे हैं मैं उन से तौबा करता हूं।" फिर कलिमा पढ़ ले। (अगर कलिमा शरीफ़ का तर्जमा मा'लूम है तो ज़बान से तर्जमा दोहराने की ह़ाजत नहीं) अगर येह मा'लूम ही नहीं कि कुफ़्र बका भी है या नहीं तब भी अगर एह़तियातन तौबा करना चाहें तो इस त़रह़ कहिये : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर मुझ से कोई कुफ़्र हो गया हो तो मैं उस से तौबा करता हूं।" येह कहने के बा'द कलिमा पढ़ लीजिये।

मुर्तद से मुतअ़ल्लिक़ चन्द फ़िक़्ही अह़काम

सुवाल मुर्तद मुसलमान हो गया, अब इर्तिदाद से पहले जो इबादात अदा की थीं क्या उन को दोबारा अदा करना होगा ? और जो इबादात इर्तिदाद से पहले क़ज़ा थीं क्या उन की अदाएगी अब भी लाज़िम है ?

जवाब ज़मानए इस्लाम में कुछ इबादात क़ज़ा हो गईं और अदा करने से पहले मुर्तद हो गया फिर मुसलमान हुवा तो उन इबादात की क़ज़ा करे और जो अदा कर चुका था अगर्चे इर्तिदाद से बात़िल हो गईं मगर उस की क़ज़ा नहीं अलबत्ता अगर साह़िबे इस्तिताअ़त हो तो ह़ज दोबारा फ़र्ज़ होगा।

सुवाल मर्द ने कुफ़्रे क़त़ई किया तो उस के निकाह़ का क्या हुक्म है ?

जवाब अगर कुफ़्रे क़त़ई हो तो औ़रत निकाह़ से निकल जाएगी फिर इस्लाम

लाने के बा'द अगर औ़रत राज़ी हो तो दोबारा उस से निकाह़ हो सकता है वरना जहां पसन्द करे निकाह़ कर सकती है उस का कोई ह़क़ नहीं कि औ़रत को दूसरे के साथ निकाह़ करने से रोक दे और अगर इस्लाम लाने के बा'द औ़रत को ब दस्तूर रख लिया दोबारा निकाह़ न किया तो कु़र्बत ज़िना होगी और बच्चे वलदुज़्ज़िना और अगर कुफ़्रे क़त़ई न हो या'नी बा'ज़ उ़लमा काफ़िर बताते हों और बा'ज़ नहीं या'नी फ़ुक़हा के नज़्दीक काफ़िर हो और मुतकल्लिमीन के नज़्दीक नहीं तो इस सूरत में भी तजदीदे इस्लाम व तजदीदे निकाह़ का हुक्म दिया जाएगा।

सुवाल औ़रत मुर्तद हो गई तो उस के निकाह़ का क्या हुक्म है ?

जवाब औ़रत मुर्तद हो गई फिर इस्लाम लाई तो शौहरे अव्वल से निकाह़ करने पर मजबूर की जाएगी येह नहीं हो सकता है कि दूसरे से निकाह़ करे इसी पर फ़तवा है।

सुवाल मुर्तद के निकाह़ का क्या हुक्म है ? उस का निकाह़ किस से हो सकता है ?

जवाब मुर्तद का निकाह़ बिल इत्तिफ़ाक़ बात़िल है वोह किसी औ़रत से निकाह़ नहीं कर सकता न मुस्लिमा से न काफ़िरा से न मुर्तदा से न हुर्रा से न कनीज़ से।

सुवाल तजदीदे निकाह़ कैसे किया जाए ?

जवाब तजदीदे निकाह़ का मा'ना है : "नए मेहर से नया निकाह़ करना।" इस के लिये लोगों को इकठ्ठा करना ज़रूरी नहीं। निकाह़ नाम है ईजाबो क़बूल का। हां ब वक़्ते निकाह़ बत़ौरे गवाह कम अज़ कम दो मर्द मुसलमान या एक मर्द मुसलमान और दो मुसलमान औ़रतों का ह़ाज़िर होना लाज़िमी है। खुत़बए निकाह़ शर्त़ नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। खुत़बा याद न हो तो اَعُوْذُ بِاللّٰہِ और بِسْمِ اللّٰہِ शरीफ़ के बा'द सूरए फ़ातिह़ा भी पढ़ सकते हैं। कम अज़ कम दस दिरहम या'नी दो तोला साढ़े सात माशा चांदी (मौजूदा वज़्न के ह़िसाब से 30 ग्राम 618 मिली ग्राम चांदी) या उस की रक़म मेहर वाजिब है।

मसलन आप ने पाकिस्तानी 786 रूपे उधार मेहर की निय्यत कर ली है (मगर येह देख लीजिये कि मेहर मुक़र्रर करते वक़्त मज़्कूरा चांदी की क़ीमत 786 पाकिस्तानी रूपे से ज़ाइद तो नहीं) तो अब मज़्कूरा गवाहों की मौजूदगी में आप "ईजाब" कीजिये या'नी औ़रत से कहिये : "मैं ने 786 पाकिस्तानी रूपे मेहर के बदले आप से निकाह़ किया।" औ़रत कहे : "मैं ने क़बूल किया।" निकाह़ हो गया। येह भी हो सकता है कि औ़रत ही ख़ुत़्बा या सूरए फ़ातिह़ा पढ़ कर "ईजाब" करे और मर्द कहे : "मैं ने क़बूल किया", निकाह़ हो गया। बा'दे निकाह़ अगर औ़रत चाहे तो मेहर मुआ़फ़ भी कर सकती है। मगर मर्द बिला ह़ाजते शरई औ़रत से मेहर मुआ़फ़ करने का सुवाल न करे।

सुवाल मुर्तद के ज़बीह़ा का क्या हुक्म है ?

जवाब मुर्तद का ज़बीह़ा मुर्दार है अगर्चे بِسۡمِ اللّٰہِ कर के ज़ब्ह़ करे। यूहीं कुत्ते या बाज़ या तीर से जो शिकार किया है वोह भी मुर्दार है, अगर्चे छोड़ने के वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ कह ली हो।

सुवाल मुर्तद की गवाही और उस के वारिस बनने के मुतअ़ल्लिक़ क्या शरई हुक्म है ?

जवाब मुर्तद किसी मुआ़मले में गवाही नहीं दे सकता और किसी का वारिस नहीं हो सकता और ज़मानए इर्तिदाद में जो कुछ कमाया है उस में मुर्तद का कोई वारिस नहीं।

सुवाल मुर्तद के माल का क्या हुक्म है ? दोबारा इस्लाम क़बूल करने या न करने की सूरत में क्या हुक्म होगा ?

जवाब इर्तिदाद से मिल्क जाती रहती है या'नी जो कुछ उस के अमलाक व अमवाल थे सब उस की मिल्क से ख़ारिज हो गए मगर जब कि फिर इस्लाम लाए और कुफ़्र से तौबा करे तो ब दस्तूर मालिक हो जाएगा और अगर कुफ़्र ही पर मर गया या दारुल ह़र्ब को चला गया तो ज़मानए इस्लाम के जो कुछ अमवाल हैं उन से अव्वलन उन दुयून को अदा करेंगे जो ज़मानए इस्लाम में उस के ज़िम्मे थे उस से जो बचे वोह मुसलमान वुरसा को मिलेगा और

ज़मानए इर्तिदाद में जो कुछ कमाया है उस से ज़मानए इर्तिदाद के दुयून अदा करेंगे इस के बा'द जो बचे वोह फ़ै है।

सुवाल बीवी की इ़द्दत में मुर्तद हो कर दारुल ह़र्ब चला गया या उसी ह़ालत में क़त्ल कर दिया गया तो क्या औ़रत वारिस होगी ?

जवाब औ़रत को त़लाक़ दी थी वोह अभी इ़द्दत ही में थी कि शौहर मुर्तद हो कर दारुल ह़र्ब को चला गया या ह़ालते इर्तिदाद में क़त्ल किया गया तो वोह औ़रत वारिस होगी।

वोह सूरतें जो कुफ़्रिय्या नहीं हैं

सुवाल ज़बान फिसलने की वज्ह से कुफ़्रिय्या बात निकल गई तो क्या हुक्म है ?

जवाब कहना कुछ चाहता था और ज़बान से कुफ़्र की बात निकल गई तो काफ़िर न हुवा या'नी जब कि इस अम्र से इज़्हारे नफ़रत करे कि सुनने वालों को भी मा'लूम हो जाए कि ग़लती से येह लफ़्ज़ निकला है और अगर बात की पच की तो अब काफ़िर हो गया कि कुफ़्र की ताईद करता है।

सुवाल कुफ़्रिय्या बात का दिल में ख़याल पैदा हुवा तो क्या काफ़िर हो जाएगा ?

जवाब कुफ़्री बात का दिल में ख़याल पैदा हुवा और ज़बान से बोलना बुरा जानता है तो येह कुफ़्र नहीं बल्कि ख़ास ईमान की अ़लामत है कि दिल में ईमान न होता तो उसे बुरा क्यूं जानता ?

कलिमाते कुफ़्रिय्या का बयान

सुवाल क्या येह ख़याल दुरुस्त है कि किसी शख़्स में एक बात भी इस्लाम की हो तो उसे काफ़िर न कहा जाए ?

जवाब किसी कलाम में चन्द मा'ने बनते हैं बा'ज़ कुफ़्र की त़रफ़ जाते हैं बा'ज़ इस्लाम की त़रफ़ तो उस शख़्स की तक्फ़ीर नहीं की जाएगी। हां अगर मा'लूम हो कि क़ाइल ने मा'नए कुफ़्र का इरादा किया मसलन वोह ख़ुद कहता

है कि मेरी मुराद येही है तो कलाम का मोह्तमल होना नफ़्अ़ न देगा। यहां से मा'लूम हुवा कि कलिमे के कुफ़्र होने से क़ाइल का काफ़िर होना ज़रूर नहीं। आज कल बा'ज़ लोगों ने येह ख़याल कर लिया है कि किसी शख़्स में एक बात भी इस्लाम की हो तो उसे काफ़िर न कहेंगे येह बिल्कुल ग़लत़ है क्या यहूदो नसारा में इस्लाम की कोई बात नहीं पाई जाती ह़ालांकि क़ुरआने अ़ज़ीम में उन्हें काफ़िर फ़रमाया गया।

बल्कि बात येह है कि उ़लमा ने फ़रमाया येह था कि अगर किसी मुसलमान ने ऐसी बात कही जिस के बा'ज़ मा'ना इस्लाम के मुत़ाबिक़ हैं तो काफ़िर न कहेंगे इस को उन लोगों ने येह बना लिया। एक येह वबा भी फैली हुई है कहते हैं कि "हम तो काफ़िर को भी काफ़िर न कहेंगे कि हमें क्या मा'लूम कि उस का ख़ातिमा कुफ़्र पर होगा" येह भी ग़लत़ है क़ुरआने अ़ज़ीम ने काफ़िर को काफ़िर कहा और काफ़िर कहने का हुक्म दिया। ﴿قُلۡ یٰۤاَیُّہَا الۡکٰفِرُوۡنَ ۙ﴿۱﴾﴾ (پ۳۰، الکافرون:۱) और अगर ऐसा है तो मुसलमान को भी मुसलमान न कहो तुम्हें क्या मा'लूम कि इस्लाम पर मरेगा! ख़ातिमे का ह़ाल तो ख़ुदा जाने मगर शरीअ़त ने काफ़िर व मुस्लिम में इम्तियाज़ रखा है अगर काफ़िर को काफ़िर न जाना जाए तो क्या उस के साथ वोही मुआ़मलात करोगे जो मुस्लिम के साथ होते हैं ह़ालांकि बहुत से उमूर ऐसे हैं जिन में कुफ़्फ़ार के अह़काम मुसलमानों से बिल्कुल जुदा हैं मसलन उन के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ना, उन के लिये इस्तिग़फ़ार न करना, उन को मुसलमानों की त़रह़ दफ़्न न करना, उन को अपनी लड़कियां न देना, उन पर जिहाद करना, उन से जिज़्या लेना इस से इन्कार करें तो क़त्ल करना वग़ैरा वग़ैरा।

बा'ज़ जाहिल येह कहते हैं कि "हम किसी को काफ़िर नहीं कहते, आ़लिम लोग जानें वोह काफ़िर कहें" मगर क्या येह लोग नहीं जानते कि अ़वाम के तो वोही अ़क़ाइद होंगे जो क़ुरआनो ह़दीस वग़ैरहुमा से उ़लमा ने उन्हें बताए या अ़वाम के लिये कोई शरीअ़त जुदागाना है जब ऐसा नहीं तो

फिर आ़लिमे दीन के बताए पर क्यूं नहीं चलते नीज़ येह कि ज़रूरियात का इन्कार कोई ऐसा अम्र नहीं जो उ़लमा ही जानें अ़वाम जो उ़लमा की सोहबत से मुशर्रफ़ होते रहते हैं वोह भी इन से बे ख़बर नहीं होते फिर ऐसे मुआ़मले में पहलू तही और ए'राज़ के क्या मा'ना।

यहां चन्द दीगर कलिमाते कुफ़्र जो लोगों से सादिर होते हैं बयान किये जाते हैं ताकि इन का भी इल्म ह़ासिल हो और ऐसी बातों से तौबा की जाए और इस्लामी ह़ुदूद की मुह़ाफ़ज़त की जाए।

ईमान व इस्लाम से मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात

सुवाल किसी शख़्स को अपने ईमान में शक हो तो ऐसे के बारे में क्या हुक्म है?

जवाब जिस शख़्स को अपने ईमान में शक हो या'नी कहता है कि मुझे अपने मोमिन होने का यक़ीन नहीं या कहता है मा'लूम नहीं मैं मोमिन हूं या काफ़िर वोह काफ़िर है। हां अगर उस का मत़लब येह हो कि मा'लूम नहीं मेरा ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं तो काफ़िर नहीं। जो शख़्स ईमान व कुफ़्र को एक समझे या'नी कहता है कि सब ठीक है ख़ुदा को सब पसन्द है वोह काफ़िर है। यूहीं जो शख़्स ईमान पर राज़ी नहीं या कुफ़्र पर राज़ी है वोह भी काफ़िर है।

सुवाल इस्लाम को बुरा कहने वाले के बारे में क्या हुक्म है?

जवाब एक शख़्स गुनाह करता है लोगों ने उसे मन्अ़ किया तो कहने लगा इस्लाम का काम इसी त़रह़ करना चाहिये या'नी जो गुनाह व मा'सिय्यत को इस्लाम कहता है वोह काफ़िर है। यूहीं किसी ने दूसरे से कहा : मैं मुसलमान हूं, उस ने जवाब में कहा : तुझ पर भी ला'नत और तेरे इस्लाम पर भी ला'नत, ऐसा कहने वाला काफ़िर है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते मुबारका से मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते मुबारका से मुतअ़ल्लिक़ बोले जाने वाले चन्द कुफ़्रिय्या कलिमात बता दें?

जवाब (1) अगर येह कहा : ख़ुदा मुझे उस काम के लिये हुक्म देता जब भी न करता तो काफ़िर है। (2) एक ने दूसरे से कहा : मैं और तुम ख़ुदा के हुक्म के मुवाफ़िक़ काम करें दूसरे ने कहा : मैं ख़ुदा का हुक्म नहीं जानता, या कहा : यहां किसी का हुक्म नहीं चलता। (3) कोई शख़्स बीमार नहीं होता या बहुत बूढ़ा है मरता नहीं उस के लिये येह कहना कि इसे **अल्लाह** मियां भूल गए हैं। (4) किसी ज़बान दराज़ आदमी से येह कहना कि ख़ुदा तुम्हारी ज़बान का मुक़ाबला कर ही नहीं सकता मैं किस त़रह़ करूं येह कुफ़्र है। (5) एक ने दूसरे से कहा : अपनी औ़रत को क़ाबू में नहीं रखता, उस ने कहा : औ़रतों पर ख़ुदा को तो क़ुदरत है नहीं, मुझ को कहां से होगी।

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मकान साबित करने का क्या हुक्म है ?

जवाब ख़ुदा के लिये मकान साबित करना कुफ़्र है कि वोह मकान से पाक है येह कहना कि ऊपर ख़ुदा है नीचे तुम येह कलिमए कुफ़्र है।

सुवाल जो कहे मैं जहन्नम से या अ़ज़ाब से नहीं डरता उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब किसी से कहा : गुनाह न कर, वरना ख़ुदा तुझे जहन्नम में डालेगा, उस ने कहा : मैं जहन्नम से नहीं डरता, या कहा : ख़ुदा के अ़ज़ाब की कुछ परवा नहीं। या एक ने दूसरे से कहा : तू ख़ुदा से नहीं डरता ? उस ने ग़ुस्से में कहा : नहीं, या कहा : ख़ुदा क्या कर सकता है ? इस के सिवा क्या कर सकता है कि दोज़ख़ में डाल दे। या कहा : ख़ुदा से डर, उस ने कहा : ख़ुदा कहां है ? येह सब कुफ़्र के कलिमात हैं।

सुवाल अगर कोई येह कहे मैं اِنْ شَآءَ اللّٰہ के बिग़ैर काम करूंगा तो क्या हुक्म है ?

जवाब किसी से कहा : اِنْ شَآءَ اللّٰہ तुम इस काम को करोगे, उस ने कहा : मैं बिग़ैर اِنْ شَآءَ اللّٰہ करूंगा या एक ने दूसरे पर ज़ुल्म किया, मज़्लूम ने कहा : ख़ुदा ने येही मुक़द्दर किया था, ज़ालिम ने कहा : मैं बिग़ैर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के मुक़द्दर किये करता हूं, येह कुफ़्र है।

सुवाल क्या मोह़ताजी कुफ़्र है ?

जवाब किसी मिस्कीन ने अपनी मोह़ताजी को देख कर येह कहा : ऐ ख़ुदा ! फ़ुलां भी तेरा बन्दा है उस को तू ने कितनी ने'मतें दे रखी हैं और मैं भी तेरा बन्दा हूं मुझे किस क़दर रंजो तक्लीफ़ देता है आख़िर येह क्या इन्साफ़ है ऐसा कहना कुफ़्र है । ह़दीस में ऐसे ही के लिये फ़रमाया : كَادَالْفَقْرُاَنْ يَّكُوْنَ كُفْرًا[1] मोह़ताजी कुफ़्र के क़रीब है कि जब मोह़ताजी के सबब ऐसे ना मुलाइम कलिमात सादिर हों जो कुफ़्र हैं तो गोया ख़ुद मोह़ताजी क़रीब ब कुफ़्र है ।

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की तसग़ीर करना कैसा है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की तसग़ीर करना कुफ़्र है, जैसे किसी का नाम अ़ब्दुल्लाह या अ़ब्दुल ख़ालिक़ या अ़ब्दुर्रह़मान हो उसे पुकारने में आख़िर में अलिफ़ वग़ैरा ऐसे ह़ुरूफ़ मिला दें जिस से तसग़ीर समझी जाती है ।

सुवाल तेरा बाप **अल्लाह अल्लाह** करता है येह कहना कैसा ?

जवाब एक शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है उस का लड़का बाप को तलाश कर रहा था और रोता था किसी ने कहा : चुप रह तेरा बाप **अल्लाह अल्लाह** करता है येह कहना कुफ़्र नहीं क्यूंकि इस के मा'ना येह हैं कि ख़ुदा की याद करता है । और बा'ज़ जाहिल येह कहते हैं, कि لَآاِلٰهَ पढ़ता है येह बहुत क़बीह़ है कि येह नफ़ी मह़्ज़ है, जिस का मत़लब येह हुवा कि कोई ख़ुदा नहीं और येह मा'ना कुफ़्र है ।

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام से मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام की त़रफ़ बे ह़याई की निस्बत करने का क्या ह़ुक्म है ?

---

1 ....شعب الإيمان، باب في الحث على ترك الغل والحسد، ۵/۲۶۷، حديث: ۶۶۱۲

जवाब अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तौहीन करना, उन की जनाब में गुस्ताख़ी करना या उन को फ़वाहिश व बे हयाई की त़रफ़ मन्सूब करना कुफ़्र है, मसलन مَعَاذَاللّٰه यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़िना की त़रफ़ निस्बत करना।

सुवाल नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ातमुन्नबिय्यीन न जानने वाले नीज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्सूब अश्या की तौहीन करने वाले के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब जो शख़्स हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम अम्बिया में आख़िरी नबी न जाने या हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की किसी चीज़ की तौहीन करे या ऐ़ब लगाए, आप के मूए मुबारक को तह़क़ीर से याद करे, आप के लिबास मुबारक को गन्दा और मैला बताए, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के नाख़ुन बड़े बड़े कहे येह सब कुफ़्र है, बल्कि अगर किसी के इस कहने पर कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को कद्दू पसन्द था कोई येह कहे मुझे पसन्द नहीं तो बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक काफ़िर है और ह़क़ीक़त येह कि अगर इस ह़ैसिय्यत से उसे ना पसन्द है कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को पसन्द था तो काफ़िर है। यूहीं किसी ने येह कहा कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाना तनावुल फ़रमाने के बा'द तीन बार अंगुश्तहाए मुबारका चाट लिया करते थे, उस पर किसी ने कहा : येह अदब के ख़िलाफ़ है या किसी सुन्नत की तह़क़ीर करे, मसलन दाढ़ी बढ़ाना, मूंछें कम करना, इमामा बांधना या शिम्ला लटकाना, इन की इहानत कुफ़्र है जब कि सुन्नत की तौहीन मक़्सूद हो।

सुवाल अपने आप को पैग़म्बर कहने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब अब जो अपने को कहे मैं पैग़म्बर हूं और उस का मत़लब येह बताए कि मैं पैग़ाम पहुंचाता हूं वोह काफ़िर है या'नी येह तावील मसमूअ़ नहीं कि उ़र्फ़ में येह लफ़्ज़ रसूल व नबी के मा'ना में है।

सहा़बए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم से मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात

सुवाल हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की खि़लाफ़त के इन्कार का क्या हुक्म है ?

जवाब हज़राते शैखै़न (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की शाने पाक में सब्बो शितम करना, तबर्रा कहना या हज़रते सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सोह़बत या इमामत व खि़लाफ़त से इन्कार करना कुफ़्र है । हज़रते उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शाने पाक में क़ज़्फ़ जैसी नापाक तोहमत लगाना यक़ीनन क़त्अ़न कुफ़्र है ।

फ़िरिश्तों से मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात

सुवाल दुश्मन या ना पसन्द शख़्स को मलकुल मौत कहने का क्या हुक्म है ?

जवाब दुश्मन व मबग़ूज़ को देख कर येह कहना मलकुल मौत आ गए या कहा : इसे वैसा ही दुश्मन जानता हूं जैसा मलकुल मौत को, इस में अगर मलकुल मौत को बुरा कहना है तो कुफ़्र है और मौत की ना पसन्दीदगी की बिना पर है तो कुफ़्र नहीं । यूहीं जिब्रईल या मीकाईल या किसी फ़िरिश्ते को जो शख़्स ऐ़ब लगाए या तौहीन करे काफ़िर है ।

सुवाल कु़रआने पाक की किसी आयत को मज़ाक़ के तौ़र पर पढ़ना कैसा है ?

जवाब कु़रआन की किसी आयत को ऐ़ब लगाना या इस की तौहीन करना या इस के साथ मस्ख़रा पन करना कुफ़्र है मसलन दाढ़ी मूंडाने से मन्अ़ करने पर अक्सर दाढ़ी मुंडे कह देते हैं ﴿كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ﴾ (پ۳۰، التکاثر:۳) जिस का येह मत़लब बयान करते हैं कि कल्ला साफ़ करो येह कु़रआने मजीद की तह़रीफ़ व तब्दील भी है और इस के साथ मज़ाक़ और दिल्लगी भी और येह

दोनों बातें कुफ़्र, इसी त़रह़ अक्सर बातों में क़ुरआने मजीद की आयतें बे मौक़अ़ पढ़ दिया करते हैं और मक़्सूद हंसी करना होता है जैसे किसी को नमाज़े जमाअ़त के लिये बुलाया, वोह कहने लगा : मैं जमाअ़त से नहीं बल्कि तन्हा पढूंगा, क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : ﴿اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى﴾ (پ۲۱، العنکبوت:۴۵)

सुवाल मज़ामीर के साथ क़ुरआन पढ़ना कैसा है ?

जवाब मज़ामीर के साथ क़ुरआन पढ़ना कुफ़्र है।

नमाज़, अज़ान, रोज़ा वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात

सुवाल नमाज़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द कुफ़्रिय्या कलिमात बता दीजिये ?

जवाब किसी से नमाज़ पढ़ने को कहा : उस ने जवाब दिया नमाज़ पढ़ता तो हूं मगर इस का कुछ नतीजा नहीं या कहा : तुम ने नमाज़ पढ़ी क्या फ़ाएदा हुवा या कहा : नमाज़ पढ़ के क्या करूं किस के लिये पढूं ? मां बाप तो मर गए। या कहा : बहुत पढ़ ली अब दिल घबरा गया या कहा : पढ़ना न पढ़ना दोनों बराबर है ग़रज़ इसी क़िस्म की बात करना जिस से फ़र्ज़िय्यत का इन्कार समझा जाता हो या नमाज़ की तह़क़ीर होती हो येह सब कुफ़्र है।

कोई शख़्स सिर्फ़ रमज़ान में नमाज़ पढ़ता है बा'द में नहीं पढ़ता और कहता येह है कि येही बहुत है या जितनी पढ़ी येही ज़ियादा है क्यूंकि रमज़ान में एक नमाज़ सत्तर नमाज़ के बराबर है ऐसा कहना कुफ़्र है इस लिये कि इस से नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार मा'लूम होता है।

सुवाल अज़ान की आवाज़ सुन कर येह कहना कि क्या शोर मचा रखा है कैसा है ?

जवाब अगर येह क़ौल बर वज्हे इन्कार हो कुफ़्र है।

सुवाल रोज़ा वोह रखे जिसे खाना न मिले येह कहने का क्या हुक्म है ?

जवाब रोज़ए रमज़ान नहीं रखता और कहता येह है कि रोज़ा वोह रखे जिसे

खाना न मिले या कहता है जब खुदा ने खाने को दिया है तो भूके क्यूं मरें या इसी क़िस्म की और बातें जिन से रोज़े की हत्क व तह़क़ीर हो कहना कुफ़्र है।

सुवाल इल्मे दीन या उ़लमा की तौहीन का क्या हुक्म है ?

जवाब इल्मे दीन और उ़लमा की तौहीन बे सबब या'नी मह़ज़ इस वज्ह से कि आ़लिमे इल्मे दीन है कुफ़्र है। यूहीं आ़लिमे दीन की नक़्ल करना मसलन किसी को मिम्बर वग़ैरा किसी ऊंची जगह पर बिठाएं और उस से मसाइल बत़ौरे इस्तिहज़ा दरयाफ़्त करें फिर उसे तक्या वग़ैरा से मारें और मज़ाक़ बनाएं येह कुफ़्र है। यूहीं शरअ़ की तौहीन करना मसलन कहे मैं शरअ़ वरअ़ नहीं जानता या आ़लिमे दीन मोह़तात़ का फ़तवा पेश किया गया उस ने कहा : मैं फ़तवा नहीं मानता या फ़तवा को ज़मीन पर पटक दिया। किसी शख़्स को शरीअ़त का हुक्म बताया कि इस मुआ़मले में येह हुक्म है उस ने कहा : हम शरीअ़त पर अ़मल नहीं करेंगे हम तो रस्म की पाबन्दी करेंगे ऐसा कहना बा'ज़ मशाइख़ के नज़्दीक कुफ़्र है।

सुवाल शराब पीते वक़्त या ज़िना करते वक़्त या जुवा खेलते वक़्त या चोरी करते वक़्त بِسْمِ اللّٰہِ कहने का क्या हुक्म है ?

जवाब शराब पीते वक़्त या ज़िना करते वक़्त या जुवा खेलते वक़्त या चोरी करते वक़्त بِسْمِ اللّٰہِ कहना कुफ़्र है। दो शख़्स झगड़ रहे थे एक ने कहा : لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہ दूसरे ने कहा : لَاحَوْلَ का क्या काम है या لَاحَوْلَ को मैं क्या करूं या لَاحَوْلَ रोटी की जगह काम न देगा। यूहीं سُبْحٰنَ اللّٰہ और لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ के मुतअ़ल्लिक़ इसी क़िस्म के अल्फ़ाज़ कहना कुफ़्र है।

सुवाल बीमारी में घबरा कर येह कहना कि तुझे इख़्तियार है चाहे काफ़िर मार या मुसलमान मार, इस का क्या हुक्म है ?

जवाब बीमारी में घबरा कर कहने लगा तुझे इख़्तियार है चाहे काफ़िर मार या मुसलमान मार, येह कुफ़्र है। यूंही मसाइब में मुब्तला हो कर कहने लगा

तू ने मेरा माल लिया और औलाद ले ली और येह लिया वोह लिया अब क्या करेगा और क्या बाक़ी है जो तू ने न किया इस त़रह़ बकना कुफ़्र है।

सुवाल मुसलमान को कलिमाते कुफ़्र की ता'लीमो तल्क़ीन करने का क्या हुक्म है ?

जवाब मुसलमान को कलिमाते कुफ़्र की ता'लीमो तल्क़ीन करना कुफ़्र है अगर्चे खेल और मज़ाक़ में ऐसा करे।

अफ़्आले कुफ़्रिय्या का बयान

सुवाल होली दीवाली पूजने का क्या हुक्म है नीज़ कुफ़्फ़ार के मज़हबी तेहवारों में शिर्कत करना कैसा है ?

जवाब होली और दीवाली पूजना कुफ़्र है कि येह इ़बादते ग़ैरुल्लाह है। कुफ़्फ़ार के मेलों तेहवारों में शरीक हो कर उन के मेले और जुलूसे मज़हबी की शानो शौकत बढ़ाना कुफ़्र है जैसे राम लीला और जनमाष्टमी और राम नवमी वग़ैरा के मेलों में शरीक होना। यूहीं इन के तेहवारों के दिन मह़्ज़ इस वज्ह से चीज़ें ख़रीदना कि कुफ़्फ़ार का तेहवार है येह भी कुफ़्र है जैसे दीवाली में खिलौने और मिठाइयां ख़रीदी जाती हैं कि आज ख़रीदना दीवाली मनाने के सिवा कुछ नहीं। यूहीं कोई चीज़ ख़रीद कर इस रोज़ मुशरिकीन के पास हदया करना जब कि मक़्सूद इस दिन की ता'ज़ीम हो तो कुफ़्र है।

नसीह़त : मुसलमानों पर अपने दीन व मज़हब का तह़फ़्फ़ुज़ लाज़िम है, दीनी ह़मिय्यत और दीनी ग़ैरत से काम लेना चाहिये, काफ़िरों के कुफ़्री कामों से अलग रहें, मगर अफ़्सोस कि मुशरिकीन तो मुसलमानों से इजतिनाब करें और मुसलमान हैं कि उन से इख़्तिलात़ रखते हैं, इस में सरासर मुसलमानों का नुक़्सान है। इस्लाम ख़ुदा की बड़ी ने'मत है इस की क़द्र करो और जिस

बात में ईमान का नुक़्सान है, उस से दूर भागो ! वरना शैत़ान गुमराह कर देगा और येह दौलत तुम्हारे हाथ से जाती रहेगी फिर कफ़े अफ़्सोस मलने के सिवा कुछ हाथ न आएगा।(1)

ऐ **अल्लाह** ! (عَزَّوَجَلَّ) तू हमें सिराते़ मुस्तक़ीम पर क़ाइम रख और अपनी नाराज़ी के कामों से बचा और जिस बात में तू राज़ी है, उस की तौफ़ीक़ दे, तू हर दुश्वारी को दूर करने वाला है और हर सख़्ती को आसान करने वाला।

❁❁❁❁

ख़ुलफ़ाए राशिदीन

सुवाल ख़ुलफ़ाए राशिदीन से क्या मुराद है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ख़लीफ़ए बरह़क़ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर छे माह के लिये ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा हुवे इन ह़ज़रात को ख़ुलफ़ाए राशिदीन और इन्ही की ख़िलाफ़त को ''ख़िलाफ़ते राशिदा'' कहते हैं।

सुवाल इन ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से सब से अफ़्ज़ल कौन हैं ?

जवाब अम्बिया व मुर्सलीन के बा'द तमाम मख़्लूक़ात से अफ़्ज़ल ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।

सुवाल अगर कोई कहे कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या ह़ज़रते

1.....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब ''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब'' पढ़ना बहुत मुफ़ीद है।

उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अफ़्ज़ल हैं तो उस के बारे में क्या कहेंगे ?

जवाब ऐसा कहने वाला शख़्स गुमराह बद मज़्हब है।

सुवाल आज़ाद मर्दों में सब से पहले किस ने इस्लाम क़बूल किया ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने।

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्मे मुबारक अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़ुह़ाफ़ा है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रंग गोरा, जिस्म दुब्ला पतला, रुख़्सार रस्ते हुवे, आंखें ह़ल्क़ादार, पेशानी उभरी हुई थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदैन, बेटे और पोते सब सहाबी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) हैं और येह फ़ज़ीलत सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में किसी को ह़ासिल नहीं। आ़मुल फ़ील के दो बरस चार माह बा'द मक्कए मुकर्रमा में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई। अपनी उ़म्र शरीफ़ में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जुदाई कभी गवारा न की। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बहुत फ़ज़ाइल हैं अह़ादीस में बहुत ता'रीफ़ें आई हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लक़ब सिद्दीक़ व अ़तीक़ है हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अम्बिया व मुर्सलीन عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सिवा किसी शख़्स ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बराबर फ़ज़्लो शरफ़ नहीं पाया।(1) 22 जुमादीयुल आख़िर 13 हिजरी शबे सह शम्बा (मंगल) मदीनए मुनव्वरा मग़रिब व इशा के दरमियान तिरसठ साल की उ़म्र में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा। ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त 2 साल 4 माह रही।(2)

1 ....فردوس الاخبار، ۲/۳۲۸، حدیث: ۲۵۸۱، مفہوماً

2 .....किताबुल अ़क़ाइद, स. 43।

सुवाल हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यारे ग़ार क्यूं कहा जाता है ?

जवाब जब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा हिजरत फ़रमाई तो रास्ते में ग़ारे सौर में तीन दिन तक आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ क़ियाम फ़रमाया और इसी निस्बत से "यारे ग़ार" कहलाए।

सुवाल हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क्या रिश्ता है ?

जवाब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मुतह्हरा उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिद हैं।(1)

सुवाल ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से दूसरे ख़लीफ़ा कौन हैं, इन के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मर्तबा है और वोह बाक़ी सब से अफ़्ज़ल हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नामे नामी उ़मर बिन ख़त्ताब, लक़ब फ़ारूक़, कुन्यत अबू ह़फ़्स है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नुबुव्वत के छटे साल चालीस मर्दों और ग्यारह औरतों के बा'द ईमान लाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस्लाम लाने के दिन से इस्लाम का ग़लबा शुरूअ़ हुवा। सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही का लक़ब अमीरुल मोमिनीन हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रंग सफ़ेद सुर्ख़ी माइल, दराज़ क़द, चश्म मुबारक सुर्ख़ थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में बहुत फ़ुतूहा़त हुईं।(2)

1.....अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल और दीगर मा'लूमात हासिल करने के लिये किताब "फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

2.....किताबुल अ़क़ाइद, स. 44।

सुवाल क्या ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की कोई करामात भी मश्हूर हैं ?

जवाब जी हां ! आप की बहुत सी करामात मश्हूर हैं जैसे आप का हज़ारों मील दूर मौजूद इस्लामी फ़ौज के सिपह सालार ह़ज़रते सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को आवाज़ देना और उन का सुन लेना, दरयाए नील का आप के ख़त़ डालने से जारी हो जाना वग़ैरा।

सुवाल ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क्या रिश्ता है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की साहि़बज़ादी ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मोह़तरमा थीं।

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की कब और कैसे शहादत हुई ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه मदीनए त़य्यिबा में आख़िर ज़िल ह़िज्जा 23 हिजरी में साढ़े दस साल ख़िलाफ़त कर के तिरसठ साल की उ़म्र में एक मजूसी ग़ुलाम अबू लुअ लुअ फ़ीरोज़ के हाथों शहीद हुवे।(1)

सुवाल कौन से दो सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के मज़ारात हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ार मुबारक के बराबर में सुन्हरी जालियों के अन्दर हैं ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के। और क़ियामत के क़रीब ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाएंगे और बा'दे वफ़ात इसी रौज़ए अन्वर में मदफ़ून होंगे।

1.....फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ज़ाइल और दीगर मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दो जिल्दों पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ख़लीफ़ा कौन हैं, इन के कुछ हालात बयान कीजिये ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ख़लीफ़ए सिवुम हज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मर्तबा है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्मे मुबारक उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रंग गोरा, जिल्द नाज़ुक, चेहरा ह़सीन, सीना चौड़ा और दाढ़ी बड़ी थी । आप यकुम मुह़र्रम 24 हिजरी को ख़लीफ़ा बनाए गए ।[1]

सुवाल हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़नी क्यूं मश्हूर हुवे ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत मालदार थे और हमेशा अपना माल ख़िदमते इस्लाम में ख़र्च करते रहते थे ।

सुवाल हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ुन्नूरैन क्यूं कहा जाता है ?

जवाब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादियां ह़ज़रते रुक़य्या व ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) यके बा'द दीगरे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निकाह़ में आईं इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ुन्नूरैन या'नी दो नूरों वाला कहते हैं ।

सुवाल हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात कैसे हुई ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़रीब बारह साल ख़िलाफ़त फ़रमा कर मदीनए त़य्यिबा में बयासी साल की उ़म्र में 18 ज़ुल हिज्जा 35 हिजरी में सिबाई बाग़ियों के हाथों शहीद हुवे जो अ़ब्दुल्लाह बिन सिबा यहूदी मुनाफ़िक़ के पैरूकार थे ।

सुवाल नौ उ़म्रों में से सब से पहले किस ने इस्लाम क़बूल किया ?

---

1 .....किताबुल अ़क़ाइद, स. 44 ।

जवाब नौ उ़म्रों में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से पहले इस्लाम लाए। इस्लाम लाने के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र शरीफ़ पन्दरह या सोलह साल या इस से कुछ कम व ज़ियादा थी।

सुवाल मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा कौन हैं, इन के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब ख़लीफ़ए चहारुम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। आप का इस्मे मुबारक अ़ली और कुन्यत अबुल ह़सन और अबू तुराब है। आप का रंग गन्दुमी, आंखें बड़ी, क़द मुबारक ग़ैर त़वील, दाढ़ी चौड़ी और सफ़ेद थी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के दिन ख़लीफ़ा बनाए गए।(1)

सुवाल ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का लक़ब क्या है ?

जवाब असदुल्लाह या'नी **अल्लाह** का शेर।

सुवाल ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क्या रिश्ता है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहि़बज़ादी ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा थीं।

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात कब हुई ?

जवाब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ 21 रमज़ान 40 हिजरी को चार साल नौ महीने और चन्द रोज़ ख़िलाफ़त फ़रमा कर तिरसठ साल की उ़म्र में एक ख़ारिजी अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने मुल्जिम के हाथों कूफ़ा में शहीद हुवे।

❁❁❁❁

1.....किताबुल अ़क़ाइद, स. 45।

अ़शरए मुबश्शरा

सुवाल अ़शरए मुबश्शरा किसे कहते हैं ?

जवाब हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वोह दस अस्ह़ाब जिन के जन्नती होने की दुन्या में ख़बर दे दी गई उन्हें "अ़शरए मुबश्शरा" कहते हैं।

सुवाल येह दस सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कौन हैं ?

जवाब इन में चार तो येही ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم या'नी ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर, ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم) हैं इन के इ़लावा बाक़ी ह़ज़रात के अस्माए गिरामी येह हैं : ह़ज़रते त़ल्ह़ा, ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद, ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)

सुवाल क्या अ़शरए मुबश्शरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم) के इ़लावा भी किसी को जन्नत की बिशारत दी गई है ?

जवाब जी हां ! अह़ादीसे मुबारका में बा'ज़ और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को भी जन्नत की बिशारत दी गई है चुनान्चे, ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के ह़क़ में वारिद है कि वोह जन्नत की बीबियों की सरदार हैं और ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के ह़क़ में वारिद है कि वोह जन्नत के जवानों के सरदार हैं, इसी त़रह़ अस्ह़ाबे बद्र और अस्ह़ाबे बैअ़तुर्रिज़्वान के ह़क़ में भी जन्नत की बिशारतें हैं और उ़मूमी त़ौर पर तमाम सह़ाबा से ही जन्नत का वा'दा किया गया है।

सुवाल अस्ह़ाबे बद्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم से कौन मुराद हैं ?

जवाब वोह सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم जो 2 हिजरी में बद्र के मक़ाम पर कुफ़्फ़ारे मक्का के ख़िलाफ़ इस्लाम की सब से पहली लड़ाई में शरीक हुवे "अस्हा़बे बद्र" कहलाते हैं, इन की ता'दाद 313 थी।

सुवाल अस्हा़बे बैअ़ते रिज़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم कौन हैं ?

जवाब इन से मुराद वोह सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हैं जिन्हों ने 6 हिजरी में हुदैबिय्या के मक़ाम पर आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर कुफ़्फ़ारे मक्का के ख़िलाफ़ मर मिटने के लिये बैअ़त की और **अल्लाह** तआ़ला ने इस पर उन्हें अपनी रिज़ा की ख़ुशख़बरी दी, उन की ता'दाद 1400 थी।

इमामत का बयान

सुवाल इमामत की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब इमामत की दो क़िस्में हैं :

(1).....इमामते सुग़रा, इस से मुराद इमामते नमाज़ है।

(2).....इमामते कुब्रा, इस से मुराद हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नियाबते मुत़लक़ा है कि मुसलमानों के तमाम दीनी व दुन्यवी उमूर में शरीअ़त के मुत़ाबिक़ तसर्रुफ़े आ़म का इख़्तियार रखे जैसे ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की ख़िलाफ़त और यहां इसी इमामते कुब्रा का बयान है।

सुवाल एक इमाम में किन किन शराइत़ का पाया जाना ज़रूरी है ?

जवाब इमाम के लिये ज़रूरी है कि वोह ज़ाहिर हो। इमाम क़ुरैशी, मुसलमान, मर्द, आज़ाद, आ़क़िल, बालिग़ और अपनी राए, तदबीर और शौकत व क़ुव्वत से मुसलमानों के उमूर में तसर्रुफ़ या'नी तब्दीली कर सकता हो या'नी

साहि़बे सियासत हो । अपने इ़ल्म, अ़द्ल और शुजाअ़त व बहादुरी से अह़काम नाफ़िज़ करने और दारुल इस्लाम की सरह़दों की ह़िफ़ाज़त और ज़ालिम व मज़्लूम के इन्साफ़ पर क़ादिर हो ।

सुवाल इमाम के लिये ज़ाहिर होना क्यूं ज़रूरी है ?

जवाब इस लिये कि अगर इमाम लोगों से पोशीदा होगा तो वोह काम अन्जाम न दे सकेगा जिन के लिये इमाम की ज़रूरत है ।

सुवाल क्या क़ुरैश के इ़लावा किसी क़बीले से इमाम हो सकता है ?

जवाब क़ुरैशी के इ़लावा किसी की इमामत जाइज़ नहीं ।

सुवाल एक इमाम के ज़िम्मे क्या क्या चीज़ें लाज़िम हैं ?

जवाब मुसलमानों के लिये एक ऐसा इमाम ज़रूरी है जो इन में शरअ़ के अह़काम जारी करे, ह़दें क़ाइम करे, लश्कर तरतीब दे, सदक़ात वुसूल करे, चोरों, लुटेरों, ह़म्ला आवरों को मग़्लूब करे, जुमुआ़ व ईदैन क़ाइम करे, मुसलमानों के झगड़े काटे, ह़ुक़ूक़ पर जो गवाहियां क़ाइम हों वोह क़बूल करे, उन बेकस यतीमों के निकाह़ करे जिन के वली न रहे हों और उन के सिवा वोह काम अन्जाम दे जिन को हर एक आदमी अन्जाम नहीं दे सकता ।

सुवाल इमाम की इत़ाअ़त के बारे में क्या ह़ुक्म है ?

जवाब इमाम की इत़ाअ़त मुत़लक़न हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है जब कि उस का ह़ुक्म शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हो, ख़िलाफ़े शरीअ़त में किसी की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं ।(1)

सुवाल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बारे में एक मुसलमान को कैसा अ़क़ीदा रखना चाहिये ?

(1).....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 240

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم मुत्तक़ी व परहेज़गार हैं इन का ज़िक्र अदब, मह़ब्बत और तौक़ीर के साथ लाज़िम है, तमाम सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم जन्नती हैं, रोज़े मह़शर फ़िरिश्ते उन का इस्तिक़्बाल करेंगे।

सुवाल किसी सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बारे में ज़बान दराज़ी करने के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब किसी सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से बद अ़क़ीदगी या किसी की शान में बदगोई करना इन्तिहाई दरजे की बद नसीबी और गुमराही है। वोह फ़िर्क़ा निहायत बद बख़्त और बद दीन है जो सह़ाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم पर ला'न त़ा'न या'नी बुरा भला कहने को अपना मज़हब बनाए उन की दुश्मनी को सवाब का ज़रीआ़ समझे। सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم की बड़ी शान है, उन की तक्लीफ़ से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा होती है।

सुवाल सह़ाबी किसे कहते हैं ?

जवाब जिस ने ईमान की ह़ालत में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा हो और ईमान ही की ह़ालत में उस का इन्तिक़ाल हुवा हो वोह सह़ाबी है।

सुवाल क्या कोई मुसलमान इ़बादत व रियाज़त कर के किसी सह़ाबी के मर्तबे को पहुंच सकता है ?

जवाब कोई वली, कोई ग़ौस, कोई क़ुत़ुब चाहे कितनी ही इ़बादत कर ले मर्तबे में किसी सह़ाबी के बराबर नहीं हो सकता।

❁❁❁❁

औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰه

सुवाल औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰه किसे कहते हैं ?

जवाब **अल्लाह** के वोह मक़्बूल बन्दे जो उस की ज़ात व सिफ़ात की

मा'रिफ़त रखते हों, उस की इताअ़त व इबादत के पाबन्द रहें, गुनाहों से बचें, उन्हें अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से अपना कुर्बे ख़ास अ़ता फ़रमाए उन को "औलियाउल्लाह" कहते हैं।

सुवाल विलायत कैसे हासिल हो सकती है ?

जवाब विलायत या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब व मक़्बूल बन्दा होना महूज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़तिय्या है जो कि मौला करीम عَزَّوَجَلَّ अपने बरगुज़ीदा बन्दों को अपने फ़ज़्लो करम से नवाज़ता है। हां इबादत व रियाज़त भी कभी कभी इस का ज़रीआ़ बन जाती है और बा'ज़ों को इब्तिदाअन भी मिल जाती है।

सुवाल क्या बे इल्म भी वली बन सकता है ?

जवाब नहीं, विलायत बे इल्म को नहीं मिलती। वली के लिये इल्म ज़रूरी है ख़्वाह ज़ाहिर हासिल करे या उस मर्तबे तक पहुंचने से पहले ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का सीना खोल दे और वोह आ़लिम बन जाए।

सुवाल अगर कोई शख़्स शरीअ़त पर अ़मल न करे तो क्या वोह वली बन सकता है ?

जवाब जब तक अ़क़्ल सलामत है कोई कैसे ही बड़े मर्तबे का हो अह़कामे शरीअ़त की पाबन्दी से हरगिज़ आज़ाद नहीं हो सकता और जो ख़ुद को शरीअ़त से आज़ाद समझे वली नहीं।

सुवाल जो ऐसे शख़्स को वली समझे, उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब वोह गुमराह है।

सुवाल औलियाए किराम क्या कुछ कर सकते हैं ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से औलियाए किराम बहुत कुछ कर सकते हैं, उन से अ़जीबो ग़रीब करामतें ज़ाहिर होती हैं मसलन आन की आन में

मशरिक़ से मग़रिब में पहुंच जाना, पानी पर चलना, हवा में उड़ना, जमादात या'नी बे जान चीज़ों और हैवानात से कलाम करना, बलाओं और मुसीबतों को टालना, दूर दराज़ के ह़ालात उन पर ज़ाहिर होना। औलिया की करामतें दर ह़क़ीक़त उन अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात हैं जिन के वोह उम्मती हों।

सुवाल करामत किसे कहते हैं ?

जवाब औलियाउल्लाह से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत ज़ाहिर हो उसे "करामत" कहते हैं।

सुवाल क्या वली वोही है जिस से करामत ज़ाहिर हो ?

जवाब अक्सर औलियाए किराम से करामात ज़ाहिर होती हैं, औलियाए किराम अपनी विलायत और करामात को छुपाते हैं, हां जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हुक्म पाते हैं तो ज़ाहिर कर देते हैं। इस का मत़लब येह हरगिज़ नहीं कि जिस से करामत ज़ाहिर न हो वोह वली ही नहीं।

सुवाल क्या किसी वली से बा'दे विसाल भी करामत ज़ाहिर हो सकती है ?

जवाब जी हां। औलियाए किराम के इन्तिक़ाल के बा'द भी उन की करामात ज़ाहिर होती हैं जिसे हर आंख वाला देखता और मानता है।

सुवाल क्या किसी फ़ासिक़ो फ़ाजिर से भी करामत का ज़ुहूर हो सकता है ?

जवाब जी नहीं।

सुवाल चन्द एक मश्हूर औलियाए किराम के नाम बता दीजिये ?

जवाब हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, ह़ज़रते दाता गंज बख़्श हिजवेरी, ह़ज़रते ख़्वाजा शिहाबुद्दीन सोहरवर्दी, ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान (رَحِمَهُمُ اللّٰه تعالٰی)

सुवाल औलियाए किराम से हमें मिलता क्या है ?

जवाब औलियाउल्लाह की मह़ब्बत दोनों जहानों की सआ़दत और रिज़ाए

इलाही का सबब है। उन की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला मख़्लूक़ की ह़ाजतें पूरी करता है। उन की दुआ़ओं से मख़्लूक़ फ़ाएदा उठाती है। उन के मज़ारों की ज़ियारत, उन के उ़र्सों में शिर्कत से बरकात ह़ासिल होती हैं, उन के वसीले से दुआ़ करना क़बूलिय्यत का ज़रीआ़ है। उन की सीरतों से रहनुमाई ह़ासिल कर के गुमराही से बच कर सिराते़ मुस्तक़ीम पर इस्तिक़ामत के साथ चला जा सकता है उन की पैरवी करने में नजात है।

सुवाल क्या एक मुसलमान के इन्तिक़ाल के बा'द किसी नेक अ़मल से उसे फ़ाएदा पहुंच सकता है ?

जवाब क्यूं नहीं ! मरने के बा'द मुसलमान मुर्दों को सदक़ा, ख़ैरात, तिलावते क़ुरआन शरीफ़, ज़िक्रे इलाही और दुआ़ से फ़ाएदा होता है। इन सब चीज़ों का सवाब पहुंचता है, इसी लिये फ़ातिह़ा और ग्यारहवीं वग़ैरा मुसलमानों में बहुत पहले से राइज है और सह़ीह़ अह़ादीस से येह उमूर साबित हैं, इन चीज़ों का मुन्किर गुमराह है।

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

जन्नत की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने तीन मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जन्नत का सुवाल किया तो जन्नत दुआ़ करती है कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को जन्नत में दाख़िल कर दे और जिस शख़्स ने तीन मरतबा दोज़ख़ से पनाह मांगी तो दोज़ख़ दुआ़ करती है कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को दोज़ख़ से पनाह में रख।

ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة الجنة و نعیمها، ۴/۲۵۷، حدیث:۲۵۸۱

(हिस्सए दुवुम) मा'मूलाते अह्ले सुन्नत

निदाए या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सुवाल क्या हम अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को या रसूलल्लाह, या नबिय्यल्लाह कह कर पुकार सकते हैं, ऐसा करना शिर्क तो नहीं ?

जवाब नबियों के सरवर, मह़बूबे रब्बे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को या रसूलल्लाह, या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वग़ैरा अल्फ़ाज़ व अल्क़ाब के साथ नज़दीक व दूर से पुकारना बिल्कुल जाइज़ है, हरगिज़ शिर्क नहीं ।

सुवाल इस की क्या दलील है ?

जवाब **क़ुरआने मजीद से सुबूत :**

क़ुरआने करीम में बहुत से मक़ामात पर **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को निदा फ़रमाई ।

﴿يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ﴾، ﴿يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ﴾، ﴿يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ﴾، ﴿يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ﴾ वग़ैरा इन तमाम आयात में ह़र्फ़े निदा يَا के साथ हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ख़िताब फ़रमाया है ।

ह़दीसे मुबारका

सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रते सय्यिदुना बरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मदीनए पाक में दाख़िले का मन्ज़र बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : औ़रतें और मर्द घरों की छतों पर चढ़ गए और बच्चे और ग़ुलाम गली कूचों में मुतफ़र्रिक़ हो गए । ना'रे लगाते फिरते थे,

يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، يَا مُحَمَّدُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ (1)

(1)..... صحيح مسلم، كتاب الزهد والرقائق، باب في حديث الهجرة...الخ، ص١٢٠٨، حديث:٢٠٠٩

नमाज़ में हर मुसलमान का अ़मल

हर नमाज़ के तशह्हुद में मुसलमान अत्तहि़य्यात पढ़ते हैं और अत्तहि़य्यात में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारा जाता है बल्कि येह पुकारना वाजिब है।

सुवाल कुरआने मजीद और ह़दीसे पाक में तो रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन की ह़याते ज़ाहिरी में पुकारने का ज़िक्र है, क्या हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस दुन्या से पर्दा फ़रमाने के बा'द भी पुकारना साबित है?

जवाब जी हां ! आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और सलफ़ सालिह़ीन आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारते रहे हैं। इस की सब से बड़ी दलील तो अभी अत्तहि़य्यात के ज़िम्न में नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारने की गुज़र चुकी। नीज़ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में नुबुव्वत के झूटे दा'वेदार मुसैलिमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ मुसलमानों और मुर्तद्दीन के दरमियान जंगे यमामा हुई जिस में मुसलमानों का ना'रा **"या मुह़म्मदाह"** था।(1)

सुवाल क्या बुज़ुर्गाने दीन भी नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारा करते थे?

जवाब जी हां !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का अ़मल

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का पाउं सो गया, किसी ने कहा : उन्हें याद कीजिये जो आप को सब से ज़ियादा मह़बूब हैं। ह़ज़रत

1 ....تاریخ الطبری، ذکر بقیۃ خبر مسیلمۃ الکذاب...الخ، ۲/۲۸۱

ने ब आवाज़े बुलन्द कहा : "**या मुह़म्मदाह**" फ़ौरन पाउं खुल गया।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का अ़मल

शारेहे़ सह़ीह़ मुस्लिम इमाम नववी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने किताबुल अज़्कार में इस की मिस्ल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से नक़्ल फ़रमाया कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पास किसी आदमी का पाउं सो गया तो अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : तू उस शख़्स को याद कर जो तुम्हें सब से ज़ियादा मह़बूब है तो उस ने "**या मुह़म्मदाह**" कहा, अच्छा हो गया।

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "और येह अम्र उन दो सह़ाबियों के सिवा औरों से भी मरवी हुवा। अहले मदीना में क़दीम से इस "**या मुह़म्मदाह**" कहने की आ़दत चली आती है।[2]

फ़ाएदा : अहले सुन्नत व जमाअ़ते अहले ह़क़ का येह अ़क़ीदा है कि अम्बियाए किराम अपने मज़ाराते त़य्यिबा में ज़िन्दा हैं उन्हें रोज़ी दी जाती है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ से भी येह बात साबित है तो सय्यिदुल अम्बिया की ह़यात में फिर कैसे शुबा हो सकता है इस लिह़ाज़ से या रसूलल्लाह कह कर पुकारने के जवाज़ में किसी क़िस्म का शक किया ही नहीं जा सकता है कि **अल्लाह** की अ़त़ा से ज़िन्दा भी हैं और फ़रयाद करने वाले की फ़रयाद सुनते भी हैं और **अल्लाह** की अ़त़ा से मदद करने पर क़ादिर भी हैं तो इन तमाम बातों में से कोई बात ख़िलाफ़े शरअ़ नहीं सब जाइज़ व दुरुस्त और उ़लमाए ह़क़ की तसरीह़ात से इन का जवाज़ साबित है बा'ज़ इन्कार करने

1 ....الشفاء،فصل فیما روی عن السلف والأئمة (من محبتهم للنبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم وشوقهم له)، جزء۲، ص۲۳

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 29 / 552 ।

वाले इस अ़क़ीदए ह़क़्क़ा साबिता से ग़ाफ़िल होने की बिना पर भी इन्कार करते हैं और बा'ज़ जानते बूझते इनादन इन्कार करते हैं और फ़ज़ाइले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से चिड़ते हैं **अल्लाह** तआ़ला ऐसों को हिदायत नसीब फ़रमाए।

❁❁❁❁

इस्तिम्दाद व इस्तिआ़नत

सुवाल इस्तिम्दाद व इस्तिआ़नत से क्या मुराद है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ह़क़ीक़ी मददगार जानते हुवे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से मदद मांगना "इस्तिम्दाद" कहलाता है और "इस्तिआ़नत" का भी येही मत़लब है।

सुवाल क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से मदद मांगी जा सकती है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से मदद मांगना बिलाशुबा जाइज़ है जब कि अ़क़ीदा येह हो कि ह़क़ीक़ी इमदाद तो रब तआ़ला ही की है और येह सब ह़ज़रात उस की दी हुई क़ुदरत से मदद करते हैं क्यूंकि हर शै का ह़क़ीक़ी मालिको मुख़्तार सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला ही है और **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा के बिग़ैर कोई मख़्लूक़ किसी ज़र्रे की भी मालिको मुख़्तार नहीं होती। **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी ख़ास अ़त़ा और फ़ज़्ले अ़ज़ीम से अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कौनैन का ह़ाकिम व मुख़्तार बनाया है और ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बियाए किराम व औलियाए इ़ज़ाम **अल्लाह** तआ़ला की अ़त़ा से (या'नी उस की दी हुई क़ुदरत से) मदद फ़रमा सकते हैं।

सुवाल इस की क्या दलील है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला की अ़ता से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलिया इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰه تعالٰی मदद फ़रमाते हैं और येह क़ुरआनो ह़दीस से साबित है जैसा कि सूरतुत्तह़रीम पारह 28 की आयत 4 में **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान है :

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِيْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ﴿۴﴾

(پ۲۸، التحریم:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो बेशक **अल्लाह** उन का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले और उस के बा'द फ़िरिश्ते मदद पर हैं।*

ह़दीस शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जब तुम में से किसी की कोई चीज़ गुम हो जाए और मदद चाहे और ऐसी जगह हो जहां कोई हमदम नहीं तो उसे चाहिये यूं पुकारे : ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! मेरी मदद करो, ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! मेरी मदद करो, कि **अल्लाह** के कुछ बन्दे हैं जिन्हें येह नहीं देखता।"(1)

सुवाल क्या अम्बियाए किराम और औलियाउल्लाह से उन की वफ़ात के बा'द भी मदद मांगी जा सकती है ?

जवाब जी हां ! जिस त़रह़ ज़िन्दगी में उन से तवस्सुल करना और मदद मांगना जाइज़ है इसी त़रह़ उन के विसाल के बा'द भी जाइज़ है। **अल्लाह** तआ़ला के प्यारे नबी और वली अपनी क़ुबूर में ज़िन्दा होते हैं।

सुवाल मदद फ़रमाने के सुबूत में कोई वाक़िआ़ हो तो बयान करें ?

जवाब इस पर एक नहीं बल्कि बे शुमार वाक़िआ़त ज़िक्र किये जा सकते हैं, यहां एक वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे,

(1) ....معجم کبیر، ۱۵/۱۱۷، حدیث:۲۹۰

इमाम त़बरानी, अ़ल्लामा इब्नुल मुक़री और इमाम अबुश्शैख़। येह तीनों ह़दीस के बहुत बड़े इमाम गुज़रे हैं और येह तीनों एक ही ज़माने में मदीनए मुनव्वरा की एक दर्सगाह में ह़दीस का इ़ल्म ह़ासिल करते थे, एक बार इन तीनों त़लबाए इ़ल्मे ह़दीस पर एक वक़्त ऐसा गुज़रा कि इन के पास खाने को कुछ नहीं था, रोज़े पर रोज़े रखते रहे, मगर जब भूक से निढाल हो गए और हिम्मत जवाब दे गई तो तीनों ने रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अत़हर पर ह़ाज़िर हो कर फ़रयाद की : या रसूलल्लाह ! हम लोग भूक से बेताब हैं। येह अ़र्ज़ कर के इमाम त़बरानी तो आस्तानए मुबारका ही पर बैठे रहे और कहा : इस दर पर मौत आएगी या रोज़ी, अब यहां से नहीं उठूंगा। इमाम अबुश्शैख़ और इब्नुल मुक़री अपनी क़ियाम गाह पर लौट आए, थोड़ी देर बा'द किसी ने दरवाज़ा खट खटाया, दोनों ने दरवाज़ा खोल कर देखा तो अ़लवी ख़ानदान के एक बुज़ुर्ग दो ग़ुलामों के साथ खाना ले कर तशरीफ़ फ़रमा हैं और येह फ़रमा रहे हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अभी अभी मुझे ख़्वाब में अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमा कर हुक्म फ़रमाया कि मैं आप लोगों के पास खाना पहुंचा दूं चुनान्चे, जो कुछ मुझ से फ़िल वक़्त हो सका ह़ाज़िर है।[1]

तवस्सुल करना

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से तवस्सुल का क्या मत़लब है ?

जवाब इन से तवस्सुल का मत़लब येह है कि ह़ाजतों के बर आने और मत़ालिब के ह़ासिल होने के लिये इन मह़बूब हस्तियों को **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में वसीला और वासित़ा बनाया जाए क्यूंकि इन्हें

1 ....تذكرةُ الحفّاظ، رقم: ٩١٣، ٣/١٢١، ملخصاً

अल्लाह तआ़ला की बारगाह में हमारी निस्बत ज़ियादा क़ुर्ब ह़ासिल है, **अल्लाह** तआ़ला इन की दुआ़ पूरी फ़रमाता है और इन की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाता है।

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से तवस्सुल का क्या हुक्म है ?

जवाब दुन्यावी और उख़रवी ह़ाजतों को पूरा करने के लिये **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में इन से तवस्सुल शरअ़न जाइज़ है।

सुवाल तवस्सुल करना या'नी वसीला बनाने का क्या सुबूत है ?

जवाब वसीला बनाना क़ुरआनो सुन्नत और सलफ़ सालिह़ीन के अ़मल से साबित है, चुनान्चे,

आयते मुबारका : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ (پ٦، المائدة:٣٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो।*

ह़दीसे पाक : सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद एक नाबीना शख़्स को एक दुआ़ के ज़रीए़ वसीले की ता'लीम इरशाद फ़रमाई, चुनान्चे, तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है : एक नाबीना बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ की, कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ करें कि वोह मुझे आंख वाला कर दे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तू चाहे तो मैं तेरे लिये दुआ़ करूं और अगर तू चाहे तो सब्र कर कि वोह तेरे लिये बेहतर है। अ़र्ज़ की, कि दुआ़ फ़रमाएं, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे हुक्म दिया कि अच्छा वुज़ू करो, दो रकअ़त नमाज़ पढ़ो और येह दुआ़ करो : ऐ **अल्लाह**

मैं तुझ से मांगता हूं और तेरी त़रफ़ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से तवज्जोह करता हूं जो नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप के वसीले से अपने रब की त़रफ़ अपनी इस ह़ाजत में तवज्जोह करता हूं तू इसे पूरी फ़रमा दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे बारे में हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा[1] (रावी बयान फ़रमाते हैं) कि वोह शख़्स जब आप के फ़रमाने के मुत़ाबिक़ दुआ़ कर के खड़ा हुवा वोह आंख वाला हो गया।[2]

सुवाल क्या दुन्या से रिह़्लत कर जाने वालों से तवस्सुल जाइज़ है ?

जवाब उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला की मह़बूब हस्तियों से तवस्सुल जाइज़ है ख़्वाह वोह दुन्यावी ज़िन्दगी में हों या बरज़ख़ी ज़िन्दगी की त़रफ़ मुन्तक़िल हो चुके हों।

सुवाल इस की क्या दलील है कि वफ़ात के बा'द भी किसी नबी या वली को वसीला बनाना जाइज़ है ?

जवाब इस के सुबूत में कई रिवायात पेश की जा सकती हैं, ऊपर नाबीना के तवस्सुल करने के बारे में जो ह़दीस बयान की गई है इस के बारे में ह़दीस की मुस्तनद किताबों में है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस दुन्या से विसाले ज़ाहिरी फ़रमाने के बा'द भी लोगों को इस पर अ़मल की ता'लीम दिया करते थे।[3]

इसी त़रह़ मिश्कात बाबुल करामात में ह़ज़रते अबुल जौज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से, फ़रमाते हैं कि मदीने के लोग सख़्त क़ह़त़ में मुब्तला हो गए तो उन्हों ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से शिकायत की, उन्हों ने फ़रमाया कि नबिय्ये

1 .... ترمذی، احادیث شتی، باب۱۱۸، ۵/۳۳۶، حدیث:۳۵۸۹

2 .... معجم کبیر، ۹/۳۱، حدیث:۸۳۱۱

3 .... مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الحاجۃ، ۲/۵۱۵، حدیث:۳۶۶۸

करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्र की त़रफ़ ग़ौर करो उस से एक त़ाक़ आस्मान की त़रफ़ बना दो ह़त्ता कि क़ब्रे अन्वर और आस्मान के दरमियान छत न रहे तो लोगों ने ऐसा किया तो ख़ूब बरसाए गए ह़त्ता कि चारा उग गया और ऊंट मोटे हो गए ह़त्ता कि चर्बी से गोया कि फट पड़े तो उस साल का नाम फटन का साल रखा गया।"(1)

सुवाल : क्या तवस्सुल के ह़वाले से अइम्मए मुज्तहिदीन के वाक़िआ़त भी मिलते हैं ?

जवाब : जी हां ! अइम्मए अरबआ़ व दीगर फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى भी बारगाहे इलाही में वसीला पेश करते रहे हैं :

इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का अ़मल : इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने मश्हूर क़सीदए नो'मानिय्या में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में यूं अ़र्ज़ करते हैं :

اَنْتَ الَّذِیْ لَمَّا تَوَسَّلَ بِكَ اٰدَمُ   مِنْ زَلَّةٍ فَازَ وَهُوَ اَبَاكَا

या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही वोह हैं जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने आप को वसीला बनाया तो वोह कामयाब हुवे क़बूलिय्यते दुआ़ से ह़ालांकि वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिद थे।

इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का अ़मल : इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में वसीला पेश करने के क़ाइल थे, चुनान्चे, ख़त़ीबे बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से तवस्सुल करते, उन की क़ब्र पर ह़ाज़िर हो कर ज़ियारत करते, फिर अपनी ह़ाजत पूरी होने के लिये **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में उन्हें वसीला बनाते।(2)

❁❁❁❁

1 .... دارمی، مقدمة، باب ما أكرم الله تعالٰی نبیه بعد موته، ۱/۵٦، حدیث: ۹۲، مشکوة المصابیح، ۲/۴۰۰، حدیث: ۵۹۵۰

2 .... تاریخ بغداد، باب ما ذکر فی مقابر بغداد المخصوصة، ۱/۱۳۵

ईसाले सवाब

सुवाल ईसाले सवाब किसे कहते हैं ?

जवाब अपने किसी नेक अ़मल का सवाब किसी दूसरे मुसलमान को पहुंचाना "ईसाले सवाब" कहलाता है।

सुवाल क्या ईसाले सवाब करना जाइज़ है ?

जवाब शरीअ़ते मुत़ह्हरा में अपने किसी भी नेक अ़मल का सवाब किसी फ़ौतशुदा या ज़िन्दा मुसलमान को ईसाल करना जाइज़ व मुस्तह़सन है।

सुवाल क्या इस के बारे में अह़ादीस भी हैं ?

जवाब जी हां ! ईसाले सवाब के सुबूत में अह़ादीसे मुबारका मौजूद हैं।

ह़दीस 1 : ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि मेरी वालिदा का अचानक इन्तिक़ाल हो गया और मेरा गुमान है कि अगर वोह कुछ कहतीं तो सदक़े का कहतीं पस अगर मैं उन की त़रफ़ से सदक़ा करूं तो क्या उन्हें सवाब पहुंचेगा ? फ़रमाया : "हां।"(1)

ह़दीस 2 : ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि उन्हों ने हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी मां का इन्तिक़ाल हो गया है, उन के लिये कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "पानी" तो ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक कुंवां खुदवाया और कहा कि येह कुंवां सा'द की मां के लिये है(2) या'नी इस का सवाब उन की रूह़ को मिले।

1 ....صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب موت الفجاۃ البغتۃ، ۱/۴۶۸، حدیث:۱۳۸۸

2 ....ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، ۲/۱۸۰، حدیث:۱۶۸۱

सुवाल किस किस चीज़ का सवाब बख़्शा जा सकता है ?

जवाब इन्सान अपने किसी भी नेक अ़मल का सवाब किसी दूसरे शख़्स को पहुंचा सकता है जैसे नमाज़, रोज़ा, सदक़ा व ख़ैरात वग़ैरा।

सुवाल क्या ज़िन्दों को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं ?

जवाब जी हां ! कर सकते हैं।

सुवाल क्या इस से मुर्दों को फ़ाएदा पहुंचता है ?

जवाब जी हां ! इस से नेक लोगों के दरजात बुलन्द होते हैं, गुनाहगारों के गुनाह मुआ़फ़ होते हैं और अह्ले क़ब्र सख़्ती या अ़ज़ाब में मुब्तला हों तो नजात मिल जाती है या इस में तख़्फ़ीफ़ हो जाती है और येह सब **अल्लाह** तआ़ला के चाहने से होता है।

सुवाल क्या ईसाले सवाब करने वाले को भी कुछ मिलता है ?

जवाब ईसाले सवाब करने वाला भी अज्रो सवाब से मह़रूम नहीं रहता उस के अ़मल का अज्र उस के लिये भी बाक़ी रहता है बल्कि उन सब की गिनती के बराबर नेकियां मिलती हैं जिन को उस ने ईसाले सवाब किया होता है।

सुवाल ईसाले सवाब के बारे में कोई वाक़िआ़ भी पेश फ़रमा दीजिये ?

जवाब शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जो कि नज़्रो नियाज़, चालीसवां, तीजा, दसवां ईसाले सवाब के क़ाइल थे, लिखते हैं "शाह अ़ब्दुर्रह़ीम साह़िब फ़रमाते हैं कि ह़ज़रत रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यौमे विसाल में उन के पास नियाज़ देने के लिये कोई चीज़ मुयस्सर न थी। आख़िरे कार कुछ भुने हुवे चने और गुड़ पर नियाज़ दी। रात मैं ने देखा कि नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास अन्वाओ़ अक़्साम के खाने ह़ाज़िर हैं और इन में वोह गुड़ और चने भी हैं, आप ने कमाले मुसर्रत व इल्तिफ़ात फ़रमाया

और उन्हें त़लब फ़रमाया और कुछ आप ने तनावुल फ़रमाया और कुछ आप ने अस्ह़ाब में तक़्सीम कर दिया।(1)

सुवाल क्या ईसाले सवाब किसी मुक़र्ररा दिन ही करना चाहिये या किसी भी दिन हो सकता है ?

जवाब ईसाले सवाब के लिये न किसी वक़्त को मुअ़य्यन करना ज़रूरी है न किसी अ़मल को। बिग़ैर किसी क़ैद के जब भी चाहें, कोई नेक अ़मल कर के मय्यित को ईसाले सवाब कर सकते हैं, चाहे कोई सदक़ा करे या मद्रसा व मस्जिद बना दे, मय्यित की त़रफ़ से ह़ज करे, क़ुरआने पाक की तिलावत कर के सवाब पहुंचाए येही काम किसी दिन को मुअ़य्यन कर के किये जाएं इस में भी ह़रज नहीं कि दिन मुअ़य्यन करने से मक़्सूद येह होता है कि लोग जम्अ़ हो जाएं और एहतिमाम के साथ अ़मले ख़ैर किया जाए ता'यीन शरअ़न मन्अ़ नहीं है जैसा कि नमाज़े बा जमाअ़त में लोगों की आसानी के लिये एक वक़्त मुक़र्रर कर देना, किसी दीनी इजतिमाअ़ मह़ाफ़िल या शादी बियाह वग़ैरा के लिये दिन व तारीख़ मुअ़य्यन कर देना जाइज़ है। हां अलबत्ता इसी ता'यीन को ज़रूरी समझना कि इस के बिग़ैर ईसाले सवाब न होगा येह दुरुस्त नहीं जाहिलाना ख़याल है इस से बाज़ रहना ज़रूरी है।

सुवाल तीजा, दसवां, चालीसवां क्या हैं ?

जवाब फ़ौतशुदा मुसलमानों के ईसाले सवाब के लिये उ़मूमन क़ुरआन ख़्वानी और मह़फ़िले ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम किया जाता है नीज़ खाना वग़ैरा भी पका कर तक़्सीम किया जाता है, अगर इस त़रह़ का एहतिमाम फ़ौत होने के दूसरे रोज़ हो तो उसे दूजा, तीसरे रोज़ हो तो तीजा, दसवें रोज़ हो तो दसवां, चालीसवें रोज़ हो तो चालीसवां या चहलुम और साल के बा'द हो तो बरसी कहते हैं एक दो दिन आगे पीछे भी हो जाएं तो दसवां बीसवां या चालीसवां ही कहलाता है।

1 ....انفاس العارفین، ص ٧٦

सुवाल ईसाले सवाब का खाना कौन कौन खा सकता है ?

जवाब ईसाले सवाब का खाना ख़ुद भी खा सकते हैं और अपने अ़ज़ीज़ो अक़रबा व अह़िब्बा, अग़निया व फ़ुक़रा सब को खिला सकते हैं।

सुवाल क्या फ़ातिह़ा में खाने का सामने होना ज़रूरी है ?

जवाब खाने का सामने होना ज़रूरी नहीं। सामने खाना रखे बिग़ैर भी फ़ातिह़ा पढ़ी जा सकती है लेकिन खाने का सामने होना मन्अ़ भी नहीं, मा'मूल है और पढ़ कर इस पर दम भी किया जाता है जिस से वोह बा बरकत हो जाता है, इस में ह़रज नहीं।

सुवाल मुह़र्रमुल ह़राम में पानी या शरबत की सबील लगाना कैसा है ?

जवाब पानी या शरबत की सबील लगाना जब कि निय्यत अच्छी हो और मक़्सूद ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और अरवाहे़ त़य्यिबा अइम्मए अत़हार को सवाब पहुंचाना हो तो बिलाशुबा बेहतर व मुस्तह़ब व कारे सवाब है। ह़दीस में है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब तेरे गुनाह ज़ियादा हो जाएं तो पानी पर पानी पिला, तो तेरे गुनाह इस त़रह़ झड़ जाएंगे जैसे सख़्त आंधी में पेड़ के पत्ते झड़ जाते हैं।(1)

सुवाल क्या ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ करना जाइज़ है ?

जवाब ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ दिलाना जाइज़ है। येह हम ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में ईसाले सवाब करने के लिये करते हैं और येह अ़मल जाइज़ व मुस्तह़सन और बाइ़से अज्रो सवाब है बुज़ुर्गों से निस्बत व मह़ब्बत की अ़लामत है जो सआ़दत मन्दी की दलील है।

(1) ...تاریخ بغداد، ۲/۴۰۰، رقم: ۳۴۶۴

सुवाल रजबुल मुरज्जब में कूंडों की नियाज़ दिलवाने का रवाज है, क्या येह जाइज़ है ?

जवाब जी हां ! बाईस रजबुल मुरज्जब में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते जलाल बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के ईसाले सवाब के लिये नियाज़ की जाती है जिस में चावल, खीर या पूरियां वग़ैरा पका कर इन के कूंडे भरते हैं, फिर इन पर ख़त्म दिलवाया जाता है लिहाज़ा इसे कूंडे का ख़त्म या नियाज़ कहते हैं। येह भी ईसाले सवाब की एक सूरत है और ईसाले सवाब करना जाइज़ व मुस्तह़सन है।

सुवाल कूंडों के ख़त्म में कौन सी बातें मन्अ़ हैं ?

जवाब (1).....कूंडों की नियाज़ के मौक़अ़ पर जो कहानी आ़म तौ़र पर सुनाई जाती है वोह मनघड़त है, इस की कोई अस्ल नहीं लिहाज़ा वोह कहानी पढ़ी जाए न सुनी जाए। (2).....बा'ज़ जगह येह क़ैद लगाते हैं कि यहीं खाओ, कहीं और न ले जाओ, येह क़ैद भी बेजा है। इन बातों से इजतिनाब किया जाए। (3) इसी त़रह़ बा'ज़ येह क़ैद लगाते हैं कि मिट्टी के बरतन वग़ैरा में कूंडे की नियाज़ ज़रूरी है, येह क़ैद भी ज़रूरी नहीं।

सुवाल ईसाले सवाब करने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब आज कल मुसलमानों में ख़ुसूसन खाने पर ईसाले सवाब या'नी फ़ातिह़ा का जो त़रीक़ा राइज है वोह भी बहुत अच्छा है, जिन खानों का ईसाले सवाब करना है वोह सारे खाने या सब में से थोड़ा थोड़ा नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब को सामने रख लें अब اَعُوْذُ और بِسْمِ اللّٰہِ शरीफ़ पढ़ कर قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ एक बार, قُلْ هُوَ اللّٰهُ शरीफ़ तीन बार, सूरए फ़लक़, सूरए नास और सूरए फ़ातिह़ा एक एक बार फिर الٓمّٓ ता مُفْلِحُوْنَ पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़ें :

(१) وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ (پ۲، البقرة:۱۶۳)

(۲) اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ (پ۸، الأعراف:۵۶)

(۳) وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (پ۱۷، الأنبياء:۱۰۷)

(۴) مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا (پ۲۲، الأحزاب:۴۰)

(۵) اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا (پ۲۲، الأحزاب:۵۶)

अब दुरूद शरीफ़ के बा'द पढ़े :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝۱۸۰ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۝۱۸۱ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۸۰تا۱۸۲)

फिर ईसाले सवाब करे ।

किसी बुज़ुर्ग का उ़र्स मनाना

सुवाल उ़र्स किसे कहते हैं ?

जवाब किसी बुज़ुर्ग की याद मनाने के लिये और इन को ईसाले सवाब करने के लिये इन के मुहिब्बीन व मुरीदीन वग़ैरा का इन की यौमे वफ़ात पर सालाना इजतिमाअ़ "उ़र्स" कहलाता है ।

सुवाल किसी बुज़ुर्ग का उ़र्स मनाना कैसा ?

जवाब बुज़ुर्गाने दीन औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का उ़र्स मनाने से मक़्सूद उन की याद मनाना और उन को ईसाले सवाब करना होता है इस लिये उन के उ़र्स का इन्एक़ाद करना शरअ़न जाइज़ व मुस्तह़सन और अज्रो सवाब का ज़रीआ़ है ।

सुवाल इस के जाइज़ होने की क्या दलील है ?

जवाब बुज़ुर्गाने दीन के आ'रास में ज़िक्रुल्लाह, ना'त ख़्वानी और क़ुरआने पाक की तिलावत और इस के इ़लावा दीगर नेक काम कर के उन को ईसाले सवाब किया जाता है और ईसाले सवाब के जाइज़ और मुस्तह़्सन होने के दलाइल ऊपर ज़िक्र किये जा चुके हैं।

सुवाल मज़ारात पर ह़ाज़िर होने का क्या सुबूत है ?

जवाब मज़ारात पर ह़ाज़िरी देना ज़मानए क़दीम से मुसलमानों में राइज है बल्कि ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर साल शुहदाए उह़ुद के मज़ारात पर बरकात लुटाने के लिये तशरीफ़ लाते थे। अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं कि इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया है कि हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शुहदाए उह़ुद के मज़ारात पर हर साल के शुरूअ़ में तशरीफ़ ले जाया करते थे।(1)

सुवाल बुज़ुर्गाने दीन के मज़ार पर क्यूं जाते हैं इस ज़िम्न में कोई वाक़िआ़ हो तो वोह भी इरशाद फ़रमा दें ?

जवाब औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के मज़ारात पर जाना बाइ़से बरकत और रफ़्ए़ ह़ाजात का ज़रीआ़ है। इस लिये बुज़ुर्गाने दीन का येह त़रीक़ा रहा है कि वोह औलियाए किराम की क़ुबूर पर जाते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपनी ह़ाजात के लिये दुआ़ करते जैसा कि अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस बारे में मुक़द्दमए रद्दुल मोह़तार में इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से नक़्ल फ़रमाते हैं : "मैं इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से बरकत ह़ासिल करता हूं और उन की क़ब्र पर आता हूं अगर मुझे कोई ह़ाजत दर पेश होती है तो दो रक्अ़त पढ़ता हूं और उन की क़ब्र के पास जा कर

(1) ردالمحتار، كتاب الصلاة، مطلب في زيارة القبور، ۳/۱۷۷

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करता हूं तो जल्द ह़ाजत पूरी हो जाती है।"(1)

सुवाल बा'ज़ लोग कहते हैं कि उ़र्स पर ग़ैर शरई कामों का इर्तिकाब किया जाता है लिहाज़ा वहां जाना और उ़र्स मनाना जाइज़ नहीं, येह कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उ़र्स का मस्अला कुरआनो ह़दीस, सह़ाबए किराम और औलियाए सालिह़ीन के अ़मल से वाज़ेह़ हो चुका है और हमारी मुराद भी वोही उ़र्स हैं जो शरीअ़ते मुत़ह्हरा के मुत़ाबिक़ मनाए जाते हैं। हां ! ग़ैर शरई उमूर तो वोह हर जगह नाजाइज़ हैं और येह नाजाइज़ काम उ़र्स के इ़लावा भी हों तो नाजाइज़ हैं और शरीअ़त के अह़काम की मा'मूली सी समझ बूझ रखने वाला मुसलमान इन्हें जाइज़ नहीं कह सकता, इन ख़ुराफ़ात से दूर रहना चाहिये और ह़त्तल मक्दूर दूसरे मुसलमानों को भी इस से बचाना चाहिये।

सुवाल किसी बुजु़र्ग के नाम का जानवर ज़ब्ह़ करना कैसा ?

जवाब किसी बुजु़र्ग के नाम का जानवर ज़ब्ह़ करने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं जब कि ज़ब्ह़ करते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर ज़ब्ह़ किया जाए। क्यूंकि अगर ज़ब्ह़ के वक़्त **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी दूसरे का नाम लिया तो वोह जानवर ह़राम हो जाएगा लेकिन कोई मुसलमान इस त़रह़ नहीं करता, हमारे यहां लोग उ़मूमन जानवर ख़रीदते या पालते वक़्त कह देते हैं कि येह ग्यारहवीं शरीफ़ का बकरा है या फ़ुलां बुजु़र्ग का बकरा है या गाए है जिसे बा'द में उस मौक़अ़ पर ज़ब्ह़ कर दिया जाता है, और ज़ब्ह़ के वक़्त उस पर **अल्लाह** तआ़ला का नाम ही लिया जाता है और उस ज़ब्ह़ से मक़्सूद उस बुजु़र्ग के लिये ईसाले सवाब ही होता है इस में ह़रज नहीं।

(1) .....ردالمحتار، مقدمة الكتاب، مطلب يجوز تقليد المفضول مع وجود الافضل، ١/١٣٥

पुख़्ता मज़ार और क़ुब्बा बनाना

सुवाल क़ब्रों पर मज़ारात बनाना कैसा है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और मशाइख़ व उ़लमा व औलियाए इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ الرَّحْمَة की क़ब्रों पर मज़ार बनाया जा सकता है शरअ़न इस में कोई ह़रज नहीं । अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़ुरआने करीम की आयत ﴿اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ﴾ (پ۱۰، التوبة:۱۸) के तह़्त फ़रमाते हैं : "उ़लमा और औलियाए सालिह़ीन की क़ब्रों पर इ़मारत बनाना जाइज़ काम है जब कि इस से मक़्सूद हो लोगों की निगाहों में अ़ज़मत पैदा करना कि लोग इस क़ब्र वाले को ह़क़ीर न जानें ।"(1)

अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अगर मय्यित मशाइख़ और उ़लमा और सादाते किराम में से हो तो उस की क़ब्र पर इ़मारत बनाना मकरूह नहीं है ।"(2)

सुवाल क्या येह काम सिर्फ़ पाक व हिन्द में होता है ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पूरी दुन्या में औलियाए किराम के मज़ारात व मक़ाबिर सदियों से मौजूद हैं जो सलफ़ सालिह़ीन के अ़मल पर शाहिद हैं । ख़ुद हमारे प्यारे आक़ा व मौला मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुबारका पर सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद क़ाइम है इस से बढ़ कर जवाज़ की और क्या दलील चाहिये ? उ़लमा व सुलह़ा सदियों से वहां ह़ाज़िर होते हैं और उन के सामने येह गुम्बद बना हुवा है जो बिलाशुबा जवाज़ की दलील है बा'ज़ नादान

1 ..... روح البیان، التوبة، تحت الآیة۱۸، ۳/۴۰۰

2 ..... ردالمحتار، کتاب الصلاة، مطلب فی دفن المیت، ۳/۱۷۰

मुसलमानों के ज़ेह्नों में बद मज़्हब इस ह़वाले से शुब्हात व वसाविस डालने की कोशिश करते हैं **अल्लाह** तआ़ला उन से मुसलमानों को मह़्फ़ूज़ रखे।

सुवाल क्या क़ब्र को पुख़्ता बना सकते हैं ?

जवाब मय्यित के साथ क़ब्र के मुत्तसिल ह़िस्से को पुख़्ता करना मकरूह है। अगर क़ब्र बाहर से पुख़्ता और अन्दर से कच्ची हो तो इस में ह़रज नहीं।

सुवाल क्या क़ब्र पर निशानी के लिये कतबा या पथ्थर वग़ैरा लगा सकते हैं ?

जवाब मुसलमानों का अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब की क़ब्रों पर निशानी व पहचान के लिये कतबा लगाना जाइज़ है।

ह़दीसे मुबारक : अबू दावूद की रिवायत है कि "जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को दफ़्न फ़रमाया तो उन की क़ब्र के सिरहाने एक पथ्थर नस्ब फ़रमाया और फ़रमाया कि मैं इस (पथ्थर) से अपने भाई को जानता रहूंगा और उन की क़ब्र के साथ मेरे घरवालों में से जिन का इन्तिक़ाल होगा उन्हें दफ़्न करूंगा।"(1)

इस ह़दीस शरीफ़ से मा'लूम हुवा कि क़ब्र पर याददाश्त के लिये पथ्थर लगाने में कोई ह़रज नहीं। हां आ़म क़ुबूर पर लगाए गए कतबे पर कोई मुक़द्दस कलाम नहीं लिखना चाहिये कि कहीं बे अदबी न हो जब कि मज़ारात पर उ़मूमन इमारत होती है जिस से बे अदबी का अन्देशा भी नहीं होता। लिहाज़ा जहां ह़िफ़ाज़त का अच्छा इन्तिज़ाम हो वहां कतबा पर कोई मुक़द्दस कलाम लिखने में भी ह़रज नहीं।

❁❁❁❁

---

(1) ....ابوداود، کتاب الجنائز، باب فی جمع الموتی فی قبر، ۳/ ۲۸۵، حدیث: ۳۲۰۶

मज़ारात पर फूल चादर डालना

सुवाल क्या मज़ारात पर फूल डालना जाइज़ है ?

जवाब मज़ारों पर फूल डालना जाइज़ और मुस्तह़सन है।

सुवाल इस के जाइज़ होने की दलील क्या है ?

जवाब इस के जाइज़ होने की दलील मिश्कात शरीफ़ की ह़दीसे पाक है कि एक मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दो क़ब्रों पर गुज़र हुवा, फ़रमाया कि दोनों मय्यितों को अ़ज़ाब हो रहा है, इन में एक तो पेशाब की छींटों से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ली किया करता था फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक तर शाख़ ली और उस के दो ह़िस्से किये और फिर हर एक क़ब्र पर एक ह़िस्सा गाढ़ दिया, लोगों ने अ़र्ज़ किया कि आप ने ऐसा क्यूं किया ? फ़रमाया : जब तक येह ख़ुश्क न हों तब तक इन के अ़ज़ाब में कमी रहेगी।[1] कहा गया है कि इस लिये अ़ज़ाब कम होगा कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ पढ़ेंगे।[2]

शर्हे ह़दीस : अशिअ़्अ़तुल्लमआ़त में इसी ह़दीस के तह़त है : इस ह़दीस से एक जमाअ़त दलील पकड़ती है कि क़ब्रों पर सब्ज़ा और गुल व रैह़ान डालना जाइज़ है।[3]

मिर्क़ात में इस ह़दीस की शर्ह़ में है : हमारे बा'ज़ मुतअख़्ख़िरीन अस्ह़ाब ने इस ह़दीस की वज्ह से फ़तवा दिया कि फूल और खजूर की टहनी चढ़ाने की जो आ़दत है वोह सुन्नत है।[4]

---

1 ....مشکوۃ المصابیح، کتاب الطھارۃ، باب آداب الخلاء، الفصل الاول، ۱/۸۱، حدیث:۳۳۸

2 ....مرقاۃ المفاتیح، کتاب الطھارۃ، باب آداب الخلاء، الفصل الاول، ۲/۵۸، تحت الحدیث:۳۳۸

3 ....اشعۃ اللمعات، ۱/۲۱۵

4 ....مرقاۃ المفاتیح، کتاب الطھارۃ، باب آداب الخلاء، الفصل الاول، ۲/۵۹، تحت الحدیث:۳۳۸

सुवाल मज़ारात पर चादर डालना कैसा है ?

जवाब शरीअ़ते मुत़ह्हरा में क़ुबूर पर चादर चढ़ाना बिलाशुबा जाइज़ और मुस्तह़सन अ़मल है कि इस से साह़िबे मज़ार की ता'ज़ीम व अ़ज़मत का इज़्हार होता है।

सुवाल क़ब्र पर पानी छिड़कना कैसा है ?

जवाब दफ़्न करने के बा'द क़ब्र पर पानी छिड़कना मस्नून है। इसी त़रह़ क़ब्र की ख़ाक बिखर गई हो और अब दोबारा उस पर मिट्टी डाली गई या इस बात का अन्देशा है कि मिट्टी बिखर जाएगी तो इस पर पानी डाल सकते हैं ताकि क़ब्र की निशानी बाक़ी रहे, बिला वज्ह हरगिज़ न डाला जाए कि इसराफ़ है।

ज़ियारते क़ुबूर

सुवाल मज़ारात पर जाना कैसा ?

जवाब शरीअ़ते मुत़ह्हरा में मज़ाराते औलियाउल्लाह पर जाना जाइज़ और सुन्नत से साबित है कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद शुहदाए उहुद के मज़ार पर तशरीफ़ ले जाते थे। जैसा कि ह़दीसे पाक में है : "बेशक नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर साल शुहदाए उहुद के मज़ारात पर तशरीफ़ ले जाते।"[1]

मज़ीद तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत में है : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने तुम को क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ़ किया था तो अब मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इजाज़त दे दी गई है अपनी वालिदा की क़ब्र की ज़ियारत की, लिहाज़ा तुम भी क़ब्रों की ज़ियारत करो बेशक वोह आख़िरत की याद दिलाती है।"[2]

1 ....مصنف عبد الرزاق، کتاب الجنائز، باب فی زیارة القبور، ۳/۳۸۱، حدیث: ۶۷۴۵

2 ....ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الرخصة فی زیارة القبور، ۲/۳۳۰، حدیث: ۱۰۵۶

सुवाल मज़ारात पर जाने से क्या ह़ासिल होता है ?

जवाब मज़ारात व क़ुबूर की ज़ियारत करने से दुन्या से बे रग़बती पैदा होती और आख़िरत की याद आती है। ह़दीसे पाक में है : सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ़ किया था अब ज़ियारत किया करो।[1] "क्यूंकि येह दुन्या में बे रग़बती और आख़िरत की याद पैदा करती है।"[2]

सुवाल क्या मज़ार का बोसा ले सकते हैं ?

जवाब ज़ियारत करने वाले को मज़ार का बोसा नहीं लेना चाहिये, उ़लमा का इस में इख़्तिलाफ़ है लिहाज़ा बचना बेहतर है और इसी में अदब ज़ियादा है।[3]

सुवाल मज़ार पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن मज़ारात पर ह़ाज़िरी की तफ़्सील यूं इरशाद फ़रमाते हैं : "मज़ाराते शरीफ़ा पर ह़ाज़िर होने में पाइंती की त़रफ़ से जाए और कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले पर मुवाजहा में खड़ा हो और मुतवस्सित़ आवाज़ बा अदब सलाम अ़र्ज़ करे : اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ फिर दुरूदे ग़ौसिया तीन बार, اَلْحَمْد शरीफ़ एक बार, आयतुल कुरसी एक बार, सूरए इख़्लास सात बार, फिर दुरूदे ग़ौसिया सात बार और वक़्त फ़ुरसत दे तो सूरए यासीन और सूरए मुल्क भी पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करे

---

1 ....صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب استئذان النبی ربہ۔۔۔ الخ، ص ۴۸۶، حدیث: ۹۷۷

2 .... ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی زیارۃ القبور، ۲/۲۵۲، حدیث: ۱۵۷۱

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 475।

कि इलाही عَزَّوَجَلَّ ! इस क़िराअत पर मुझे इतना सवाब दे जो तेरे करम के क़ाबिल है न उतना जो मेरे अ़मल के क़ाबिल है और इसे मेरी त़रफ़ से इस बन्दए खुदा मक्बूल को नज़्र पहुंचा फिर अपना जो मत़लब जाइज़ शरई हो उस के लिये दुआ़ करे और साहि़बे मज़ार की रूह़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर इसी त़रह़ सलाम कर के वापस आए, मज़ार को न हाथ लगाए न बोसा दे और त़वाफ़ बिल इत्तिफ़ाक़ नाजाइज़ है और सजदा ह़राम ।"(1)

नज़्रो नियाज़

सुवाल मन्नत या नज़्र किसे कहते हैं ?

जवाब हमारे हां मन्नत के दो त़रीक़े राइज हैं :

(1) एक मन्नते शरई और (2) एक मन्नते उ़र्फ़ी ।

(1) मन्नते शरई येह है कि **अल्लाह** के लिये कोई चीज़ अपने ज़िम्मे लाज़िम कर लेना । इस की कुछ शराइत़ होती हैं अगर वोह पाई जाएं तो मन्नत को पूरा करना वाजिब होता है और पूरा न करने से आदमी गुनाहगार होता है । इस गुनाह की नुहूसत से अगर कोई मुसीबत आ पड़े तो कुछ बईद नहीं ।

(2) दूसरी मन्नते उ़र्फ़ी वोह येह कि लोग नज़्र मानते हैं अगर फ़ुलां काम हो जाए तो फ़ुलां बुज़ुर्ग के मज़ार पर चादर चढ़ाएंगे या ह़ाज़िरी देंगे येह नज़्रे उ़र्फ़ी है इसे पूरा करना वाजिब नहीं बेहतर है ।

सुवाल क्या किसी नबी या वली की नज़्रे उ़र्फ़ी मान सकते हैं ?

जवाब अज़ रूए शरअ़ **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी नबी या वली की नज़्रे उ़र्फ़ी मानना जाइज़ है और अमीर ग़रीब और सादाते किराम सभी के

1.....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 522 ।

लिये खाना भी जाइज़ है। इसी को नज़्रे उ़र्फ़ी या नियाज़ कहते है। अलबत्ता नज़्रे शरई **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी के लिये मानना ममनूअ़ है।

सुवाल नज़्र मानने में कौन सी एह़तियातें मल्हूज़े ख़ातिर रखी जाएं ?

जवाब इस बारे में सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मस्जिद में चराग़ जलाने या त़ाक़ भरने या फ़ुलां बुज़ुर्ग के मज़ार पर चादर चढ़ाने या ग्यारहवीं की नियाज़ दिलाने या ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का तोशा या शाह अ़ब्दुल ह़क़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का तौशा करने या ह़ज़रते जलाल बुख़ारी का कूंडा करने या मुह़र्रम की नियाज़ या शरबत या सबील लगाने या मीलाद शरीफ़ करने की मन्नत मानी तो येह शरई मन्नत नहीं मगर येह काम मन्अ़ नहीं हैं करे तो अच्छा है। हां अलबत्ता इस का ख़याल रहे कि कोई बात ख़िलाफ़े शरअ़ उस के साथ न मिलाए मसलन त़ाक़ भरने में रत जगा होता है जिस में कुम्बा और रिश्ते की औ़रतें इकठ्ठा हो कर गाती बजाती हैं कि येह ह़राम है या चादर चढ़ाने के लिये लोग ताशे बाजे के साथ जाते हैं येह नाजाइज़ है या मस्जिद में चराग़ जलाने में बा'ज़ लोग आटे का चराग़ जलाते हैं येह ख़्वाह म ख़्वाह माल ज़ाएअ़ करना है और नाजाइज़ है, मिट्टी का चराग़ काफ़ी है और घी की भी ज़रूरत नहीं, मक़्सूद रौशनी है वोह तेल से ह़ासिल है। रहा येह कि मीलाद शरीफ़ में फ़र्श व रौशनी का अच्छा इन्तिज़ाम करना और मिठाई तक़्सीम करना या लोगों को बुलावा देना और इस के लिये तारीख़ मुक़र्रर करना और पढ़ने वालों का ख़ुश इल्ह़ानी से पढ़ना येह सब बातें जाइज़ हैं अलबत्ता ग़लत़ और झूटी रिवायतों का पढ़ना मन्अ़ है, पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों गुनहगार होंगे।"(1)

❁❁❁❁

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 317।

तबर्रुकात की ता'ज़ीम

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की त़रफ़ मन्सूब अश्या से बरकत व फ़ाएदा ह़ासिल करना कैसा है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की त़रफ़ मन्सूब अश्या से बरकत व फ़ाएदा ह़ासिल करना जाइज़ है ।

सुवाल इस का क्या सुबूत है ?

जवाब इस के सुबूत में कुरआनो ह़दीस की ब कसरत नुसूस पेश की जा सकती हैं, चुनान्चे,

(1).....ताबूते सकीना जिस में ह़ज़रते मूसा व हारून (عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के तबर्रुकात थे इन से बनी इसराईल का बरकत व फ़ाएदा ह़ासिल करना दूसरे पारे में मौजूद है ।

(2).....ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़मीज़ मुबारक से ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आंखों का सह़ीह़ हो जाना सूरए यूसुफ़ में मज़्कूर है ।

(3).....हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल मुबारक, वुज़ू के बचे हुवे पानी, नाखुनों के तराशे, चादर मुबारक, तहबन्द मुबारक, प्याला मुबारक, अंगूठी मुबारक से सह़ाबए किराम का बरकत ह़ासिल करना ब कसरत अह़ादीस से साबित है ।

सुवाल क्या क़ब्र में तबर्रुकात वग़ैरा रख सकते हैं ?

जवाब जी हां ! क़ब्र के अन्दर तबर्रुकात वग़ैरा रखना जाइज़ व बाइसे सवाब और मय्यित के लिये दफ़्ए अ़ज़ाब का सबब बनता है और येह सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان व सलफ़ सालिह़ीन के अ़मल से साबित है । ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वसिय्यत थी कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़मीज़ मुबारका, मेरे कफ़न के नीचे बदन से मुत्तसिल रखना और मूए

मुबारक व नाखुनहाए मुक़द्दसा को मेरे मुंह और आंखों और पेशानी वग़ैरा मुवाज़ेए सुजूद पर रख देना।[1]

सुवाल इस ज़िम्न में अगर कोई वाक़िआ़ हो तो बयान फ़रमा दें ?

जवाब सह़ीह़ बुख़ारी की ह़दीसे पाक में है ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी सनद के साथ ह़ज़रते सहल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़दीस बयान की, कि एक औ़रत हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक ख़ूब सूरत चादर लाई और अ़र्ज़ किया : आप को पहनने के लिये पेश कर रही हूं, आप उस को तहबन्द की सूरत में पहन कर बाहर तशरीफ़ लाए तो एक सह़ाबी ने उस चादर की तह़सीन की और सुवाल भी कर लिया तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उसे कहा कि तू ने अच्छा नहीं किया कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने लिये पसन्द फ़रमाया है और येह भी तुम्हें मा'लूम है कि आप साइल को मह़रूम नहीं फ़रमाते इस के बा वुजूद सुवाल कर लिया तो उस सह़ाबी ने कहा कि मैं ने इस को पहनने के लिये नहीं त़लब किया बल्कि अपने कफ़न के लिये सुवाल किया है, ह़ज़रते सहल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि वोह चादर उस साइल का कफ़न बनी।[2]

❁❁❁❁

अज़ान व इक़ामत से क़ब्ल दुरूदे पाक पढ़ना

सुवाल अज़ान व इक़ामत से पहले या बा'द में दुरूदे पाक पढ़ना कैसा है ?

जवाब अज़ान व इक़ामत से पहले या बा'द में दुरूदो सलाम पढ़ना बिल्कुल जाइज़ और मुस्तह़ब है।

सुवाल इस का क्या सुबूत है ?

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 117 मुलख़्ख़सन।

2 .....صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب من استعد الکفن ۔۔۔ الخ، ۱/۴۳۱، حدیث:۱۲۷۷، ملخصاً

जवाब कुरआने पाक में फ़रमाने बारी तआ़ला है :

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾

(پ۲۲،الأحزاب:٥٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो, उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो ।

कुरआने पाक की इस आयते मुबारका में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुरूदे पाक पढ़ने का हुक्म दिया और इस में न तो कोई अल्फ़ाज़ मुक़र्रर फ़रमाए कि इन्हीं अल्फ़ाज़ के साथ दुरूद पढ़ो और न ही किसी वक़्त की क़ैद लगाई है कि इस वक़्त पढ़ो और उस वक़्त न पढ़ो ।

ह़दीस शरीफ़ में है : "जिस ने इस्लाम में एक अच्छा त़रीक़ा ईजाद किया तो उस के लिये इस का अज्र है और जो इस पर अ़मल करेगा उस का अज्र ईजाद करने वाले को भी मिलेगा ।"(1)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अज़ान से क़ब्ल दुरूद शरीफ़ पढ़ना भी मुसलमानों के अन्दर राइज है और अगर येह किसी ह़दीस शरीफ़ से साबित न भी हो तब भी कारे सवाब है कि दीने इस्लाम में जिस ने अच्छा काम शुरूअ़ किया अल्लाह तआ़ला उसे नेक अ़मल का सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और जितने लोग इस पर अ़मल करेंगे उन के बराबर भी उस शख़्स को सवाब अ़त़ा किया जाएगा ।

सुवाल किन मवाक़ेअ़ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्तह़ब है ?

जवाब ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه दुरूद शरीफ़ पढ़ने के मुस्तह़ब मवाक़ेअ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "उ़लमाए किराम ने बा'ज़ मवाक़ेअ़ पर दुरूदे पाक पढ़ने के मुस्तह़ब होने पर नस्स फ़रमाई है इन में से चन्द येह हैं : रोज़े जुमुआ़ और शबे जुमुआ़, हफ़्ता,

1 ....صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی الصدقۃ۔۔۔الخ، ص٥٠٨، حدیث:١٠١٧

इतवार और सोमवार के दिन, सुब्हो शाम, मस्जिद में जाते और निकलते वक़्त, ब वक़्ते ज़ियारते रौज़ए अत्हर, सफ़ा व मर्वा पर, ख़ुत़बए जुमुआ के वक़्त, जवाबे अज़ान के बा'द, ब वक़्ते इक़ामत, दुआ के अव्वल आख़िर और बीच में, दुआए क़ुनूत के बा'द तल्बिया कहने के बा'द, कान बजने के वक़्त और किसी चीज़ के भूल जाने के वक़्त।"(1)

सुवाल बा'ज़ लोग कहते हैं कि अज़ान व इक़ामत से क़ब्ल दुरूद शरीफ़ न पढ़ा जाए कि अ़वामुन्नास कहीं दुरूद शरीफ़ को अज़ान व इक़ामत का हिस्सा न समझ लें, क्या येह बात दुरूस्त है ?

जवाब इस का ह़ल येह नहीं कि एक मुस्तह़सन काम बन्द कर दिया जाए, उ़लमाए किराम ने इस का ह़ल येह पेश फ़रमाया है कि अज़ान व इक़ामत से पहले दुरूद में येह एह़तियात़ करनी चाहिये कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बा'द कुछ वक़्फ़ा करे फिर अज़ान या इक़ामत कहे ताकि दुरूद शरीफ़ और अज़ान व इक़ामत के दरमियान फ़ासिला हो जाए या दुरूद शरीफ़ की आवाज़ अज़ान व इक़ामत की आवाज़ से पस्त रहे ताकि दोनों के दरमियान फ़र्क़ रहे और दुरूद शरीफ़ को इक़ामत का जुज़ न समझें। इस त़रह़ अज़ान व इक़ामत पढ़ने वाला ख़ुश नसीब सलातो सलाम की बरकतों से भी मुस्तफ़ीद होता रहेगा।

अंगूठे चूमना

सुवाल अज़ान में ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्मे गिरामी "**मुह़म्मद**" صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सुन कर अपने अंगूठे चूम कर अपनी आंखों से लगाना कैसा है ?

(1)……ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب نص العلماء علی استحباب۔۔۔الخ، ۲/۲۸۱

जवाब जाइज़ व मुस्तह़सन व मूजिबे अज्रो सवाब है और सरकारे दो जहां, रह़मते आ़लमियां, शफ़ीए़ मुज़निबां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की अ़लामत है।

सुवाल इस का क्या सुबूत है ?

जवाब अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुस्तह़ब येह है कि जब पहली शहादत सुने तो कहे : صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله और जब दूसरी सुने तो दोनों अंगूठे अपनी दोनों आंखों पर लगाने के बा'द कहे : قُرَّتْ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ الله फिर येह कहे اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत की त़रफ़ उस के क़ाइद होंगे जैसे कि कन्ज़ुल इ़बाद और अल फ़तावस्सूफ़िया और किताबुल फ़िरदौस में है कि जिस ने अज़ान में اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله सुनने के बा'द अपने दोनों अंगूठों को बोसा दिया तो जन्नत की सफ़ों में, मैं उस का क़ाइद और दाख़िल करने वाला होऊंगा।(1)

सुवाल अंगूठे चूमने के बारे में कोई वाक़िआ़ हो तो वोह बयान फ़रमा दें ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मुस्नदुल फ़िरदौस के ह़वाले से फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुअज़्ज़िन को اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله कहते सुना येह दुआ़ पढ़ी और दोनों कलिमे की उंगलियों के पोरे जानिबे ज़ीरीं से चूम कर आंखों से लगाए, इस पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो ऐसा करे जैसा मेरे प्यारे ने किया उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त ह़लाल हो जाए।(2)

1 .....ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی کراھۃ تکرار الجماعۃ فی المسجد، ۲/۸۴

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 432।

सुवाल अगर येह दलाइल न होते तो क्या फिर भी ऐसा करना जाइज़ होता ?

जवाब जी हां ! अगर इस के लिये कोई ख़ास दलील न भी हो तो शरीअ़त की त़रफ़ से इस की मुमानअ़त न होना ही इस के जाइज़ होने के लिये काफ़ी है क्यूंकि येह चीज़ें अस्ल के ए'तिबार से जाइज़ हैं जब तक कि शरीअ़त मन्अ़ न कर दे । येही वज्ह है कि अज़ान के इलावा भी मह़ब्बत व ता'ज़ीम की वज्ह से हुज़ूर सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक सुन कर अंगूठे चूम कर आंखों से लगाना जाइज़ व मुस्तह़सन है ।

क़ब्र पर अज़ान

सुवाल दफ़्न करने के बा'द क़ब्र पर अज़ान देना कैसा है ?

जवाब दफ़्न के बा'द क़ब्र पर अज़ान देना जाइज़ व मुस्तह़सन है ।

सुवाल क़ब्र पर अज़ान देने का सुबूत क्या है ?

जवाब क़ब्र पर अज़ान देने का जवाज़ यक़ीनी है क्यूंकि शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इस से मन्अ़ नहीं फ़रमाया और जिस काम से शरए़ मुत़ह्हरा मन्अ़ न फ़रमाए अस्लन ममनूअ़ नहीं हो सकता । नीज़ अह़ादीस से साबित है कि जब मुर्दे को क़ब्र में उतारने के बा'द मुन्कर नकीर उस के पास आ कर सुवालात करते हैं तो शैत़ान जो कि इन्सान का अज़ली दुश्मन है, मुसलमान को बहकाने के लिये वहां भी आ पहुंचता है और येह बात भी अह़ादीस से साबित है कि शैत़ान क़ब्र में आता और मुसलमान को सुवालात के जवाब देने में परेशानी में मुब्तला करता है ताकि येह सुवालात के जवाबात न दे कर ख़ाइबो ख़ासिर हो और जब अज़ान दी जाती है तो शैत़ान भाग खड़ा होता है । चुनान्चे,

रिवायत में है : "जब मुर्दे से सुवाल होता है कि तेरा रब कौन है ? शैत़ान उस पर ज़ाहिर होता है और अपनी त़रफ़ इशारा करता है या'नी मैं तेरा रब हूं।" इस लिये हुक्म आया कि मय्यित के लिये जवाब में साबित क़दम रहने की दुआ़ करें।(1)

और येह अम्र भी अह़ादीसे सह़ीह़ा से साबित है कि अज़ान देने से शैत़ान भागता है जूंही अज़ान की आवाज़ उस के कान में पड़ती है जिस जगह अज़ान दी जा रही हो वहां से कोसों दूर भाग जाता है चुनान्चे, सह़ीह़ मुस्लिम में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "शैत़ान जब अज़ान सुनता है इतनी दूर भागता है जैसे रोह़ा।" और रोह़ा मदीना से 36 मील के फ़ासिले पर है।(2)

सुवाल क्या अज़ान नमाज़ के साथ ख़ास है ?

जवाब नहीं, ऐसा नहीं कि अज़ान नमाज़ के साथ ख़ास है। बा'ज़ लोगों को अज़ाने क़ब्र के नाजाइज़ होने का शैत़ानी वस्वसा शायद इस बिना पर आता है कि लोग अज़ान को नमाज़ के साथ ख़ास समझते हैं ह़ालांकि ऐसा नहीं है बल्कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने नमाज़ के इ़लावा कसीर मक़ामात पर अज़ान को मुस्तह़सन जाना है जैसे नौ मौलूद के कान और दफ़्ए़ वबा व बला वग़ैरा मवाक़ेअ़ में।

۞۞۞۞

नमाज़ के बा'द ज़िक्र

सुवाल क्या नमाज़ के बा'द बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करना जाइज़ है या नहीं ?

जवाब नमाज़ के बा'द ज़िक्र करना शरअ़न जाइज़ है।

---

1 ....نوادر الاصول، الاصل الحادی والخمسون والمائتان، ۲/۱۰۲۰، بتغیر، फ़तावा रज़विय्या, 5 / 655

2 ....صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب فضل الاذان وھرب۔۔۔الخ، ص۲۰۴، حدیث:۳۸۸

सुवाल इस की क्या दलील है ?

जवाब **हदीस 1 :** सहीह़ मुस्लिम में अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सलाम फेर कर बुलन्द आवाज़ से येह कलिमात पढ़ते थे :

"لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ۔"[1]

हदीस 2 : सहीह़ मुस्लिम में है : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : "फ़राइज़ से फ़ारिग़ हो कर बुलन्द आवाज़ से ज़िक्रुल्लाह करना हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में मुरव्वज था ।"[2]

सुवाल बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करते हुवे क्या एह़तियात़ पेशे नज़र रखी जाए ?

जवाब बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में येह एह़तियात़ पेशे नज़र रहे कि सोते हुवे लोगों की नींद में ख़लल न आए या नमाज़ी या तिलावत करने वाले को तश्वीश न हो ।

बड़ी रातों में इबादत

सुवाल शबे मे'राज में इ़बादत करना कैसा है और इस की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब शबे मे'राज शरीफ़ में इ़बादत करना जाइज़ व मुस्तह़सन है, इस में इ़बादत करने की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे आ़रिफ़ बिल्लाह शैख़ मुह़क़्क़िक़

1 ....صحیح مسلم، کتاب المساجد، باب استحباب الذکر بعد الصلاۃ، ص۲۹۹، حدیث: ۵۹۴

2 ....صحیح مسلم، کتاب المساجد، باب استحباب الذکر بعد الصلاۃ، ص ۲۹۴، حدیث: ۵۸۳

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ह़दीस नक़्ल फ़रमाते हैं : "रजब में एक ऐसी रात है जिस में इ़बादत करने वाले के लिये सौ साल की नेकियों का सवाब लिखा जाता है और येह रजब की सत्ताईसवीं रात है, जो इस रात बारह रक्अ़त नवाफ़िल इस त़रह़ अदा करे कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा पढ़े और سُبْحَانَ اللہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَاللہُ اَکْبَر सौ दफ़्अ़ा पढ़े और **अल्लाह** तआ़ला से सौ दफ़्अ़ा इस्तिग़्फ़ार करे और नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सौ बार दुरूद पढ़े और अपने लिये दुन्या व आख़िरत में से जो चाहे मांगे और सुब्ह़ को रोज़ा रखे तो बेशक **अल्लाह** तआ़ला उस की सब दुआ़ओं को क़बूल फ़रमाएगा, सिवाए उस दुआ़ के जो गुनाह की हो, इस रिवायत को इमाम बैहक़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने "शुअ़बुल ईमान" में अबान से और उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया ।"[1]

सुवाल शबे बराअत की फ़ज़ीलत व अहम्मिय्यत क्या है ?

जवाब इस की फ़ज़ीलत में मुतअ़द्दिद अह़ादीस मरवी हैं ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जब शा'बान की पन्दरहवीं रात हो तो रात को जागा करो और इस के दिन में रोज़ा रखो जब सूरज ग़ुरूब होता है तो उस वक़्त से **अल्लाह** तआ़ला आस्माने दुन्या की त़रफ़ नुज़ूले रह़मत फ़रमाता है और ए'लान करता है कि है कोई मग़्फ़िरत त़लब करने वाला ताकि मैं उस को बख़्श दूं, है कोई रिज़्क़ त़लब करने वाला ताकि मैं उस को रिज़्क़ दूं, है कोई मुसीबत ज़दा ताकि मैं उस को इस से नजात दूं । येह ए'लान तुलूए़ फ़ज्र तक होता रहता है ।[2]

1 ....ماثبت بالسنۃ، ص ۱۵۰، شعب الایمان، باب فی الصیام، تخصیص شھر رجب بالذکر، ۳/۳۷۴، حدیث: ۳۸۱۲

2 .... ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، باب ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، ۲/ ۱۶۰، حدیث: ۱۳۸۸

इसी त़रह़ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है फ़रमाती हैं कि एक रात मैं ने हुज़ूर को अपने बिस्तर पर न पाया तो मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तलाश में निकली मैं ने हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जन्नतुल बक़ीअ़ में पाया, हुज़ूर सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला निस्फ़ शा'बान की रात को आस्माने दुन्या की त़रफ़ नुज़ूले रह़मत फ़रमाता है और क़बीलए बनी कल्ब की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा लोगों को बख़्श देता है।"(1)

सुवाल बड़ी रातों में जम्अ़ हो कर इबादत करना कैसा है ?

जवाब जाइज़ व मुस्तह़सन है। फ़तावा रज़विय्या में ब ह़वालए लत़ाइफ़ुल मआ़रिफ़ है : "अह्ले शाम में अइम्मए ताबेईन मिस्ले ख़ालिद बिन मा'दान व इमाम मक्ह़ूल व लुक़्मान बिन आ़मिर वग़ैरहुम (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم) शबे बराअत की ता'ज़ीम और इस रात इबादत में कोशिशे अ़ज़ीम करते और इन्हीं से लोगों ने उस का फ़ज़्ल मानना और इस की ता'ज़ीम करना अख़ज़ किया है।"(2)

सुवाल इन रातों में मसाजिद को सजाना कैसा है ?

जवाब जाइज़ व मुस्तह़सन है क्यूंकि इस से मक़्सूद इस रात की ता'ज़ीम होता है और ब ह़वाला लत़ाइफ़ुल मआ़रिफ़ गुज़र चुका कि अइम्मए ताबेईन इस रात की ता'ज़ीम किया करते थे।

शिर्क व बिदअ़त

सुवाल शिर्क किसे कहते हैं ?

1 ترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، ۲/۱۸۳، حدیث: ۷۳۹

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 433 ।

जवाब : शिर्क कहते हैं किसी को अल्लाह तआ़ला की उलूहिय्यत में शरीक मानना या'नी जिस त़रह़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात है उस की मिस्ल किसी दूसरे की ज़ात को मानना या किसी दूसरे को इ़बादत के लाइक़ समझना। मज़ीद इस को इस त़रह़ समझें कि शिर्क तौह़ीद की ज़िद है और किसी शै की ह़क़ीक़त उस की ज़िद से पहचानी जाती है लिहाज़ा शिर्क की ह़क़ीक़त जानने के लिये तौह़ीद का मफ़्हूम समझना ज़रूरी है। "तौह़ीद का मा'ना अल्लाह तआ़ला की ज़ाते पाक को उस की ज़ात और सिफ़ात में शरीक से पाक मानना या'नी जैसा अल्लाह तआ़ला है वैसा हम किसी को न मानें अगर कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी दूसरे को "अल्लाह" तसव्वुर करता है तो वोह ज़ात में शिर्क करता है। इसी त़रह़ अल्लाह जैसी सिफ़ात किसी और के लिये मानना येह सिफ़ात में शिर्क है।"

सुवाल : शिर्क की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब : शिर्क की तीन अक़्साम हैं :

(1).....जिस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वुजूद में किसी का मोह़ताज नहीं हमेशा से है हमेशा रहेगा उस की सिफ़ात भी हमेशा से हैं हमेशा रहेंगी इस त़रह़ किसी का वुजूद मानना शिर्क है।

(2).....जिस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काइनात का ख़ालिक़ है इसी त़रह़ किसी और को काइनात का ख़ालिक़ या उस की तख़्लीक़ में शरीक मानना शिर्क है।

(3).....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी को इ़बादत के लाइक़ समझना शिर्क है।

सुवाल : जाइज़ उमूर को शिर्क कहने वालों से मैल जोल रखना कैसा ?

जवाब : जो मुसलमान को मुशरिक व काफ़िर कहे ह़दीस शरीफ़ में आया कि

कुफ़्र कहने वाले की त़रफ़ लौटता है[1] इस लिये मुसलमानों पर लाज़िम है कि ऐसों से जो बिला वज्ह मुसलमानों को बात बात पर शिर्क व बिदअ़त के हुक्म लगाते हैं दूर रहें कि ह़दीसे मुबारक में बद मज़्हबों से दूर रहने और उन के साथ उठने बैठने, सलाम करने वग़ैरा दीगर मुआ़मलात से मन्अ़ फ़रमाया गया है।

ह़दीसे मुबारक : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बद मज़्हब से दूर रहो और उन को अपने से दूर रखो कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें और कहीं वोह तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दें।"[2]

सुवाल बिदअ़त किसे कहते हैं ?

जवाब बिदअ़त से मुराद हर वोह नया काम है जो सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक दौर में न था बा'द में किसी ने इस को शुरूअ़ किया, अब अगर येह काम शरीअ़त से टकराता है तो इस बिदअ़त को बिदअ़ते सय्यिआ या'नी बुरी बिदअ़त कहते हैं, इसी के बारे में सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि येह मर्दूद है और वोह नया काम जो क़ुरआन व सुन्नत के ख़िलाफ़ नहीं है उस को बिदअ़ते मुबाह़ा या ह़सना या'नी अच्छी बिदअ़त कहते हैं या'नी हुक्म के ए'तिबार से मुबाह़ है तो मुबाह़ा और मुस्तह़सन है तो ह़सना बल्कि बा'ज़ बिदआ़ते ह़सना तो वाजिबा भी होती हैं जिस की तफ़्सील आगे आ रही है।

सुवाल अच्छी बिदअ़त पर अ़मल करना कैसा ?

जवाब अच्छी बिदअ़त को बिदअ़ते ह़सना कहा जाता है इस पर अ़मल करना कभी वाजिब, कभी मुस्तह़ब होता है और अच्छा त़रीक़ा जारी करने वाला अज्रो सवाब का ह़क़दार है जैसा कि ह़दीसे मुबारका में है "जो कोई

---

1 ....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان حال إیمان من قال لأخیه المسلم: یا کافر، ص ۵۱، حدیث: ۶۰

2 .... صحیح مسلم، مقدمة، باب النہی عن روایة عن الضعفاء ۔۔۔ الخ، ص ۹، حدیث: ۷

इस्लाम में अच्छा त़रीक़ा जारी करे उस को उस का सवाब मिलेगा और उस का भी जो उस पर अ़मल करेंगे और उन के सवाब में भी कमी न होगी और जो शख़्स इस्लाम में बुरा त़रीक़ा जारी करे उस पर उस का गुनाह होगा और उन का भी जो उस पर अ़मल करें और उन के गुनाह में भी कुछ कमी न आएगी ।[1]

सुवाल अच्छी बिदअ़त या'नी बिदअ़ते ह़सना पर कोई वाक़िआ़ भी इरशाद फ़रमा दें ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने तक मुसलमान तन्हा अकेले अकेले नमाज़े तरावीह़ पढ़ा करते थे, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद के पास से गुज़रे और उन को तन्हा तरावीह़ पढ़ते देखा तो सब को एक जगह जम्अ़ किया और तरावीह़ की जमाअ़त शुरूअ़ करवाई और ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन का इमाम मुक़र्रर किया और फिर येह अल्फ़ाज़ इरशाद फ़रमाए : نِعْمَتِ الْبِدْعَةُ هٰذِهٖ या'नी येह क्या ही अच्छी बिदअ़त है ।[2]

सुवाल बिदअ़त की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब बिदअ़त की तीन क़िस्में हैं :

(1) बिदअ़ते ह़सना (2) बिदअ़ते सय्यिआ (3) बिदअ़ते मुबाह़ा ।

बिदअ़ते ह़सना : वोह बिदअ़त है जो क़ुरआनो ह़दीस के उसूलो क़वाइद के मुत़ाबिक़ हो और शरीअ़त की निगाह में इस पर अ़मल करना ज़रूरी हो या बेहतर, इस की दो क़िस्में हैं :

(1).....बिदअ़ते वाजिबा जैसे : क़ुरआनो ह़दीस समझने के लिये इल्मे नह़्व का सीखना और गुमराह फ़िर्क़ों पर रद्द के लिये दलाइल क़ाइम करना ।

---

1. صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی الصدقۃ ولو بشق تمرۃ۔۔۔ الخ، ص۵۰۸، حدیث:۱۰۱۷

2. ....مشکوۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب قیام شہر رمضان، الفصل الثالث، ۱/۲۵۴، حدیث:۱۳۰۱، ملخصاً

(2).....बिदअ़ते मुस्तह़ब्बा जैसे : मद्रसों की ता'मीर और हर वोह नेक काम जिस का रवाज इब्तिदाई ज़माने में नहीं था जैसे मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ वग़ैरा।

बिदअ़ते सय्यिआ : वोह बिदअ़त है जो कुरआनो ह़दीस के उसूलो क़वाइद के मुख़ालिफ़ हो, इस की भी दो क़िस्में हैं :

(1).....बिदअ़ते मह़रमा, जैसे बुरे अ़क़ाइद

(2).....बिदअ़ते मकरूहा, जैसे गुनाहों के नित नए अन्दाज़

बिदअ़ते मुबाह़ा : वोह बिदअ़त है जो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़ाहिरी ज़माने में न हो और हुक्मे शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हो और करने वाला सवाब का ह़क़दार भी न हो जैसे उ़म्दा उ़म्दा खाने वग़ैरा।

सुवाल कुछ ऐसे मुआ़मलात की मिसालें बयान फ़रमा दें जो अ़ह्दे रिसालत में न थीं और मुसलमानों ने बा'द में ईजाद कीं और इस को अच्छा भी समझते हैं ?

जवाब इस की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

(1).....ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तरावीह़ की जमाअ़त शुरूअ़ करवाई लेकिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक ज़माने में ऐसा नहीं हुवा था।

(2).....कुरआने पाक के ऊपर नुक़्ते व ए'राब ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के दौर में लगे हैं चारों सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने येह काम नहीं किया जो उस ने करवाया और इस पर किसी आ़लिम ने इन्कार भी नहीं किया उ़लमाए ह़क़ की इजाज़त व तह़सीन की बिना पर येह अ़मल भी मुस्तह़सन है।

(3).....मस्जिद में इमाम के खड़े होने के लिये मेह़राब बनाना वलीद मरवानी के दौर में सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ईजाद किया था।

(4).....छे कलिमे, इस त़रह़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस दौर में

मुरत्तब न थे। लेकिन इन कामों को कोई गुनाह नहीं कहता और न ही कोई मन्अ़ करता है आख़िर क्यूं ?

इस की वज्ह येह है कि मुमानअ़त की दलील मौजूद नहीं है अगर्चे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ज़माने में बा'ज़ काम नहीं हुवे मगर चूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इन से मन्अ़ भी तो नहीं फ़रमाया है लिहाज़ा येह काम करना जाइज़ है।

मीलाद शरीफ़ मनाना

सुवाल मीलाद शरीफ़ मनाना कैसा है ?

जवाब मीलाद शरीफ़ मनाना जाइज़ और मुस्तह़सन या'नी बहुत अच्छा काम है।

सुवाल मीलाद शरीफ़ में क्या होता है ?

जवाब मीलाद उ़र्फ़े आ़म में ज़िक्रे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम है ख़्वाह दो आदमी मिल कर करें या हज़ारों और लाखों। इस मह़फ़िल में **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना बयान की जाती है, तिलावते क़ुरआने मजीद होती है और ज़िक्रे ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم होता है और इन की ना'तें पढ़ी जाती हैं और इन पर सलातो सलाम पेश किया जाता है।

सुवाल मीलाद शरीफ़ मनाने का सुबूत क्या है ?

जवाब मीलाद का जवाज़ ब कसरत आयात व अह़ादीस और सलफ़ सालिह़ीन के अ़मल से साबित है। अगर्चे जवाज़ के लिये येह दलील भी काफ़ी है कि इस की मुमानअ़त शरअ़ से साबित नहीं है और जिस काम से **अल्लाह** तआ़ला और रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ नहीं फ़रमाया वोह किसी के मन्अ़ करने से ममनूअ़ नहीं हो सकता। आयाते क़ुरआने मजीद आक़ाए नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद के ज़िक्रे ख़ैर से माला माल हैं :

चुनान्चे, पारह 11 सूरए यूनुस की आयत 58 में इरशाद होता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا (پ۱۱، یونس:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और उसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें ।

इस आयत से मा'लूम हुवा कि फ़ज़्लो रह़मत पर ख़ुशी करना चाहिये लिहाज़ा मुसलमान हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़ज़्लो रह़मत जान कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र कर के ख़ुशी मनाते हैं और येह हुक्मे इलाही है ।

चुनान्चे अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ (پ۳۰، الضحٰی:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चर्चा करो ।

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, ह़लीम करीम अ़ज़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम तरीन ने'मत हैं और ने'मते इलाही का चर्चा करना हुक्मे ख़ुदावन्दी है । लिहाज़ा मुसलमान ह़बीबे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ने'मते इलाही समझते हुवे मह़फ़िले मीलाद की सूरत में उस का चर्चा करते हैं ।

सुवाल इस ज़िम्न में ह़दीस में कोई वाक़िआ़ मज़्कूर हो तो वोह भी बयान फ़रमा दें ?

जवाब बुख़ारी शरीफ़ में है : ह़ज़रते उ़र्वा फ़रमाते हैं : सुवैबा अबू लहब की बांदी थी जिसे उस ने (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैदाइश की ख़ुशी में) आज़ाद कर दिया था । इस ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दूध भी पिलाया । अबू लहब के मरने के बा'द उस के बा'ज़ अहल (ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) ने उसे बहुत बुरी ह़ालत में ख़्वाब में देखा और उस से पूछा मरने के बा'द तेरा

क्या ह़ाल रहा ? अबू लहब ने कहा : तुम से जुदा हो कर मैं ने कोई राह़त नहीं पाई सिवाए उस के कि मैं थोड़ा सा सैराब किया जाता हूं इस लिये कि मैं ने (हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैदाइश की ख़ुशी में) सुवैबा को आज़ाद किया था ।(1)

शर्हे ह़दीस : इमाम क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इब्ने जज़री ने कहा : शबे मीलाद की ख़ुशी की वज्ह से जब अबू लहब जैसे काफ़िर का येह ह़ाल है कि उस के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ होती है ह़ालांकि अबू लहब ऐसा काफ़िर है जिस की मज़म्मत में क़ुरआन नाज़िल हुवा तो हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उम्मती मोमिन व मुवह़्ह़िद का क्या ह़ाल होगा जो हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की वज्ह से अपनी क़ुदरत और त़ाक़त के मुवाफ़िक़ ख़र्च करता है । क़सम है मेरी उ़म्र की ! उस की जज़ा येही है कि **अल्लाह** तआ़ला उसे अपने फ़ज़्ले अ़मीम से जन्नाते नई़म में दाख़िल करे ।(2)

सुवाल क्या हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात के ह़वाले से भी विलादत की ख़ुशी मनाने का सुबूत मिलता है ?

जवाब जी हां ! ख़ुद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी विलादत की ख़ुशी मनाई जैसा कि इमाम मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पीर शरीफ़ के रोज़े के बारे में सुवाल किया गया तो फ़रमाया : فِيْهِ وُلِدْتُ وَفِيْهِ اُنْزِلَ عَلَيَّ इसी दिन मेरी विलादत हुई और इसी दिन मुझ पर वह़्य नाज़िल हुई ।(3) नीज़ मीलाद मनाना आज की ईजाद नहीं मुसलमान सदियों से मीलाद मनाते

1 .... صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب (وامھاتکم اللاتی ارضعنکم)، ۳/۴۳۲، حدیث: ۵۱۰۱، عمدة القاری، ۱۴/۴۴-۴۵، تحت الحدیث: ۵۱۰۱

2 .... المواھب اللدنیة، ذکر رضاعہ، ۱/۷۸

3 .... صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صیام ثلاثة ۔۔۔ الخ، ص۵۹۱، حدیث: ۱۱۶۲

आए हैं, चुनान्चे, मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और अ़ल्लामा बुरहानुद्दीन ह़ल्बी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : "मुसलमान तमाम मक़ामात और बड़े बड़े शहरों में हमेशा नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत के महीने में मह़ाफ़िल मुन्अ़क़िद करते रहे हैं।[1]

सुवाल विलादते मुबारका की दुरुस्त तारीख़ क्या है ?

जवाब हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की विलादते मुबारका पीर के दिन हुई है इस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है और तारीख़े विलादत में अक़्वाल मुख़्तलिफ़ हैं। मश्हूर तारीख़ बारह रबीउ़ल अव्वल है सारी दुन्या में इसी तारीख़ को ख़ुसूसी एहतिमाम के साथ जश्ने विलादत मनाया जाता है।

सुवाल हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते मुबारका की ख़ुशी में जुलूस निकालना, चरागां वग़ैरा करना कैसा ?

जवाब नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस दुन्या में जल्वा फ़रमा होने की वज्ह से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर के लिये जुलूस निकालना, परचम लहराना, और जुलूस में शिर्कत करना और अपनी अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ चरागां और रौशनी करना जाइज़ व मुस्तह़सन है।

सुवाल मुसलमान विलादते मुबारका के मौक़अ़ पर जुलूस क्यूं निकालते हैं ?

जवाब मुसलमान आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत के मौक़अ़ पर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तौक़ीर के लिये जुलूस निकालते, ख़ुशियों का इज़्हार करते हैं और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर के लिये जो जाइज़ काम किया जाए और उस में किसी क़िस्म की ख़राबी भी न हो वोह जाइज़ व मुस्तह़सन है।

❁❁❁❁

1.....रसाइले मीलादे मुस्त़फ़ा, स. 26।

तक़्लीद की ज़रूरत व अहम्मिय्यत

सुवाल तक़्लीद की ह़क़ीक़त और इस के ज़रूरी होने पर दलाइल बयान कर दीजिये ?

जवाब एक समझदार बच्चा भी येह बात ब ख़ूबी समझ सकता है कि ऐसा शख़्स जो बिल्कुल जाहिल और अनपढ़ है और उसे अपने काम से फ़ुरसत भी नहीं है क्या वोह येह अहलिय्यत व इस्तित़ाअ़त रख सकता है कि किताबें पढ़ कर ही ख़ुद कोई मस्अला मा'लूम कर ले, कुजा येह कि वोह बराहे रास्त क़ुरआनो ह़दीस से मस्अले निकाले और इस पर अ़मल करे । हर आ़क़िल के नज़्दीक इस का जवाब यक़ीनन नफ़ी में होगा । ला मह़ाला वोह जाहिल शख़्स किसी आ़लिम से पूछेगा । वोह आ़लिम अगर ख़ुद क़ुरआनो ह़दीस से मसाइल निकालने की अहलिय्यत नहीं रखता तो वोह उसे उन कुतुब से पढ़ कर बताएगा जिस में किसी आ़लिम मुज्तहिद के अख़्ज़ व मुरत्तब कर्दा मसाइल लिखे होंगे, और उस मुज्तहिद आ़लिम ने वोह मसाइल क़ुरआनो सुन्नत ही से निकाल कर बयान किये होंगे । तो एक जाहिल या आ़लिम ग़ैर मुज्तहिद जो इजतिहाद के ज़रीए़ ख़ुद क़ुरआनो ह़दीस से मसाइल निकालने की अहलिय्यत व सलाह़िय्यत ही नहीं रखता उस पर येह ज़िम्मेदारी आ़इद कर देना कि वोह ख़ुद क़ुरआनो ह़दीस से मसाइल निकाले इस के लिये تکلیف ما لا یُطاق है (या'नी ऐसी तक्लीफ़ है जिस की वोह त़ाक़त व अहलिय्यत ही नहीं रखता) बल्कि हुक्मे क़ुरआनी के सरीह़ ख़िलाफ़ है । मा'मूलाते शरइय्या से क़त़ए़ नज़र करते हुवे जब हम रोज़ मर्रा के ह़ालात और अपने त़र्ज़े ज़िन्दगी पर नज़र करते हैं तो साफ़ नज़र आता है कि हम अपनी ज़िन्दगी के हर लम्ह़े तक़्लीद के बन्धनों में जकड़े हुवे हैं इस में अ़वामो ख़वास, शहरी, देहाती हर त़बक़े के लोग मसावी ह़िस्सेदार हैं । आप ग़ौर करें कि एक बच्चा होश संभालते ही अपने मां बाप अपने मुरब्बी की तक़्लीद के

सहारे परवान चढ़ता है, एक बीमार अपने मुआ़लिज की तक़्लीद कर के ही शिफ़ायाब होता है, एक मुस्तग़ीस किसी क़ानूनदां वकील की तक़्लीद कर के ही अपना ह़क़ पाता है, रास्ते से नाबलद एक राह रू किसी रास्ता बताने वाले की तक़्लीद कर के मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचता है, एक ना ख़्वान्दा अपने मुअ़ल्लिम की तक़्लीद ही से साह़िबे इल्मो फ़ज़्ल बनता है। सन्अ़तो ह़रफ़त से आ़री किसी माहिरे फ़न उस्ताज़ की तक़्लीद कर के ही सन्अ़त कार होता है येह वोह रोज़ मर्रा की बातें हैं कि इन से न तो इन्कार की कोई गुन्जाइश है और न बह़्स व तम्ह़ीस की......और येही तक़्लीद है।(1)

सुवाल चारों अइम्मा में से किसी एक की तक़्लीद क्यूं वाजिब है जब चारों ह़क़ पर हैं तो चारों की तक़्लीद की इजाज़त होनी चाहिये जब चाहें जिस इमाम की तक़्लीद करें ?

जवाब बिलाशुबा चारों इमाम (इमाम अबू ह़नीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ेई और इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن) ह़क़ पर हैं लेकिन इन में से किसी एक इमाम की पैरवी इस लिये ज़रूरी है कि अगर ऐसा न हो तो हर शख़्स अपने नफ़्स की पैरवी करेगा और जब दिल चाहेगा जिस इमाम का मस्अला आसान और नफ़्स की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ उसे मह़सूस होगा उस पर अ़मल कर लेगा और येह शरीअ़ते मुत़ह्हरा का मज़ाक़ उड़ाना है क्यूंकि बहुत से मसाइल ऐसे हैं कि बा'ज़ अइम्मा के नज़्दीक ह़लाल और वोही मसाइल बा'ज़ अइम्मा के नज़्दीक ह़राम हैं और येह नफ़्स का पैरूकार सुब्ह़ एक इमाम की पैरवी करते हुवे एक मस्अले को ह़राम समझ कर इस लिये अ़मल न करेगा कि इस में उस के नफ़्स का मफ़ाद नहीं है और जब शाम को बल्कि उसी लम्ह़े उस में अपना मफ़ाद नज़र आएगा तो दूसरे इमाम का मज़्हब इख़्तियार करते हुवे उसी मस्अले को अपने लिये ह़लाल कर लेगा

1.....मक़ालाते शारेहे़ बुख़ारी, 1 / 253 मुलख़्ख़सन

और इस त़रह़ फ़क़त़ ख़्वाहिशे नफ़्स की बुन्याद पर अह़कामे शरइय्या को खेल बना कर पामाल करता फिरेगा इस लिये इन्सान को ख़्वाहिशे नफ़्स पर अ़मल करने के बजाए दीन व शरीअ़त पर अ़मल करने के लिये किसी एक इमामे मुज्तहिद का मुक़ल्लिद होना ज़रूरी है वरना वोह फ़लाह़ व हिदायत हरगिज़ न पा सकेगा।

इस को एक दुन्यावी मिसाल से यूं समझें कि अगर किसी मन्ज़िल पर पहुंचने के मुख़्तलिफ़ रास्ते हों तो मन्ज़िल पर वोही शख़्स पहुंचेगा जो इन में से किसी एक को इख़्तियार करे और जो कभी एक रास्ते पर चले, कभी दूसरे रास्ते पर, फिर तीसरे पर फिर चौथे पर तो ऐसा शख़्स रास्ते ही नापता रह जाएगा कभी मन्ज़िल तक नहीं पहुंच सकेगा येही ह़ाल उस शख़्स का होगा जो किसी एक इमाम की तक़्लीद का दामन न थाम ले बल्कि किसी मस्अले में कभी किसी इमाम की पैरवी करे और कभी दूसरे की, फिर तीसरे की फिर चौथे की तो वोह मन्ज़िले आख़िरत जो कि जन्नत है उस तक नहीं पहुंच सकेगा बल्कि ख़्वाहिशे नफ़्स की ख़ात़िर रास्ता नापता ही रह जाएगा और राहे मन्ज़िल से गुम हो कर गुमराही व अंधेरे में जा पड़ेगा।

सुवाल अगर तक़्लीद ज़रूरी है तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के ज़माने में तक़्लीद क्यूं नहीं हुई ?

जवाब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में दरपेश मसाइल से मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उस का हुक्म पूछ लिया करते थे और बसा औक़ात जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल करना मुमकिन न होता तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم इजतिहाद कर के हुक्मे शरई पर अ़मल फ़रमाते थे। इजतिहाद की अस्ल मश्हूर ह़दीस शरीफ़ है जो ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है अव्वलन ह़दीस शरीफ़ का मतन और इस का तर्जमा मुलाह़ज़ा कीजिये।

عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ: أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ لَمَّا بَعَثَہٗ إِلَی الْیَمَنِ قَالَ: "کَیْفَ تَقْضِیْ إِذَا عَرَضَ لَکَ قَضَاءٌ؟" قَالَ: أَقْضِیْ بِکِتَابِ اللّٰہِ قَالَ: "فَإِنْ لَّمْ تَجِدْ فِیْ کِتَابِ اللّٰہِ؟" قَالَ: فَبِسُنَّۃِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ قَالَ: "فَإِنْ لَّمْ تَجِدْ فِیْ سُنَّۃِ رَسُوْلِ اللّٰہِ؟" قَالَ: أَجْتَہِدُ رَأْیِیْ وَلَا آلُوْ قَالَ: فَضَرَبَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ عَلٰی صَدْرِہٖ وَ قَالَ: "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ وَفَّقَ رَسُوْلَ رَسُوْلِ اللّٰہِ لِمَا یَرْضٰی بِہٖ رَسُوْلُ اللّٰہِ". رواہ الترمذی و أبو داؤد و الدارمی

या'नी रिवायत है ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब उन्हें यमन भेजा तो फ़रमाया : जब तुम्हें कोई मस्अला दरपेश हो तो किस त़रह़ फ़ैसले करोगे, अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** की किताब से फ़ैसला करूंगा, फ़रमाया : अगर तुम **अल्लाह** की किताब में न पाओ, अ़र्ज़ किया : तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत से फ़ैसला करूंगा, फ़रमाया : अगर तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत में भी न पाओ, अ़र्ज़ किया : अपनी राए से क़ियास करूंगा और कोताही न करूंगा, फ़रमाते हैं : तब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के सीने पर हाथ मारा (थपकी दी) और फ़रमाया : शुक्र है उस का जिस ने रसूलुल्लाह के रसूल को इस की तौफ़ीक़ दी जिस से रसूलुल्लाह राज़ी हैं।[1] (तिरमिज़ी, अबू दावूद, दारिमी) (ब ह़वाला मिश्कात)

मज़ीद मुफ़्ती अह़मद यार ख़ां नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम को किसी की तक़्लीद की ज़रूरत न थी वोह तो ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की सोह़बत की बरकत से तमाम मुसलमानों के इमाम और

1 .... مشکاۃ المصابیح، کتاب الامارۃ و القضاء، باب العمل فی القضاء...الخ، ۲/۱۴، حدیث: ۳۷۳۷

पेश्वा हैं कि अइम्मए दीन इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा व शाफ़ेई वगै़रा वगै़रा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم) इन की पैरवी करते हैं। मिश्कात बाब फ़ज़ाइलुस्सह़ाबा में है : "أَصۡحَابِیۡ کَالنُّجُوۡمِ فَبِاَیِّهِمۡ اِقۡتَدَیۡتُمۡ اِهۡتَدَیۡتُمۡ" "या'नी मेरे सह़ाबा सितारों की त़रह़ हैं तुम जिन की पैरवी करोगे हिदायत पा लोगे।"[1] عليكم بسنتى وسنة الخلفاء الراشدين "तुम लाज़िम पकड़ो मेरी और मेरे ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत।[2] येह सुवाल तो ऐसा है जैसे कोई कहे हम किसी के उम्मती नहीं क्यूंकि हमारे नबी عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام किसी के उम्मती न थे तो उम्मती न होना सुन्नते रसूलुल्लाह है, इस से येह ही कहा जाएगा कि हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तो ख़ुद नबी हैं सब आप की उम्मत हैं वोह किस के उम्मती होते ? हम को उम्मती होना ज़रूरी है ऐसे ही सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم तमाम के इमाम हैं इन का कौन मुसलमान इमाम होता। नहर से पानी उस खेत को दिया जावेगा जो दरया से दूर हो, मुकब्बिरीन की आवाज़ पर वोही नमाज़ पढ़ेगा जो इमाम से दूर हो, लबे दरया के खेतों को नहर की ज़रूरत नहीं, सफ़े अव्वल के मुक़्तदियों को मुकब्बिरीन की ज़रूरत नहीं, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم सफ़े अव्वल के मुक़्तदी हैं वोह बिला वासित़ा सीनए पाके मुस्त़फ़ा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़ैज़ लेने वाले हैं हम चूंकि उस बह़र से दूर हैं लिहाज़ा किसी नहर के ह़ाजतमन्द हैं, फिर समन्दर से हज़ारहा दरया जारी होते हैं जिन सब में पानी तो समन्दर ही का है मगर उन सब के नाम और रास्ते जुदा हैं कोई गंगा कहलाता है कोई जमना, ऐसे ही हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आबे रह़मत के समन्दर हैं उस सीने में से जो नहर इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के सीने से होती हुई आई उसे ह़नफ़ी कहा गया जो इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के सीने से आई वोह मज़्हबे मालिकी कहलाया, पानी सब का एक है मगर नाम जुदागाना और उन नहरों की हमें ज़रूरत पड़ी

1 ..... مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب الصحابة، ۲/۴۱۴، حديث: ۶۰۱۸

2 ..... مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، ۱/۵۳، حديث: ۱۶۵

न कि सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم को जैसे ह़दीस की अस्नाद हमारे लिये है सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के लिये नहीं ।(1)

सुवाल चारों अइम्मा के इ़लावा किसी और इमाम की तक़्लीद अब क्यूं नहीं हो सकती ?

जवाब चारों अइम्मा में से किसी एक इमाम का मुक़ल्लिद होना ज़रूरी है क्यूंकि अब ह़क़ इन्हीं चारों में मुन्ह़सिर है क्यूंकि इन अइम्मए अरबआ़ के अक़्वाल ही सह़ीह़ अस्नाद के साथ मरवी हैं और सिर्फ़ इन के मज़ाहिब ही मुनक़्क़ह़ हैं जब कि सलफ़ में अइम्मए अरबआ़ के इ़लावा दीगर मुज्तहिदीन के अक़्वाल न तो अस्नादे सह़ीह़ के साथ मरवी हैं न कुतुबे मश्हूरा में जमइय्यत के साथ मुदव्वन हैं कि उन पर ए'तिमादे सह़ीह़ हो और न ही उन के मज़ाहिब मुनक़्क़ह़ हैं इसी वज्ह से सिर्फ़ अइम्मए अरबआ़ ही के मज़ाहिब लाइक़े ए'तिमाद व क़ाबिले अ़मल हैं ।

जैसा कि अ़ल्लामा सय्यिद अह़मद मिस्री त़ह़त़ावी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं :

هٰذِهِ الطَّائِفَةُ النَّاجِيَةُ، قَدْ اِجْتَمَعَتِ الْيَوْمَ فِيْ مَذَاهِبِ أَرْبَعَةٍ وَهُمُ الْحَنَفِيُّوْنَ وَالْمَالِكِيُّوْنَ وَالشَّافِعِيُّوْنَ وَالْحَنْبَلِيُّوْنَ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى وَمَنْ كَانَ خَارِجًا عَنْ هٰذِهِ الْأَرْبَعَةِ فِيْ هٰذَا الزَّمَانِ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْبِدْعَةِ وَالنَّارِ

या'नी अहले सुन्नत का गुरौहे नाजी अब चार मज़्हब में मुज्तमअ़ है वोह ह़नफ़ी, मालिकी, शाफ़ेई और ह़म्बली हैं, इन सब पर **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत हो, आज के दौर में जो इन चार मज़ाहिब से ख़ारिज हो बिदअ़ती और जहन्नमी है ।(2)

❁❁❁❁

1 .....जा अल ह़क़, ह़िस्सए अव्वल, स. 31 ।

2 .....حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار، کتاب الذبائح، ۴/۱۵۳

مآخذ و مراجع

قرآن مجید	مکتبۃ المدینہ، کراچی	••••	••••••••
نام کتاب	**مطبوعات / سن طباعت**	**نام کتاب**	**مطبوعات / سن طباعت**
کنزالإیمان	مکتبۃ المدینہ، کراچی	نوادر الأصول	مکتبہ امام بخاری، قاہرہ ۱۴۲۹ھ
التفسیرالکبیر	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ	المعجم الکبیر للطبرانی	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
روح البیان	دار احیاء التراث العربی، بیروت	فردوس الأخبار	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
صحیح البخاری	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ	شعب الإیمان	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
صحیح مسلم	دار المغنی، عرب شریف ۱۴۱۹ھ	تذکرۃ الحفاظ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن أبی داود	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ	الفردوس بمأثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۸ھ
سنن الترمذی	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۱۴ھ	مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابن ماجہ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	أشعۃ اللمعات	کوئٹہ، پاکستان ۱۳۳۲ھ
المسند	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ	تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۷ھ
مشکاۃ المصابیح	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ	عمدۃ القاری	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
سنن الدارمی	دار الکتاب العربی، بیروت ۱۴۰۷ھ	مصنف عبد الرزاق	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
مجمع الزوائد	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ	کتاب العقائد	مکتبۃ المدینہ، کراچی
جاء الحق	قادری پبلشر، لاہور	المواہب اللدنیۃ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۶ھ
رد المحتار	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ	الفتاوی الرضویۃ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور

مرکز اہل سنت برکات رضا،ہند ۱۴۲۳ھ	الشفاء للقاضی عیاض	فرید بک اسٹال،لاہور ۱۴۲۳ھ	ماثبت بالسنۃ
قادری رضوی کتب خانہ،لاہور	رسائل میلاد مصطفےٰ	دار المعرفۃ،بیروت ۱۴۲۰ھ	الدر المختار
مکتبہ برکات المدینہ،کراچی ۱۴۳۵ھ	مقالات شارح بخاری	کوئٹہ،پاکستان	حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار
مکتبۃ القدوس،کوئٹہ،پاکستان	مکتوبات امام ربانی	ضیاء القرآن،لاہور	قانونِ شریعت
مکتبۃ المدینہ،کراچی	بہارِ شریعت	دار الکتب العلمیۃ،بیروت	تاریخ الطبری
فرید بک اسٹال،لاہور	ہمارا اسلام	فضل نور اکیڈمی گجرات	انفاس العارفین

ऐब छुपाइये जन्नत में जाइये

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो आदमी अपने भाई की कोई बुराई देख कर उस की पर्दा पोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। (کنزالعمال، ج ۳، ص ۱٤٥)

नाबीना को ले कर चलने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो किसी नाबीना को चालीस क़दम हाथ पकड़ कर चलाएगा उस के चेहरे को जहन्नम की आग नहीं छूएगी। (کنزالعمال، ج۲، ص ۲٥٥)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़्‌रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ



ISBN

MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाखें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net